आखर

समकालीन राजस्थानी कहाणिया

राजस्थानी सिरजणधारा–दोय



91512

समकालीण राजस्थानी कहाणियां

सम्पादक चेतन स्वामी

राजस्थानी भासा साहित्य अेव सस्क्रति अकादमी, बीकानेर

मोल पचास रिपिया

राजस्थानी भा सा सं अकादमी कानी सू छपी/पैलो सस्करण 1990/सगळा हक्कार अकादमी रा
आवरण अजित भारती/मुद्रक सांखला प्रिन्टर्स सुगन निवास चन्दन सागर बीकानेर

AAKHAR (Short Stories of Rajasthani) Edited by Chetan Swami
Rs 55 00

प्रकासक कानी सू

राजस्थानी कथाकारा री अॅ टाळवी कथावा छापता राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी घणी अजस । राजस्थानी री अे कहाणिया अठ रै कथा साहित्य मे नूव सिरजण री साख भरै । इण संग्रै मे राजस्थानी रा जाणीता मानीता कथाकारा रै सागै केई साव नूवा कथाकार ई आपरी कथावा नै रैय नै पाठका रै साम्है ऊभा होया है, जिणा र सिरजण री सौरम घणो भरोसो दिरावण जोगी है ।

'समकालीण राजस्थानी कहाणिया रै प्रकासण रो मतो अकादमी री कायकारिणी अर सामान्य सभा रा सदस्या चालू रोकड बरस मे लिया अर राजस्थानी पढेसरया सारू ओ आखर नाव रा संग्रह अकादमी निजर कर रैई है । अकादमी इण बरस 'पोथी प्रकासण योजना' रै तहत और ई केई पोथ्या छाप रैई है । सुतंतर अकादमी थापित होया पछ आ पैला कहाणी संग्रह पाठका र हाथा म पूग रैयो है ।

पतियारा राखा आ पोथी पाठका नै दाय आवैला ।

वेद व्यास
अध्यक्ष
राजस्थानी भासा साहित्य अॅव
संस्कृति अकादमी, बीकानेर

सीतळा सातू '90

विगत

सपादकीय दीठ

समकालीन राजस्थानी कहाणी आपरी निजू 'साख' पट कई सवाल ऊभा करै जिका उणरै उद्‌भव, गति अर विकास सू जुडेडा है। इणरी मौजूदा स्थिति नै लेयन चाव सतुस्टि अणसतुस्टि जैडी दोवू ई बाता होव, पण असलियत स् आपा मुडा नी लुका सका क जुग री रफ्तार मे आपणी कहाणी जात्रा खाडावती चाल रैई है। अैडो ई नी होवै कै आ चाल बदळी नी जा सक, सवाल फगत मायलै उद्‌वेलण अर जुडाव रो होव। राजस्थानी रो जूनो (गद्‌य-पद्‌य) साहित्य घणो सिमरध रैयो है। जद कै उण वेळा तो साहित्य जाणै जितो प्रचार ई नी पाय सकता, छपण छपादण रा साधन ई नी हा। विना किणी अेकरूपता री समस्या खडी करया, अणमीत साहित्य रो सिरजण होयो। घणकरै साहित्य री रखाळी वाचक परपरा सू होवती। अलेखू जूनी पाण्डुलिपिया ई उण सिमरधता री साख भरै।

साहित्य री हरेक विधा मिनख र माय बार र साच न उघाड रूप म दरसावै अर आ दोवू मात रै साच रा आतरा नै ई समझाव। साहित्य री सगळी विधावा रो अेक ई लक्ष्य होवता थका ई इण विकासमान भौतिक जुग मे गद्‌य अेक सबळी विधा रै रूप मे प्रतिस्ठित होय रैयो है। गद्‌य मे कहाणी सबसू आगीवाण विधा है। मिनख री आदू औत्सुक्य भावना सू जुडी इण लाकचावी विधा रा भारतीय वाग्मय म घणा जूना बावड लाधै। राजस्थान माय ता कथा-कहाणिया री लाबी वाचक परपरा रैइ है। वैदिक जुग री आख्यान परपरा अठै घणी सुरक्षित रैई। लोककथावा रो रचाव ई दूजी भारतीय भासावा रै करता अठै वेसी ई होयो। लोककथावा री उदेस्यपरकता नै नकारी नी जा सकै, तत्कालीण रचनात्मक दबावा रै कारण ई वा रो रचाव होयो अर उण वगत रा समाज वैवार उणरा कथ्य बण्या। कैवण, सुणन अर चेत राखण री परपरा रै कारण कथानका न वगताऊ बदळाव रै परवाणै बदळ लेवण री छूट ई लोककथावा म खासा रई ह। आज रो राजस्थानी कहाणी रा मडाण ई आपा नै लोककथावा मे ई देखणा पडसी।

राजस्थानी 'बात' रै परपराऊ खाळियै नै छोडन नूवी कहाणी रो पर वास पैरणवाळी राजस्थानी कहाणी री विकास जात्रा लगै टग हिंदी गे आधुनिक कहाणी रै सागै ई सरू होई। ठीक सित्तर साल पैली राजस्थानी रा गिणती रा लिखारा राजस्थानी री नव बोध री कथावा र सिरजण माय लाग्या। सुततर रूप सू कहाणिया रो सिरजण करणवाळा आ कथाकारा म शिवचन्द्र भरतिया श्री च दराय माथुर, नानूराम सस्कर्ता, मुरलीधर शमा आद की खास नाव है जिका सामाजिक कहाणिया लिखी। राजस्थानी कहाणी री इण नूवी जात्रा री चाल साव मोळी रैई अर सागै सागै आ कथाकारा मे लारै मुडनै अतीत नै मोहगत दीठ सू देखण री बाण ई रैई। सिल्प तो लोक कथावा रो अगेज्यो ई—परिवेस सारू ई आ कथाकारा रो आग्रह यथाथपरक नी रैयो। व्यक्तिगत विश्वास अर आदसवाद सू प्रसित आ कथाकारा रो मूळ ध्येय तत्कालीन सामाजिक विसमतावा नै जोवणो नी हो। बगला अर हिंदी रै कथा साहित्य सू प्रभावित आ कथाकारा कहाणी र नूव स्वरूप नतै सिल्प अर सैली रा बदळाव तो किया पण लोक कथावा री रजक्ता प्रधान सैली वो मे चहड निजर आवती। ओजू ताइ नव बाध नै वै सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिप्रेक्ष्य मू जाडनै नी देख्यो—ओ इज कारण है क आज आपा वा कहाणिया नै बाचन वा रो सिरजण काळ त नी कर सका—तत्कालीन परिवेस अर जरूता नै कहाणिया रो विसय नी बणावण रै कारण व किणी अेक काल खण्ड र साच नै दरसाव कोनी।

साहित्य अर समाज रो अणतूट नातो रैयो है। समाज माय होवण वाळा बदळाव अर उणरी आखी गतिविधिया साहित्य रा विसय होवै। मार्क्स रा कैवणो हो क 'साहित्कार री चेतना, सामाजिक जीवण री ई दन है। समाज रो भावनावा, विचार अर समस्यावा रो चित्रण कर साहित्यकार खुद मे अेक स्रस्टा रो रूप जावै। साहित्य मिनख समाज र सम्बन्धा न मजबूत बणाव। इण खातर कैयो जाव क समाज मे साहित्यकार री भूमिका अेक पौरेदार री भूमिका होवै। साहित्यकार जागतोडी आख्या सू समाज माथै आवणवाळा खतरा रो फ्लादेस त्यार करै अर जनता न उण सू सावचेत करै।

बदळाव अेक प्राकृतिक अर सामती प्रक्रिया है। परिवेसगत होवण वाळा बदळाव सू मिनख जडा विवेकसील प्राणी सब सू बत्ता प्रभावित होव। परिवेस री माग अर उणरै बदळाव री चिंता राजस्थानी रा कथाकार कोई खास गिनारै जैडी नी करी। राजस्थानी री नूवी कहाणी री सरूआत नी उण वगत रै औपनिवेस समाज रा सकटा रा चित्रण करै नी उण सू आगै वधनै राजस्थानी कहाणी रा विकासकाल आजादी रै बाद रा समाज रो ई चित्र उकेरै।

राजस्थानी री नूवी कहाणी री विकास जात्रा री तुलना हिंदी व दूजी भारतीय भासावा सू बदान ई नी करी जा सक। जठ हिंदी कहाणी हर

दसक रा आदोलना सू जुडी उठ राजस्थानी कहाणी नै किणी आदोलना री जरूत ई नी पडी। राजस्थानी कहाणी री अबार ताई री विकास जात्रा री पडताल करघा अेक बात साफ निगै आवै कै आधुनिक वैचारिकता अर प्रति बधता नै अठ अेकठ रूप सू किणी हूस र रूप नी लिरीजी। भौत ई कम कथाकार है जिका खुद माथ लोककथावा रै परपराऊ जादू नै हावी नै होवण दियो। खासकर ओ बदळाव नूवी पीढी रा कथाकारा माय देखण मे आवै। नूवी पीढी रा की लिखारा इण आक्रोस रै उथलै मतै केई कहाणिया लिखी पण राजस्थानी री नूवी कहाणी नै दिसा देवण सारू कोई बात बणी कोनी। फेर व कहाणिया फगत बानगी सरूप लिखीजी है—भौत थोडी गिणती मे। आधुनिक राजस्थानी गद्य म बेसुमार सिरजण तो किणी विधा मे नी होया। लक्ष्मी कुमारी चूडावत, गोविंद अग्रवाल, विजयदान देथा, नानूराम सस्कर्ता अर भवरलाल नाहटा जडा राजस्थानी कथाकारा रो मूळ लक्ष्य लोक कथावा रै सत रज नै बचावणो ई रैयो, लोककथावा रो सिरजण ई किणी मौलिक सिरजण सू कमती नी है। लोक कथावा मे वर्णित साच ई काई ओपरा साच नी होव पण लोककथावा मे कथानका रो सरलीकरण अेक सीमा ताई मनोरजन योद्देस्यता नै ई पूरै। राजस्थानी म हजारू री गिणत मे लाख कथावा रो सिरजण सग्रहण होयो पण–सर्वेक्षण करघा पतो पडै कै कथा साहित्य री इण सिमरध परम्परा सू राती माती इण भासा मे अबार ताई अेक हजार कहाणिया ई नी लिखीजी है। इण सू आपारी कहाणिया कोनी अेक जागरूक दीठ या कोडाऊ हूस री झलक मिलै। हिंदी म प्रेमचदजी रै कथाजात्रा म वारा दीठीगत बदळाव आपा गुरतख जोय सका—गाधीजी रै आदसवाद सू प्रभावित प्रेमचद आगै जाय'र मनोवैग्यानिक दीठ नै प्रगति गामी सुर रा सिर कथाकार होयग्या। पण हाल ताई राजस्थानी कथाकारा रो अडो विगसाव दर ई निजर नी आवै।

राजस्थानी कथा लेखण नै, कथाकार गभीर चुनोती रै रूप नी लिया। बिया आपा गिणावण नै दो-च्यार कथाकारा रा नाव गिणा सका हा पण अेक मोटी अर सिमरध परपरावाळी भासा रै खातर आ गिणत साव ई थोडी होय। इण कारण राजस्थानी कहाणी नी मुख्य धारा सू जुड सकी, नी कट सकी। कथा कहाणिया सास्क्रतिक इतिहास ई हाया करै है पण, राजस्थानी रो समूचो कथा साहित्य वाचन ई आपा किणी अेक वगत र समूच दौर दायरा, समस्यावा, स्थितिया, प्रस्थितिया रो निवेड नी निकाळ सका। बीचळी पीढी रा कथाकारा नै आपरी तारली पीढी र रचियाड कथा साहित्य सू कठ न कठै असहमति रइ तन्ई राजस्थानी कथाकार अनाराम सुदामा उण कथासाहित्य नै नामजूर करता लिख—'व धणकरी पुराणी खुरचण खाय र जीव। वतमान री पूर्ति अतीत सू थोडी ई हुसी।

नूवी पीढी र कथाकारा साम्है तो केई भात री चुनौतिया साम्हा सीग माड लिया। अेक कानी साठ रै दसक सू पली रा कथाकारा री देण अर दूजी कानी खुद रै नतै राजस्थानी कहाणी रा नूवा आयाम प्रगटावण री चुनौती। पूववर्ती कथाकारा री देण सारू इण पीढी मे कोई अणमावतो उछाव होवै वा वात नी ही। नद भारद्वाज लिख्यो—'आ सगळा री अेक बधी-बधाई सीव है। वी सू आगै वधर आपर आसती-पासती न निजू निजर सू पजोखण री वाण आ लोगा म कोनी आई जिको क आज री कहाणी रो सही विसय है। समकालीण कहाणी रो कथ्य अर कथण रो ढाळो आज जीवण सू आगा पाछो रैवै तो वा कहाणी समकालीणता रै सदभ म खरी कोनी उतर।'

समाज री मुख्यधारा सू कटण रा आरोपा सू हिन्दी री विकसित कहाणी ई वार नी है, आज ई हिन्दी कहाणी नै आपरी पिछाण वास्तै वगत वगत—सर उठण वाळा सुवाला रा पडूतर देवणा पड अर घण ऊचै सुर मे आवत गतिरोध न नकारणो पड पण राजस्थानी कहाणी री अबार ताई री विकास जात्रा अेक ई सवाल ऊभो कर क भला ई वा अेक 'सावकीज्योड परिवेस' री कहाणी रई—भलाई उण माथै फगत ग्रामीण सवेदना री कहाणिया जडा लेबल चम्पा होव पण काई राजस्थानी कहाणी इक्कीसवी सदी मे पूगत अटावर भाजतै समाज माय जीवणवाळा मिनख अर उणर सरोकार री हिमायत कर ?

नतिक मूल्या माय सासता बदळाव, साप्रदायिक उणमाद, वचारिक विखडन भिस्टाचार आतक, वग विखमता जडा सवाल आज आखी सिस्टी र मानखा नै फफेड रैया है—अैड मे साहित्य क कळा रै छेतर सू जुड्या हरख बुद्धिजीवी न आपरी अस्मिता रै बचाव खातर-समझौता अर पिछाण जडी दोतरफा लडाई लडनी पड रई है।

सचार जुग मे मिनख मिनख र नड तो आयो पण ओ नडास भौतिक है—जिको निरतर आतरिक नडास न क्षतिग्रत कर रयो है। वेगवान समाज रा चितन अर मूल्या मे ह्रास रो घनत्व घणो होव तो काइ इणरी जिम्मवारी, समाज रा आगीवाण कैईजण वाळा चितक, विचारका साहित्य कारा अर कलाकारा री नी हावै ? अेक नूव समाज री सरचना री जिम्मेदारी तो आ री ई होव। काइ-राजस्थानी कथाकार आपरी इण घण महताऊ भूमिका पट सचेत है ?

वदळतै चौफेर (परिप्रेक्ष्य) म राजस्थानी रा नव बोध सू जुड्या केई कथाकार है जिका इण नतै थोडा सचेस्ट लाग रया है—पण बात असल इत्ती इज है कै वे इण सीगै कितरा प्रतिवद्ध है नै राजस्थानी कथा साहित्य म आय ठैराव म व किण भातरी धधूणी देवणी चाव आ ता वानै ई तै करणी पडसी। राजस्थानी रा समकालीण कथाकारा सू आपा किणी तरै रो आस भरोसो राखा तो आ काई माडी बात तो नी है ?

□ चेतन स्वामी

म्हैं आप सू कट्टी हू

माधव नागदा

आनद पदरा दिना रै टूर सू आज घर आया। शीला की बोली ई नी। आनद मान मनवार करण लाग्यो।

'काई राणीजी मुडा कीकर सुजाय राख्यो है ?'

'कुण बोलै आप सू ?' शीला आख्या काढी अर गाल फुलाया।

'क्यू-क्यू म्हास अैडी काई गुस्ताखी हायगी ?'

'दस दिन री कय'र गया अर आया अेक पखवाडा सू। वहीर होया पूठै म्हनै ता भूल इज जावो। अेक हिचकी तक नी आवै।'

'हिचकी रा काइ देख म्ह खुद ई आयग्यो।' आनद शीला री आख्या मे आख्या नाखी अर गुलाब जैडो चेरो हथळिया म भर लीधो।

'पापा आयग्या पापा आयग्या ।' राहुल कमरा म बडतै राग सुणाई। शीला हडबडाय'र दूर छिटकगी। आनद यू परगट कियो जाणै निरास हायग्यो। फैर वी पळट र राहुल नै गोदी मे उठाय लीधा।

'आइये मिस्टर राहुल उफ प्राइवेट जासूस उफ बड।

'पापा म्हारै काइ लाया ?'

'थारै लायो हू अेक ननी-सी गुडिया।'

'और ?

'कार।'

'कार री नाव सुणताइ राहुल री आख्या मे चमक दौडगी। आनद अटेची सू निकाळ दोवू खिलौणा राहुल नै थमाय दिया।

'जाओ बेटा, बारै चौक मे कार दौडावो अर गुडिया नै घुमावो।' आनद शरारत स शीला कानी देख्या।

'घणा खराब हो। राहुल नै बार क्यू भेजा—म्हन सै ठा है।' शीला आनद री बडाई कीवी।

'थू म्स्याडी है न, राजी ता बरणी पडमी।' आनद शीना रो हाथ थामतो बोल्यो।

'छोटा भगवान रात विण गाम धणाई है ?'

'घणा दिन होयग्या है।' आनद रै वठ म नरमाई उतर आई अर आंख्या म प्यार रो सागर हिलोरा ल्वण लाग्यो। उण आपरा दावू हाथ शीला रै काधा माथ मेल्या।

'ऊऽऽऽ ऊऽऽ म्हारी मम्मी ए। राहुल नै पापा री आ हरकत सैण नी हाई। आनद झट दूर हटग्यो। शीना जीभ निकाळी'र अगूठो दिखार वी नै छिजायो।

काइ है रे ? आनद वी नझळाय र राहुल नै पूछियो।

'म्हारी मम्मी है।'

थारी ई तो है म्हैं कद कैवू कै म्हारी है, पण थू अठ कीकर ? म्हैं कैया नी बारै जाय'र सेलो।'

'म्हारै मिठाई क्य नी लाया ? राहुल माग पेस करी। आनद छोरा री चतराई साथै मुळक पडियो।

'शीला थारो छोरो तो घणो सैतान निवळयो।'

'बिल्कुल ई पापा जैडो है।' शीला झट पडूतर दियो।

राहुल शर्माजी रो घणो फूटरा टाबर है। है तो नैनोसीक। व्हैला कोई तीन च्यार बरस रो। पण वी मे भोळपण, चचलता अर हाजर जबावी रो अैडो मेळ है क आनद शीला तो काईं वा री मित्र मडळी नै ई राहुल घणो वाल्हो लागै। ऊजळो ऊजळो फूल जैडो मुखडो। मोटी मोटी क्वळ री पाख्या जैडी पलका। साफ सुथरी आख्या अर आख्या मे जिग्यासा रो अकूत भडार। वो चौफेर थू चाव सू देखै जाण वीनै हर चीज सू गरो अपणापो है। वो हर चीज र बारै मे पूरी-पूरी जाणकारी लेवण री खूब कोसिस करै। पापा नै भात भात रा सवाल बूझै। भोळा भोळा, छोटा-छोटा। केई वळा तो केई सवाला रा पडूतर ई नी सूझ आनद नै।

रात पडती अर राहुल री आख्या तारा ज्यू टिमटिमावण लागती। वीर सवाला रो सिलसिलो सरू होय जावतो।

'पापा आकास मे तारा कुण चिपकाया ?'

आनद नै भारी भरकम बिग बैंग थ्योरी याद आवती पण वो कैवतो—'बेटा थार जडा नैना-नैना टाबरिया जद मुळक तो असमान मे फूल उग। अे व इज फूल है।' आनद रै मन म कविता उगण लागती। पापा री बात सुण राहुल मुळकतो अर आसमान म फेर अेक नूवो तारो परगट होवतो।

'मम्मी तो कँव भगवान वणाया ।'

आनद बोलो होय जावतो ।

राहुल फेर कुरेदतो—'पापा आपा तारा कनै पूग सका ?

'नीं बेटा घणा अळगा है ।

'तारा कनै कोई नी जाय सकै ?' राहुल थोडो निरास होय'र बूझतो ।

'जाय सकै ।'

'कुण ?' छोरा री आख्या जिग्यासा अर खुसी सू फल जावती ।

'आपारी निजरा ।'

'निजरा सू तेज कुण दौडै पापा ।'

मिनख रो मन ।

'मन काई होवै ?

आनद निरुतर होय जावतो । राहुल थोडो जेज अणबोल रैवतो फेर घणै ठाठ सू बोलतो, 'म्है स सू तेज दौड सकू ।' आनद रो काळजो ठाडो होय जावता क छोरो महत्वाकाक्षी निकळसी ।

राहुल री तो आज नींद गायब है । पापा आया है नीं आज घणा दिना सू । अठीन पापा है जिको घटा भर सू बाट जोय रया है उणरै सूवणै री । शीला ई घर रो आखो काम निवेडनै सोयगी है पण वी री आख्या म ई नींद कठै ?

आनद अर शीला र बीच सोयोड राहुल री कमेटरी चालू है—'पापा अब तो म्है रामजी बा रै घोड सू ई आग दौड लू ।

रामजी बा इण कस्बै रो तागावाळो है । घोडो इतरो मरियल है कै सवारिया पैदल जाव तो रामजी रै तागा सू ई पैली पूग ।

'स्याबास, अबै सूय जा ।

'और बताऊ पापा ?'

'फेरू काईं बतावणो रैयग्यो ?'

'है sss, म्हैं पचास ताइ गिणती ई सीखग्यो—बोलू पापा ?'

अबार नी, कालै सुणाजै–म्हन तो नींद आय रैई है ।' आनद माडाणी उबासी खाई, आख्या मीची । शीला आनद री इण परेशानी माथै मन ई मन मुळक रैई ही ।

'सुणो पापा, वन टू, थ्री, फोर, फा sss

क्यू ल्पर चपर कर है—सोय क्यू नी जावै ।' आनद नराजगी जताई ।

'बोलू ई नी—पापा सू । राहुल रा होठ फल्कण ढूका । वी री आख तळाया डबाडब भरीजगी । मुडो मम्मी र पल्ला म लुकाय लियो । आनद नै राहुल रो ओ रूप

घणो ई लुभावतो। कितरो बवळो होवै टावरा रो मन। चरा माथ कडा-कडा रग उभर आवै। जाणै चरो नी होय अेक स्पेक्ट्रोस्काप होव जिका मन म उठण वाळी भाव तरगा न तत्काळ दरज कर लेव। माटा मिनखा ज्यू टावर चलाक थोडा ई होव मन माय वी अर चरा माथ वी।

राहुल! आनद नरम पडग्यो।

'बोलू ई नी। आप म्हनै लपर चपर क्यू कह्यो?'

'अब नी कैवू, बस! कालै थार बढिया गेंद लामू।'

सच्ची लावोला?' राहुल झट पापा कानी मुडो कर लियो।

'हा जरूर, अबै सूय जा।' आनद राहुल री पप्पी लेय'र नग हाथ शीला न ई लपेट लीवी।

'काइ करो हो, छोरा न सोवण दो नी, कालै आखा मोहल्ला मे हाको करतो फिरसी। ठा कोनी अेकर ।' शीला आनद रो हाथ हवळ-सी छेड छिटकायो।

'म्हनै नीद आय जावली पण थारो छोरो उधम मचाया करैला। राहुल बेटा अबै नीद काढ। थारै म्हैं काल मिठाई लावूला।

'जरूर लावाला?'

'हा, जरूर, पण थू चुपचाप सोवला जद लावूला। बोल्यो तो मिठाई गळगी समझज।'

राहुल छानो मानो सोयग्यो। शीला वी री पीठ थपथपावण लागी।

आनद ताई काइ करै, बस! पगाथिया फिर। बी रै मन मे रैय रय न आ बात उठ कै काल पाछा जावणा है। साळी इण टेडिंग कम्पनी री नौकरी ई जीव रो जजाळ है। आज मारवाड ता काल गोडवाड। भवता फिरो हिडक्या गडक री ज्यू। इण पार्टी सू सोदो पटावो जित वा पाणी मे बैठग्या। फेर किस्मत मे गुण जस की नी। मालिक ई नख्या रो बाप। बी र ताना रो तरकस कदई खाली नी होवै—'मिस्टर आनद आ कोई सरकारी नौकरी नी है क घर जवाई बण्या सूता-बठ्या मोजा माण्या करो। अठै तो काम लारै दाम है। अबकाळै पचास हजार रो सौदा पटणो चाइज, भल ई बीस दिन क्यू नी लाग जावै।

वो सौदा पटा पटू नै आयक अब तो थोडा दिन घर रस्या। पण आफिस जावता ई बास फरमाव— 'वेल मिस्टर आनद। काल आपन फनाणी ठौड जावणो है। [redacted] महीणा सू पेमट अटक्या पड्यो है।'

इण मारन मिस्टर आनद न रोवा जाणो पड च्यार सौ किलोमीटर छेडै।

आज ई यू इज हायो। पन्दरा दिना सू भवतो भवतो आयो क अब तो थोडा दिन घर दुल्ल्राय कराला पण आफिस जावता ई बॉस करम मार्थ भाटा पटक्या—

'आनद, क्ल तुम्हे जयपुर जाना है ।' स्मा मूड ऑफ हायग्यो । रई-सइ क्सर राहुल पूरी करें है ।

'शीला, अबै ता इण सैतान री पूछ नैं नीद आई व्हैला । थू अठीनैं आ जा ।'

शीला उठण लागी । राहुल करडाया, 'ऊ ऽऽऽ मम्मी म्हनैं छाड'र मती जाइज ।

'धतेरं को । आ किणी रामस रो अवतार तो नी है क्ठैई ?'

राहुल मम्मी न बाठी पकड लीवी । आनद रो उतावळापण खीज म बदळग्या । अेक ता पदरा दिन री जुदाई, फेर छोरा री छमछमळाया ।

'अर जोगमाया, झट सुलाव इण तपती न । परमात्मा म्हन वगो उठणा है ।' आनद आकरो होयग्यो ।

'कीकर सुवाणू ? गोळी दू काइ ?' शीला लाई बुरी फमी । आखो दिन घर गिरस्ती रो चक्कर अर अब राहुल री धाई नैं सायबजी री रुसवाई । कर तो काइ करें ।

'मेलहे नी अेक कनफडा म खाचन हार्फ ई सूय जासी ।'

राहुल की नी बाल्या । वी नैं ऊघ आवण लागगी ही । शीला थोडी वैंळा वी नैं थपकायो । पछ धीरेक-सी वी रा ननो क्वळो हाथ आपरैं हाचळ सू हटाय'र छेटी मेल्यो । हौळ हौळ, डरती डरती, चोरी चोरी उठी क कठ ई काची नीद सू जाग नी पडै, क्ठैइ देख नी ले । आनद रो दिल अणथाग आणद सू धडक्ण लागो ।

'आयजा राणी, आज रा जगरा करला, काले म्हनैं पाछो आवणो है—हफ्ताभर सार ।

शील' आनद र जावण री वात सुणता ई बुझगी ।

'आप इण क्पनी नैं छोड क्यू नी देवो ? दूजी देखो नी काई नौक्री । इण मे तो जिदगाणी दौड भाग मे ई निकळ जासी ।'

'म्है ई इणनै छोडणी चावू पण काई करू । आजक्ल मनचावी नौक्री मिलै ई कठै है । आ मिलगी जिकी ई घणी बात है । अब थू आयजा । फालतू बाता म रात गमावणी ठीक नी है ।' आनद वी न समेट लीवी अर बावळा री दाइ नेह लुटावण लागो ।

'आज तो थू घणी रूपाळी लाग है ।'

'पण, पैंली लाइट आफ करण दो । तपसी जाग जासी तो मुस्क्ल क्र देसी ।'

'फेर म्हैं थारो रूप कीक्र निरखूला ?

'छोरो घणा ध्यान राख । छाटो जितो ई खोटा है । अेक दिन कवै क थू म्हनैं रात म नीद आवण दे र पापा र पलग मार्थं परी जाव अर म्हन कवै कै बाथरूम गई ।'

'अच्छा इतरा बड है ?'

'ऊऽऽ ऊऽऽ ।' राहुल हाल्यो । पसवाडो फारयो ।

'छोरा जाग जावेलो । झट लाइट आफ कर द ।'

आनद थू चिमक्या जाणँ तुद चार होय अर राहुल पुलिस । शीला लाइट आफ कर दीवी ।

इणीज वळा ठा नी काइ होया, शीला रा पग लाग्यो कै काई सपना दख्या, राहुल चिरलावण लाग्या, 'मम्मी, मम्मी ।'

आनद रो रसा आणद कपूर होयग्या । शीला काछवा हायन आनद कनै पडगी।

'ए बेटा ! मम्मी बाथरूम गी है । अजार आय जावैं थू चुपचाप सोय जा ।'

'बाथरूम नी गी । मम्मी आव नी ।' राहुल कुरलायो । आनद रा पारो थरमा मीटर तोडण लाग्या । वीं न लाग्यो कँ राहुल एक खलनायक है, जिका वी र अर शीला रैं प्यार बिच्चे भीत ज्यू उभो है ।

'मम्मी आव नीं ।

'सो जा छानो मानो । बावा आया है बारैं, पकड लेवैला । हाऊ हाऊऽऽ।' आनद राहुल न डरावण सारू आवाजा काढी ।

'कोई नी । आप इज तो बाला । मम्मी आव नी, म्हनै तिस्स लागरी है ।' राहुल ठिणकणो जारी राख्यो ।आनद नैं की नी सूझ्यो । वी हाथ लाम्बो करता ई धबाक धबाक दो च्यार मेल दीवी ।

छोरा नैं क्यू मारो ? ओ तो अणसमझ है ।' शीला कया ।

जा, थू ई भाग जा छोरा कनै । म्हनै सोवण दे साति सू ।' आनद बिफरग्या ।

शीला जाय'र राहुल नैं छाती सू चिपका लिया ।—'सो जा बेटा । मत रो ।'

आनद न लागो क शीला रो गळो भरीजग्यो है । सग रात वी नै नींद नी आई। राहुल रा सिसास वी रैं काळजा नैं चीरता रैया । छारा रा हबक हियो फाट हो । शीला रो घडी घडी नाक सुडकणो पछतावा री बळती लाय मे पूळो नाखतो रयो ।

परभात आनद देख्यो कैं शीला रो चरो उदास है । उदास अर सात । जाण तूफान गया समदर रा पाणी । आख्या राती चुट । अठीन राहुल आनद न देख मम्मी री साडी मे लुक-लुक जावनो । वी रो उजाम भरयो चैरो घुधळायग्यो अर आख्या रा पाणी सूखग्यो । रात भर जाणें कितरा मोतीडा उणरी आख्या सू झरग्या । जे वो थोडो धीजो राखतो तो आ नौबत नी आवती । फालतू ई मतीरैं न विसलूचो बणाय दियो ।

आनद साच्यो क पला राहुल नैं खुस करणो चाइज । शीला ता अपणें आप होय जासी ।

'गुडमार्निंग राजा बेटा !'

राहुल की नी बोल्यो । बस, देखता रयो आपरी सूजी-सूजी आख्या सू ।

'अच्छा, आज थार गेंद लावणी है नी बोल कितरी बडी लावू ?'

'म्हार नी चाइज गेंद। राहुल खादा उलाळ्या।

'अच्छा मिठाई ?'

वी फेर खादा मचकोड्या अर नीच रा हाठ लटकाया।

'म्हैं आज जपुर जाऊला, बाल थार काई लाऊ ?'

'म्हार की नी चाइज। म्हनै रात म मारियो क्यू ? म्हे आपरं काइ कीधो ? राहुल रूआसो होयग्यो। आनद इण भोळाभाळा निरदोस सवाल सू पाणी पाणी हायग्यो। वी नै लाग्यो क रात भर रा रोकयोडो आसुडा रो बाध अबै टूट जासी।

'म्हन माफ करदे बेटा, अबै कदै ई नी मारू थन।' वी राहुल नै ऊचाय लियो।

'म्हैं आप सू कट्टी हू।' राहुल जीवणा हाथ री सै सू छाटोडी आगळी आनद साम्ही कर दीवी। शीला बाप बेटा रै इण मिलण नै देखै ही। पण, आनद शीला सू निजरा नी मिलाय सक्यो। वी राहुल न नीच उतारियो अर चुपचाप बाथरुम म जाय'र मुडा माथै पाणी रा छाटा मारण लागो। □

आतरो

नन्द भारद्वाज

सगाई अर ब्याव बीचलो आतरो इत्तो कमती रयो कै उणन ओळू की जाणण रो मोको ई नी मिळ्या। अलबत गाव री बूढी बडेरियां र सुर म चाणचक बापरती नूवी हमदरदी सू उणन वैम तो अवस होयो, पण फेर आ ई सोच'र धीजो धार लियो क माईत जिको की करै, औलाद रो भलो सोच र ई करता होवैला।

छैवट वा घडी पण आयगी। उणन रीत कायदै सू चवरी मे लाय'र बिठाय दी। मन रै किणी खूणै मे आ इछा आखीर ताईं बणियोडी रई क फेरा लेवण सू पली उण अणसैंध मिनख नै वा अेकर देख जवस लै, पण बीनणी रै गोटै किनारीदार पैरवस अर मोट घूघटै र पार की देख पावणो ओखो हो। उजास र नाव माथ चवरी री झळ र अलावा फगत दो लालटेणा ही, जिकी आखती पाखती री भीता मे टगियोडी ही। चवरी म रारयोडी समिधा स निसरतो धुआ सीधो उणरो आख्या कानी आव हो। जावती सरदी रो ठाडो असर पण हवा मे कायम हो, अर धुअै र कारण इण भात जा घुटीज रैयो हो कै लिलाड रो पसेवो अर आख्या रो पाणी रळ मिळ'र इकसार होय रया हा। कोई दूजो मोको होवतो तो वा कदेई ऊठ'र अळगी होय जावती। बडियाजी री सीख मुजब वा चवरी म काठ री मूरत बणियोडी बैठी रैई। अेकाध वार जमूजै म घासी कर गळो साफ करण री इछा ई होई, पण उण जतन सू घासी नै कठा म ई मास ली। पडितजी हथळेवै र जोळावै पली दफै जद कन बठय अणसैंध मोटयार रै हाथ मे उणरा कवळो हाथ पकडायो, ता अेक ठाडे अर खुरदरै परस सू उणरी रुआळी सी ऊभी हायगी। फेरा री पूरी रस्म रै दरम्यान वा खुदन उण खुरदरै बधण मे बधियोडी-सी मैसूस करती रई। पडितजी अेक खास तर र पूजापाठी लैजै म मत्रोचार करता रया अर उणरी पूठ रै लारै गाव घर री लुगाया गीत गावती रैई। चवरी र अेक पसवाडै काकी अर काकोजी गठजोडो करियोडा बैठा हा। वानै इण रूप म बठा देख'र फेर अेकरगो वा मा नी होवणै र लखाव सू बिलखी पडगी अर उण मोटै घूघट म भतै ई उणरी आख्या सू आसू वैवण लागग्या जिका जाण किती जेज ताइ बवता रैया। काकजी रै करड सभाव अर सकै रै कारण कनै बठी सायणिया ई अबोली-सी बैठी रई। अेकाध वार काकजी खुसर फुसर सुणता ई वान डकराय दी ही, सो वा ता अबोली रैवण म ई गार समझ्या। फेर पूजा-पाठ, फेरा, सवरा गऊदान अर गीता र चिरचै रूद उणर भाग रो निपटारो होयग्यो उणन कोई सुध नी रई।

चवरी रा काम बगो ई सलटग्या। घर रै बारणै पूग्या गठजोडा खुल्यो अर

गीत गावती लुगाया उणन पाछी आपर साथ आगण म ले आई। गीत पूरा हाया उणनें पाछी उणी अधार ओरें म पुगाय दी, जठ की घडी पैली वा बीनणी रैं रुप म सजाइजी ही।

वा आगण विछायाडी राली माथ बठगी। भीत र आळ म जगत दीयें र पीळें उजास म वा घणी जेज ताइ भीत मार्थं मढियोड़ा माडणा देखती रैई। छैंयट उणरी छोटकी भाभी पाणी रो लोटो लेय र आइ अर फर उणनें मनवार कर पाणी पायो। घर म फगत या भाभी ई अंडी हुताळू ही जिकी उणरी मनगत न आछी तरै समझती। वारें आगणें म लागा रो आवणो-जावणा जारी हा। स्यात् जान नै जीमावण री त्यारी हाय रई ही। चवरी रैं धुअं अर अमूजं र कारण उणरा मायो भारी हो, जी हळको करण सारू वा थोड़ी जेज उणी विछावणं मायं आडी होयगी अर की पळा म ई उणरी आख लागगी।

भाभी रैं चचेडण सू जद पाछी आख खुली ता वारैं आगणें म लुगाया रो हाका सुणीजै हा। बिच्च बिच्चें जीमण परोसण वाळा थामा अर थालिया लिया घूम रैया हा।

'इत्ता वेगा ई सायण्या गीतावाई ?' भाभी हसती थकी पूछ रई ही।

हा, यू ई थाडी आख लागगी भोजाई!

'आछा, चाला उठो, रोटी जीम लो!'

'नी, म्हनें भूख कानी '

'अवें उठा, जितो थारो जी कर! देखा, वारैं आगण म थारी भोजाया अर साथण्या थाळी मार्थं उडीक रैई है। भाभी री मनवार नै वा घणी जज नी टाळ सकी अर उठ र वारैं आगणें म आयगी। वारें लुगाया रैं बिच्चें अेक थाळी मायं उणरी कडूव री बैंना अर भाजाया उणनें उडीकै ही। आज पैली दफ घर म उणनें कोई यू मनवार करनें जिमावै ही। उणनें वाकेइ भूख मैसूस होई अर फेर जीमती-जीमती खुद म ई विलमगी।

आधी रात न जद सगळ घर मे सायती ही, उणनें भोजाया अर साथण्या असकल करती वनें ई काकंजी र घरा ले आई जठै नूव बणतै आसरै म पलग बिछियाडो हा। आगणें मे चाद री चानणी रैं कारण आसरै मे ई हळको उजास हो। वा बोली-बोली पलग कनें आय र ऊभगी। भाजाया उणनै उठै पुगाय'र पाछी वारै आयगी ही उणरी ईंछा हाई क वा ई वारै साथ पाछी उठ जावै, इत्तै मे आसरै रैं बारणैं मे उणन माय आतत मिनख रा भळका पडियो अर वा सरम अर सकं सू खुद म ई सावकीजगी। घर मे स्यात् और कोई कोनी हा, सगळा घरवाळा ब्याव वाळै घर म ई हा। जिकी लुगाया अबार उणनें अेकली छाड र गई ही, वारैं गळी म ओजू ताइ वारैं हसण-बोलण री आवाजा सुणीज ही। वा हौळ-स उणरै कन आयो अर फेर बिना की बोल्या पलग री अेक ईस मायं बठग्यो। वा उणी भात आपरी ठौड ऊभी रैई। सुर मे मिठास अर नरमी सू उण पूछ्या—'थू ऊभी कित्तोक जेज रैवैली, आव, सावळ बैठ जा।'

वा जठ ही, उठै ई आगण माथै होळै-सी बैठगी।

'नी, उठै नीच नी, अठै ऊपर आवा। म्हार कन!' उण हाथ वधाय उणन ऊपर बैठण री मनवार कीवी।

'म्है अठै ई ठीक हू!' वडी मुस्कल सू वा इत्ता ई बात मकी, पण धणी री घणी मनवार अर जिद रा वा विराध नी कर सकी।

वो होळै सी पलग माथ लेटग्यो अर उणरै क्वलै हाथ नै सैंळावण लाग्यो। उण कोई विरोध नी कियो अर होळै होळै उण अणजाण परस सू वा अपणापा मसूम करण लागी। उणर सवेत सू वा ई सोयगी। वातचीत अर सुर-सुभाव री नरमाइ स वी उणन आछो लागण लाग्यो, साथै ई थाडा इचरज पण हायो क उण म मोट्यार-सी ऊतावळी रो कोई भाव कोनी हो। उणरै बोलण रै लैजै मे ई अेक खास तरै री सुरताइ ही। वो घणी रात ताइ आपरै घर अर खानदान बाबत उणनै बतावतो रयो। वा वेमन सू सुणता-सुणता ऊघण लागी अर छैनट उणरी आख लागगी।

भाख फाट्या जद उणरी आख खुली अर पली वार भर-निजर आपरै धणी रो उणियारो देख्यो तो उणरै मुडै सू चीस नीकळती-नीकळती रयगी। वा हाक्-वाक-सी की जेज उणरै साम्ही देखती रई। काई पतीस चाळीस री ऊमर पार करतो वो मिनख अब उणरो घरधणी मुकर होय चुक्यो हो। नीद मे उणरो उणियारो थोडो औरू विडरूप-सो होयग्यो। माथै ऊपरअधपाक्योडा सा बिखरयोडा वेस, विडी अर तमाखु पीवण सू काळा पडियोडा हाठ अर पक्का गेहुवो रग। हाथा पगा री नाडिया उफस्योडी अर खुरदरी हथाळिया। धणी रै रूप मे मिली इण माणस मूरत नै देख र वा घबरायगी अर अेकाअेक पलग छोड'र छेडे ऊभगी। उणनै मवळ-सी आवण लागी। वा आसरै रै विच्च रुपियोडै थाम रा स्सारा लिया कुण-जाणै कित्ती जेज ताइ उण सूत माणस नै फाट्योडी आख्या सू दखती रैई। छवट बारै आगणै म कोई रै आवण रा पग वाज्या अर हळकी धासी सुणीजी। बारणै साम्ही देखण र साथ ई क्वळै पूगती भाजाई दीखी। वा सभळ र भारी मन सू बारै आयगी अर भोजाई र काधै सू लाग'र बिलख पडी।

गाता री सुबक्या अर भोजाई री धीमी आवाज सू स्यात् माय सूत नरसाराम री नीद खुलगी ही। उण उठ'र खखारो कियो अर तुरत गाभा-पगरख्या पैर आसर सू बारै आयग्या। बारै कनकर नीसरता उणर उणियार माथ झैप साफ निगै आवै ही। उणरै घर सू बारै निकळण रै साथ ई गीता बसक्या भरती पाछी आसरै माय उठगी अर थाम रो स्सारो लेवतो फेर बिलखण लागगी। उणरी हालत अर बिलखणो देख र उणरी भाभी री आख्या ई गीली हायगी। वा घणी जेज ताई उणनै ध्यावस बधावती रैई, पण वा जाणै ही क गीता रै मन री पीड नै मिटावणो अबै इत्तो आसान काम कोनी हो।

सूरज अबै आथूण कानी ढळण लाग्यो हा। दिनूगै सू अबार ताइ रा सगळा रीत-कायदा अर नगचार मे वा अेक निरजीव जिनस दाइ मायस् बारै अर वार सू माय पोरीजती रैई। नी काई उछाव अर नी पिछतावो। वा आपरो आगलो-पाछलो सगळा सरतर दग चुकी ही। पसद-नापसद रा सगळा सवाल अब अकारथ होय

चुक्या हा। दिनूगै जद पितरजी री धोक सारू उणनै धणी रै साथ बठाई, तद उण आपरै पीणै घूघटै री ओट सू अणचीत्या ई उणरो चरो अेकर ओरू देख्या हा। वो उदास हो। म बीद रा गाभा मे उण बगत उत्तो बठरपण कोनी दीख्या। उणनै आपरै दिनूगै रै आचरण माथ थोडो अफ्सोच ई होयो। दोफारा की जेज वा फेर सोयली, उण सू अबै री जी पण हळको होयग्यो हो।

विदाई री वेळा जद गाव री लुगाया 'सीख' उगरी तो अणचीत्याइ उणर हीयै री पीड कठा अर आख्या रै स्सारै वारै आयगी। जिण 'सीख' न आपरी साथण्या रै साथ वा रळी अर काड सू गाया करती ही, उणरा बोला म भरियोडी वदना नै आज उण पैली दर्फ मैसूस कीवी—

आवा पावा अे आवली,

अे, इतरो बावल कै रो लाड, छोड'र बाई सिध चाली!

11,363

9/5192

लुगाया रै अेक्ल-सुर अर उणर दोरै बिलखणै सू अेक अजब करुणा उपजाऊ माहौल बणग्या हो। आस पडोस री लुगाया अर उणरी साथण्या इण रावणै रा असली मरम जाणगी ही। सगळया री आख्या गीली ही। जद बेटी बाप र साम्ही पूगी तो बूढा जीयाराम आपरै हीय माथै काबू नी राख सक्यो। मायलै अपराध-बोध रै कारण उणरी जबान जाण ताळवै सू चिपगी ही, आखती-पाखती ऊभा लोगा किणी भात समझा बुझा'र बाप-बेटी नै अळगा किया। आई हाल दोनू भाया अर भोजाया री ही।

पोर रात ढळिया बरात उणरै सासरै बरबाळै पूगी। चार ऊट गाडा माथै सफर कित्ता बगो घटग्यो, उण नै पतो ई नी लाग्यो। बरात गाव र गोरवै पूगता ई आगण मे चैल पैल माचगा। कडख ढोल घुरीजण लाग्या। लुगाया बधावो गाय बीद-बीनणी न घर रै माय लिया। बधावण री रीत पूरी होया बीद-बीनणी रो गठजोडो खडो होयो अर बीनणी नै गाव री छोरया अर लुगाया ओर रै माय लेयगी। ओरो खासा मोटो हो अर-माय तीनू कानी री भीता री मोरया म दीया जुपियोडा हा। बारणै रै जीवणी कानी भीत माथै हाथ रा छापा अर भात भतीला माडणा कोरियाडा हा। उणी रै कन बाजोट माथ लालटेण जगै ही।

लुगाया अर छोरया नवी बीनणी रो उणियारो देखण री उतावळी मे ही, पण गीता घूघटै नै कस'र पकड राख्या हो। इत्ते म दो लुगाया उणरै कनै आई, अै दोनू उणीरै गाव री धीवारधा ही—पारू अर तुळछी। पारू उणरै अळगलै गर्न सू बैन ही। वा दूजी लुगाया अर छोरया नै थोडी जेज सारू गीता कनै सू आ कैय'र अळगी मेल दी कै बीनणी न थोडी वीसूणी लेवण दो—मुडो दिखाई री रीत दिनूगै होसी। यू आईनी छोरया वास्तै अैडी कोई बदिस कोनी हावै पण पारू र आकरै सुभाव नै सगळी जाणती, इण वास्त वै अळगी होयगी। फगत अेक च्यार पाचेक बरस री नैनीसी छोरी बारणै रो स्सारो लिया, डरू फरू-सी ऊभी रई। पारू उणनै आपरै कनै बुलाय ली—अरे अठी आ प ना! देख तो, आज कुण आया है?'

तुळछी उणनै रोकणी चावै ही, पण इत्तै छोरी पारू री गोदी म आयगी ही। गीता ई झीणै घूघटै री आट म उणर साम्ही देखै ही। नूवा गाभा म सजियाड़ी मासूम बच्ची पण वा काइ जाणती क आ बच्ची कुण है ? पारू आग की बोलती, उणमू पली ई तुळसी उणनै इसारै सू रोक दी अर बच्ची नै ई वार रमण रो कय'र भेज दी। फेर वै खासी जेज ताइ गीता सू गाव अर घरा रा समचार पूछती रैइ। वारै आगण म लुगाया रा गीत बरोबर जारी हा।

पारू की बातेरण बसी ई ही, उण तुळछी रै मना करण रै उपरात गीता न बाता ई बाता म आ बताय दी कै वा छोटी बच्ची उणरै धणी री दूजी औलाद ही। अेक आठ बरस री लूठी छोरी औरू है, जिकी अनार नानरै है।

इण नूवी बात सू फेरू जेकर गीता र कवळै काळजै मे धचको-सो लाग्यो अर वा ऊक-चूक सी होयगी। वा काल रात सू ई ऊमर रो अेक बौत अवखो आतरो त करण मे लाग्योड़ी ही। छोरिया री खबर सू ओ आतरो उणर वास्तै औरू अबखो बणग्यो। वा घणी जेज ताइ पारू अर तुळछी रै उणियार साम्ही गुम-सुम-सी देखती रैई अर फेर देखता देखता ई उणरी आख्या सू चौसरा बैयग्या। तुळछी दवियाड़ी जबान सू पारू नै आळमा दियो अर गीता नै व्यावस बधावण म लागगी—'इस्सो जी छोटो करै जिस्सी कोई बात कोनी लाडी, पारूडी रो तो इस्सो ई आपरो सभाव बळ, थारा सासू-सुसरा बौत ई भला माणस है, देवर ई बौत धीमा आदमी है, थन उठै किणी बात रो चिंता फिकर ना रैवला। थू तो इण घर मे राज करसी राज, बावळी ! थनै किण बात री चिंता है, अर म्हे सागण बैना जिस्सी हा थारै कनै ?'

पारू नै ई अबै आपरी बात माथ अफसोस होव हो। वा ई इणी भात सम झावती रई पण वै दोनू आ कोनी समझ सकी कै आ इत्ती-सी छोरी किण भात ऊमर र अक अजब आतरै नै अेक ई रात मे पूरो करण सारू खुद सू जझ रई है। उणर वास्तै आ बात गौण ही कै सासू सुसरा कैडै सुभाव रा है, घर म कुण-काइ है घरधणी न वा पैली ई देख चुकी। सासर री चैळ-पैळ गाजा-बाजा अर बधावै रा गीत अब उण र वास्त फीका हा। पारू अर तुळछी कद उणरै कनै सू ऊठगी, उणनै की सुध ना रई। वा मैसूस करण लागी कै जब वा बाई सोळहा बरस री गीता कोनी ही, जिकी काल दिन ताइ आपरै पीहर री गळिया म चक्कारा देवती फिरघा करती अर नी इण घर म आयोड़ी काइ नुवादी बीनणी। उणनै तो असल म आपरी जिनगाणी दस-बारै बरस आगै सू सरू करणी है, जठै सू उणरै घरधणी री पैली लुगाई आपरी जीवण लीला पूरी कीवी ही।

नूवी बीनणी रै लाड कोड अर मैमाणा रै खावण पीवण रो काम काई आधी रात ढळिया बाद जावती पूरो होयो। तारली रात री भात घर र दूजै ओरै म जद उणनै धणी री सज ताइ पुगाईजी, तद ताइ वा अेक दूजी लुगाई रै खोळिय मे ढळगी ही। दीय रै हळकै उजास म बा माथ आय र सेज र पगाणै बैठगी। थाडी-सी ताळ म उणनै आपरै धणी री धीमी आवाज सुणीजी। स्यात् वै आपरी भोजाई सू बौल हा— 'नी भाजाई, म्है अठै बारै ई ठीक हू, थ हक्नाक जिद करा।'

'कडी अणूती वात करा दवर जी, ब्याव री पैली रात ई कोई बिनणी सू अळगो रैया करै कदेई ?' आ भाजाई री धीमी आवाज ही।

'ओ हा, पण '

'अबै, पण वण न रवण दो !' आछो, अबै माय पधारो वा पराई जाई लाण, थारी उडीक मे ' इत्ता कैय'र भाजाई स्यात् पाछी उठगी ही।

नरसाराम भारी मन स आरै रै माय आयग्यो हो। गीता उणन देखता ई पलग सू उठ'र अेकानी ऊभी होयगी। नरसाराम नै लाग्यो कै स्यात् वा वारै उठ जावैली, पण उण ई मन काठो वणाय लियो हो कै जे वा जावणी चावैली ता वो उणरै आडा नी फिरैला। वो ई की पळ यू ई वोलो-वालो पलग रै कनै ऊभो रयो, फेर होळै से ईस माथ वैठग्यो। गीता उणी ठौड ऊभी ही।

'काइ वात होई, वैठा कानी ?' पूछण रै सागै ई उण आपरो हाथ गीता रै साम्ही वधा दियो। वा की जेज ताइ फेर खुद म डूवियोडी सी ऊभी रई, फेर उणरै नडी आवती पलग माथ वैठगी अर वाली—'आपणी वडी बच्ची न नानेरै मेलण री काई जरूरत ही ? हो सकै, तो उणन काल ई वुलाय लीजो !' इत्ता कवण र सागै ई उणरो गळो भरीजग्यो।

नरसाराम नै जाणै आपरा काना माथ विस्वास ई नी होया। वो की पळा ताई हाक वाक उणरै उणियारै साम्ही देखतो रैयो, फेर अेकाअेक वो उणरी गाद मे समाय-ग्यो। गीता नै लाग्यो कै उणरी गोद म अेक टाबर रो माथो आयग्यो है अर वा जाण कित्ती जेज ताई उणन पपोळती रैई।

□

मोह

प्रह्लाद श्रीमाली

'नीच पापी कठै रो ई, जलमतो ई थू मर क्यू नी ग्यो। जे म्हनै पैला ई ठा पड जावतो क थू ओ दिन देखावैला तो कठै ई गरा खाड मे घाल देवती–भाई न गमाय देवण रो कळक ई तो लागतो।'

कितरा कडवा सबद है अे। आ सू खारो तो जैर ई काई होवतो होसी। काइ कोई मोटी बन आपरा नैना भाई नै यू कय देव। पण, म्हा म्हारी जीजी रा कया आ सबदा माथै दर ई एतराज नी है। साच कवू तो जीजी रा आ बाला सू काळज ठडक-सी पडी, खास कर इण वास्तै कै सुणता थका ई घर म किणी जीजो नै यू तक नी कयो क थू इतरी अवडी क्यू बोल रई है।

म्ह घूमधाम बठो हू। मा-बापू सोच रया व्हैला, आपरी कुकरणी रो पिछतावो कर रैयो हू। जीजी रा इतरा आकरा बोल सुणनै इ म्ह छानो बोल्यो हू-अर उडीक रयो हू क कणा जीजी म्हारै कनफडा मे च्यार छह मेल्है।

जीजा रै इण उकरास नै जावण साह घणा ल्यार जावणो पडसी। ठीक म्हार बाळपणा सू ई बात सह करणी पडसी।

छारा र जनम माथै छाती फुलावण अर छोरी रा जलम माथै छाती कुटण री धुनद विण देवता रा वरदान है—इणरी जाच कीकर होवै आ ठा नी पण ओ ठा जरूर है क म्हार जलमिया म्हार मा-बापू री छाती जाणै जिती चवडी होई। राखडी बाधण सारू जेक नैनो भाई मिळ जावण सू म्हारी मोटी दोवू बना ई घणी राजी होई होसी, क्यू कै या लायणा नै सागण मा तकात मैणा मारबो करती जाणै किण घडी मे आई, पाछा सात-आठ बरस हायग्या आसा तक कोनी होई। म्हारै होया तो जाणै वारो जमारो इ सुधरग्यो।

इण धरती माथ अवतरित हावता ई जाणै म्हैं इण वात न परतग जाणग्या क मा रा गोळा फरता बैना री गोदी म टग्यो रैवणो ई भाई रो धरम है। म्हैं इण धरम न घण कायद सू निभावतो। बना म्हन टेरया फिरती ता घणो मजा आवता। बार राग भाजी मालारण जावा कै दूध, मिदर जावो क मायण्या मागै रम्मण साह मडी जावा इ॰ हरमम माग। य बारी सर म्हन ऊचाया फिरती, घणा ल्याडा-कोडा सू। इण वगार

सू कदई वारी नाक मे सळ को पडतो नी, क्यूक म्है वा रो अेकाअेक भाई हा लाडसर। नी जाण किणर घूटिय सू कुटळाई म्हारै अग चग वाळपणा सू ई हाडोहाड बसगी। थोडीक ताळ बिसाई खावण नै जे म्हनै नीचै उतारियो जावतो-तो म्हारी माग गोळी बिस्कुट जैडी चीज री होवती। म्हन लागै म्हारी इण लत री घणकरी जिम्मेदारी तो वा री म्हन गत्तुई नी रोवण देवण री कमजोरी है। पकायत पैली बार जद म्है रोयो होवूला तो उणा म्हनै रोवतो राखण सारू ओ उपाव कियो व्हैला, बस उणीज घडी सू म्हारा कुटिल हिया रै हाथा वा री आ नस पक्ड म आयगी व्हैला।

पण जाणै किण जादू रै जोर मा नै म्हारो उणियारो देखता ई ठा पड जावतो कै म्है रोयो हू। वा लप करती म्हनै बैन रै हाथा सू खाच लेवती, म्हारा डील माथै हाथ फेरती थकी बूकण लागती, 'नीतरयोडी राड, छोरा रै कठै लगाय'र आई है, साफ दिखै हुचका भर भर नै रोयो है, जरूर बोलो राखण वास्तै माडै मुडा दबायनै धमकायो व्हैला, जणै ई आरया म आसू रूक्योडा साव निगै आवै है। मा पल्ल सू म्हारो मुडा पूछती जावती, बुचकारघा भरती जावती नै बैना न ई लबडधक्कै लेवती रैवती—'एकाएक भाई है पण राडा री आरया फूटै है इणनै दख देख नै। ओ ठा नी क काले पीहर मे पावणिया सा इणरोज बणोली, म्है कठै तक बैठ्या रैसा।'

म्हनै ठा नी कै बैना म स्याणफ्त अर चतराई जलम सू ई ही कै म्हारै जल मिया पछै बापरी—वै मा रा इतरा भारी आरोपा रै पछै ई कदे ई साची बात बतायनै मा सू कूडी होवण री पदवी नी लीवी। जे बाता चेतै करता म्हन हसणो आय रैया है जीजी रै आज रा बोला माथै। मन माय तो जीजी खुद आछी तरिया जाणती व्हैला क खाडा मे पूरणो तो अळगा, जे उारी जवाबदारी मे म्हारी आगळी ई मचक जावती तो मा उणरो मुरधो भाग नाखती। मोटो होयनै म्है जैडो नीवड्ला इणरी जाच ई जीजी नै पकायत ही तद ही ता अेकर बिदामी जीजी सूवटी नै कैय रैई ही कै मा-बापू म्हनै माथा माथै चढायन बिगाड तो रैया है पण आगै ओ लाड कोड मूघो पडैला।

भलै ई म्है किणी कारण सू रोवनो, म्हनै बाला राखण रो मा कनै तो फगत अेक इज उपाव हो, वा पूछती—क्यू रै रोवै क्यू है, बिदामी मारघो काई ! अर म्है म्हारी तोतळी जबान नै उथळण जिती ई जैमत क्यू उठावतो—फगत हा र लटकै मे माथो हिलाय देवतो। मा हिम्मत देवती, तो चाल थू ई इणरै मार, अर म्है म्हारी कवळी ननी हथाळिया बिदामी रै मोरा मुडा माथै थपकावण लागतो। पण हाथ छूटो सो छूटो। वै कवळी हथाळिया कदेई करडी बणगी ही पण इणरो भान नी तो म्हनै रैयो अर नी ई मा-बापू ई राखियो, तो इणा लायणा री तो बिसात ई काइ ही।

बैना नै जीजी कैयनै बतलावणा तो म्हनै घणो मोडो, इणा रै पराया घर री होया पछै आयो। जद खुद री नाक रासण सारू पैली वळा ब्याही ब्याहणजी अर जीजोसा र साम्ही म्है बिदामी नै जीजी कैय र बतळाई तो, सुण नै वा घूघटै माय ई म्हारै सलीकै माथ मुळकी।

आ वात नी है कै म्है इतरो गलो गूगो हो कै मोटी बैना नै ओपत नाव सू वतळावण री समझ ई नी ही म्हारै माय, साच कव क वर्ण-वर्णै तो म्हन खुद नै घणो अटपटो लागता कै म्हारा साथी-सायना छोरा तो आप-आपरी बना नै बुलावती वगत जीजी, बैन दीदी कवै का वा रै नाव आग अे सबोधन लगाय देवै अर म्हैं म्हारै घडी घडी बन्ळनै मूड रै परवाण विदामडी सूमटी सू लेयनै राड, डाकण अर कुती, नकटी जैंडा जूना नै जाणीता सवदा सू सतकारू।

पण इण मे म्हारो ई काइ कसूर। म्हारी जवान खुलता खुलता ई म्हारा कान आ सारू कमसल अर नकटी राडा जैंडा सवद सुण चुक्या हा। जोर देयनै चेतै करू ता ध्यान आव है कै पैलीवार जद म्है विदामी नै म्हारी तोतळी जवान सू 'कमचल लान' कैयो तो मा अर दादी आपरा लाडेसर नैं वोलता सुण राजी होयनै हसण लागी अर वी लाण चमकन गोदी सू हेठ उतारनै धमकायो हा तो उणनै फटकार मिली ही क नना छोरा रा भाळापणा मार्थे साग क्यू करै, अर ओ देखनै म्है दूणै जोस सू इण गाळ नै साफ सफीट वोलण री कोसिस करण ढूको।

बैना री गोदी सू उतरन म्हारा पग आप सू आप दौडण जोग होया तो पगा न दौडण रो कारण देवण सारू म्हारा हाथ ई अबै बना री चोटिया खाचण जोग होयग्या हा। जीभ तो वोछरडा बोल वोलता वोलता ई पारगत होय चुकी ही। बना री साथण्या ई म्हारा लाड करण सू कतरावती नी जाणै म्ह कद वा रो माजनो पाड दू।

चपा री आगाळी मार्थे सगळी छोरिया खेल रैई ही। वार वार हार जावण री खीज सू नीचै सेरी म छोरा सागै गिल्ली डडो खेलणो छाड बैठो म्हैं यू ई ठाल्प भाग रयो हो। काइ ठा काइ कुचमाद सूझी अर म्ह रमती रमती सूवटी रो चोटलो जोर सू खैंच नाख्यो। वा दरद सू चिरळाई तो उणरी साथण चपा सू ओ सहन नी होयो वी म्हनै फटकारता कयो—'थू सवासण्या नै सतावै थारा हाथ थोर मे ऊगैला।'

थार सू म्हनै घणो डर लागतो म्हन लागतो क अेक्लो दगता ई थोर रा अे काटाळा ऊभा हाथ झपटो मारनै म्हनै पकड लेसी। थोर मे हाथ ऊगण रा कैवता ई म्हैं चिरळायनै घरै भाज्यो। वी वगत इ लारै री लारै डरी-सहमी क दोवू ई आयगी। म्हन विदामी माथ अणूती ई रीस आयोडी ही—उण चपा न थोर रो कैवता वरजी क्यू नी। अर विदामी नै इणरा दड दिरावण नै म्हैं साव कूट वोल्ग्यो क इण म्हार चूटियो भरियो अर कव थारा हाथ थोर म ऊगसी।

विदामी म्हारी वात री दर ई काट नी कीवी। व तो पगत मा रा बोल सुणती रैई— हळक्ट राडा, किण भव म छूट सो, इण रा हाथ थोर म उगावो जणा रासडी ई थोर रै ई बाध्या करूयो। नीच मठा री '

घर म कोई मीठो वणतो क वजार सू आवतो तो म्हारी पाती सैंगा सू वेसी रैवती छनापण म्है बैना री पाती ई हडप लेवता। अेकर सूवटी इणरी सिकायत मा सू कीवी ता उरटी डाट पडी— आगा खाऊ टाबर सू कोइ ईसका करै ? इणन तो थन

थारी पाती ई देय देवणी चाइजै—थारो तो डील इया ई भैंसँ रो सो वध रैयो है—आ तो लाई पागरै ई कोनी।' इतो कैयनै मा म्हारा माडै लाड किया हा।

म्हनै याद है, उण दिन पछ या दोवा नै कदैई मीठो भायो ई कानी। आपरी पाती ई वै म्हन खवाड देवती। म्है तो इण सू अणूतो ई राजी हो।

जीमण सारू बैठतो तो म्हनै हाऊको ई सूझतो, अेक मोटै मोटियार जितरो भाणा भराय लवतो, पण म्हनै तो घी चीणी सू तरावोळ उण आधा भाणा स् पैली ई डकारा आवण लागती अर पेट तणीज जावतो। उबकाया लेवण रा नखरा करतो थाळी छोड देवतो।

बापू हुक्म वजावता—'अरे बिदामी, चार कवा लेय ले चूरम रा, मूघै भाव रो घी अळियो जासी।' मा बिदामी रो उणियारो बाचती थकी कैवती—'यू नखरा करती मुडो काइ बिचकावै है। माई रो भाणो कोई जैठो थाडो ई होवै ।

यू बिदामी अर मूवटी रै हाथा सू वा री चाटियोडी कुल्फिया ई झपटनै म्है चट कर जावतो तो पछै बिदामी सूवटी न म्हारो अैठो खावण म काई अेतराज हो, पण म्हैं देखतो कै घी सू तर वै कवा ई वारै घोतरड सू इतरा दोरा उतरता क जाण माडै वानै कोइ नीमडै रा पाना खवाड रैयो है।

स्कूल म भणाई भला ई करो क मती करो नूवी नूवी प सल पेना म्हारै वास्त मागता ई हाजर हावती, वा न ताड दा का गुमाय दा कै साथीडा मे टणकाई जतावण बाट दो म्हन बूझण वाळो कुण ! परीक्षा म नम्बर ओछा आवता अर रिपोट मे हर विसय रा अका हेठै राती लेण लेंचियोडी होवती अर गैर हाजरिया रो लेखो वापू मास्टरा री मा बैना सू जाडता थका करता। बूकिया करता कैवता कै अै ई कोई मास्टर है, अरे जिण टाबर नै खुद भणाव, उणनै खुद ई फेल कर दै, आप इ फेल करोला ता स्यान किण री जावैला भणावण री लक्ख कानी। गैर हाजरी बाबत म्है कय राख्यो हा कै माट'साब आपरी मरजी सू ई टीप लेवै, टाबरा रो नाव लेयनै तो हाजरी भरै कोनी—क्यू कै खुद ई मोडा आव।

म्हैं जाणतो कै म्हनै कमजोर देखन वै म्हार ट्यूसन रखा देवला, पण भणता म्हनै तो मौत आवती—सो म्हैं घर मे आ बात फैलायदी कै आखा मास्टर म्हनै ट्यूसन सारू तग करै—अब सगळा री ट्यूसन कीकर कर सवा—इण वास्तै म्हैं तो खुद इज भणूला, बिना ट्यूसन रै।

इती ठीमरपण री बात सुणनै तो मा वापू याल ई होयग्या। मा तो इतरी लटटू क म्हैं जद छठी मे लगातार दूज साल ई फेल होया तो पाडोसणा री पचायत म म्हारी हिमायत करती थकी पूरा गरब गुमान सू कय रैई ही क—वनियो तो म्हारो घणो हुस्यार है पण स्कूल रा मास्टरा नै इण माथै खार है, ट्यूसन नी राखण रै कारण इणन घडी घडी फेल कर देव। परमात्मा वारो काळो मुडो करसी। म्हैं तो कैवू त्याय लाग अैडी स्कूल रै। अडी भणाई री जरूत ई काई ! दूकान माथै वळमी जणै इणरा बापू

इणनै महीणा भर मे ई त्यार कर देमी। इणरै हाथ म धन अर जस री रख ई घणी जोरदार है।

पाडोसणा अेक बीजी न जोयन मुळक रैई ही। म्हारो मन तो घणा राजी हो। फेर होजण रो म्हनै दर ई अफसोच नी हा। म्हारा अैडा चरितरा न देख-देख न वना र चैरा माथ अणदीठ भाव उमडता। म्हन वै भाव अगा ई नी मुहावता। म्हारो मन कवतो—म्ह राजी खुसी हू तो अे राडा क्यू पट बाळ आपरो।

वना आप आपरै घरै गई जितै तो म्ह घणो कटाळ होय चुक्या हा। मणाई तो म्हारा हराम हाडका न सुवाई ई कोनी। म्हनै सेजा इ तीन-चार गुणधरमी भायला ई मिलग्या स्कूल री किरपा सू। म्है सगळा लाड रा लचका आभा नै टोपाळी जितरो गिणता अर घर वाळा रै माथ हगणो म्हारो धरम समझता अर घरवाळा ई म्हार इण हगणै मूतणै नै बाललीला समझता।

सिगरेट ता बापू पीवै इण वास्तै इणनै सरू करती वैळा तो म्हन अग ई ओ अहसास नी होयो क म्है कोई नाजोगो काम कर रैयो हू। हा दारू रा गुटको लवती वळा अेक बात जरूर मन माय आई कै अैडी गुणकारी चीज घर म क्यू कानी राख।

वै म्हारै हवा माय रमण रा दिन हा—क्यू कै सिनमा री फूटरी-फरी छोरिया अस्टपौर म्हारी आख्या आगळ भवती अर मन करतो कै आ सगळिया नै लायनै घर म भर दू। आ नी कर सकतो इण वास्तै गम नै गळत करण सारू नसै म रवणो पडतो। बापू म्हारा इण दरद न समझता कोनी अर उपदेस देवता क अबै म्हैं मोटा होयग्या, म्हनै कुसगत छोडनै काम माम जीव लगावणो चाइजै। वा री निजरा मे म्हारा भायला हरामखोर अर बदमास हा जिणा रो साथ करन म्हे बिगड जासू। कडी कुजोग क भायला ई थडी ई बाता आप आपरा बाप री म्हनै बतावता। पण सगळा ई माइत आप आपरै टाबरा नै तो दूध धोया ई बतावता—रारात्र तो फगत भायला इज हा।

बापू चाव हा क म्है—सुबै सू सिझ्या दूकान माथ बठू अर इण सू वान ई की अराम मिल जावै। मा ई अेक दिन कैयो— देख कनु बैटा अबै थू नैना नी है। अठी उठी रूळेटपणो करता चोखो नी लागै, आग थन इज तो ओ घर सभाळनो है—सा रोज दूकान जाया कर—घर म नूवी बीदणी आवैला वा अे रग ढग देखला तो काइ जाणैला मन म।'

हू, तो आ बात है। अबै जाय र उण रहस सू पडदो उतरण लागो क म्है आग आम'र अडो काई काम जा सू। दा सैणी-सुधी छोरिया री ठौड म्हारा नखरा उठावणा। अेक ई उदर लिटियोडा मे इतरो भेदभाव क्यू राखीजियो ? जद क आपरी अल औलाद तो अेक सरीखी होवै।

पण, ना—मा बापू रो वपारी मन म्हार जनम सू ई इण हसाव मे रमियोडो रैया होसी कै छोरिया तो छयट पराया धन है खुद ता जासी इ—साग ई घणो सारो देवणो पडसी। छोरो ता कुळ रो दिवला होवै—इणरी चोखी मार सम्भाळ राखिया मावळो उजास करसी अर आपर नार लिछमी सू लडालूम बीदणी ई लासी।

म्हनै अेकाअेक लागण लाग्यो क बना माथै म्है जितरा अत्याचार किया है वा सगळा रा जिम्मेवार मा-बापू इज है। जे नी चावता तो म्हारी अलामाया न ढाव सकता हा।

म्हन बापू सू बतलावण करता मा रा बोल चेतै आया—'अठै दो जणिया रो अडसलो करणो है अर आवैला अेक इज।' तो काइ म्हार अेक बैन होवती या अेक ई नी होवती तो म्हारो लाड राखता इ नी ? आ ता साव सौदेबाजी होई। म्है थनै अधर अधर राखनै माटा किया है अबै थू म्हानै राख।

पण ओ सोच तो हरक मा बाप रो ई होया करै है। पण बना माथै कियोडा अत्याचार ता वारी साव कुटळाई है। बैना सागै आ कुटळाया करी तो अबै म्है आन बतादूला क वै तो पराया धन ही पण म्है असल धन कैडो हू।

अर बस, म्है ऊधै माथै आयग्यो। नी नी होवै जडा जस जोगा काम करण ढूको। म्है चावता कै वै म्हनै मार कूट नै घर सू काढ देवै अर वानै ठा लागै कै इण सौदेबाजी मे व देवाळिया होय चुका है।

पण अेक वैपारी रो मन यू कीकर हार मान लेव। वै म्हनै परणा दियो। मा बापू हरखिया क अबै छोरो सुधरग्यो लागै।

म्हारा ब्याव मे म्हे दोवू जीजीया नै अेक नूवा ई भाई निगै आया। साव सुधा। वै घणी राजी होई—उणा री खुसी देखन म्हारी आख्या म आसू आयग्या। कदास वगत पाछो लारै चल्यो जाव अर म्हैं म्हारो टाबरपणो सुधो होयनै पाछो सरू करू। इण समच इ म्हारै मन मे मा बापू र सीगै किराध रो अेक थपळको-सा उठ्या। म्हैं सोच्यो—काइ अे लाणा फेर भगवान सू इण घर म जलमण री अरदास करला ?

घरवाळी रो म्है घणा मान राखणो सरू कर दिया। इणरी ई अेक खास वज है। परणता पैली ई म्हनै ठा लागग्यो क अे घर मे च्यार बना अर दो भाई है, सजोग ई अैडो वै दोवू भाई च्याह बना सू नैना। म्हैं कल्पना करनी कै नी जाणै इण भाईया री कितरी सैंतनिया भुगती होवला। अर म्हैं निस्चै कर लियो क इण घर म गतुई दुखी नी हावण दूला।

घरवाळी नैं कदई पूछण री हिम्मत नी कीवी क थन थारा भाई सताया करता काइ ? मा-बाप लडता काई ! इण सू म्हारा कुटिल रूप प्रगट होय जावै तो ?

जिणरो आदमी काम धधा मे लाग्याडो रव वा लुगाई सुखी। घरवाळी नै सोरा राखण खातर ई म्है आख दिन बापू कनै बैठनै वारो धधो जोवतो। ब्याज-बट्टा रै काम म बापू हळकी-सी रकम वास्त ई बूढे डोकरै मिनख नै ई अेल फेल बोलता वा विचार नी करता। सूदखोरी रो ओ धधो अगै ई म्हनै नी रुचता—म्हनै लागता म्है अर बापू रळन सामलै जीवत मिनख री चामडी उतार रैया हा। चामडी उतारिया पछ बापू घणा चळका हायता। केई वार सोचता क इण सूदखोर बाप रा प्राण किण सुआ मे वसै है ? काइ फगत पइसो ? इण पइस र लारै वै की ई कर सकै है—अर म्हैं इण सुआ रो पीजरा खोल दू तो ?

म्हारै जची क घर करता दूकान माथै ई आ बात करणी चोखी रसी—म्है बूझ्यो—'बापू जे म्हारै दो भाई और होवता तो ?'

म्हार सवाल र मरम नै व जाण नी सक्या।—'थार ज्यू वा नै ई पाळ पोसन मोटा करता।

'आ बात कोनी, म्हारो मतळब है—म्है तीनू भाई आप-आपरी घर गिरस्ती न्यारी-न्यारी माडता तो दूकान—मकान, रूपिया, पइसा नै गेणा-गाठा री बरोबर री पाती करता कै नी ?' म्है अबकी साफ-साफ पूछियो तो इण बार बापू रै बदळ वारै मायलो कुटिल बैपारी बोल्यो—'हा जणै तो तीन पातिया करणी ई पडती, पण थू भागसाळी है, थारै कोई पाती बटावण वाळो कोनी।'

वै जाणै इण बात सू म्हारी खुसामद कीवी होवै। पण म्हनै तो नी बणनो अडो भागसाळी। म्है बात नै फेरू खुल्ली कीवी—'म्है अकेलो कठै हू—दो बना तो है म्हारै, वानै ई बरोबर पाती मिलणी चाइजै।'

बापू साव छाना, जाण की सुण्यो ई नी होवै। म्हैं खूब पिछाणू—बात न टाळण री आ री आ जूनी कळा है। म्है थोडा कडो हायनै कैयो—'म्हारी बात रो जवाब दो।'

वै म्हनै ओपरी निजरा सू तकता थका बोल्या—'थारो मगज तो नी फिरग्यो, काइ कैय रैयो है ? जिको कय रैयो है उणरो मतळब तो जाणै है कै नी ?'

'हा, खूब जाणू हू मतळब, जिको की है उण री तीन पातिया होसी, बराबर।'

सुणन वै आपरी औकात माथै आयग्या।

'जा रे नालायक हरामखोर, खुद मैणत करनै भेळो कियो है जिको—पातिया बाट रैयो है। परसेवो काढ नै दोरो ता हायो हा कदै ई ? खाली रूळियारी करणी जाणी है।'

'पसीनो काढ न दोरा तो आप ई कोनी होया। म्हैं म्हारा तेवर माथ उतर आया।—आ तो सैंग बडेरा री कमाई है, आप तो फगत खजाना रा साप ज्यू रूखाळा हो, इणरी रूखाळी छोडन इण न बाट दो।'

'अर निकळ अठा सू मादर' कैवता थै अणछक तम म आयग्या अर म्हनै धक्का देय दिया। जे म्हैं जमनै नी बैठ्यो होवतो ता धरतै पड जावतो। बापू रै इण अणचित्य बवार सू मन ओकदम ई भरग्यो। बापू रा सुवारथ खुलन साम्हा आयग्या।

म्हारा उदण्ड दिमाग म ओर की नी सूझ्यो तो म्हार मुडै सू निकळग्या—'बाप हा ता थाह होयो, मादर क्यू कैय र्या हा आ गाळ देव म्हैं उणरो मुडो तोड देवू।'

तोडनै वता म्हैं कवू अर बार बार कवू तोड मुडो आव तोड अर वै थापै आय ज्यू भिडग्या म्हार सू। म्हान बाथोबाथ होया देख नै वारै तमासाइया री

भीड भेळी होयगी। म्हनै ठा ई नी पडयो कै म्है बापू माथै हाथ छोड चुक्यो हो। म्है होस मे कठै हो। च्यार मिनखा म्हानै अळगा किया अर वै ई लाई सीख देवण रो नाटक करता, उण पैली ई बापू रो चुकियोडो वैपारी मन पाछो ठायै आयग्यो। — खास की वात कोनी, म्हारा दुरभाग के ओ हाल ताई नादान इज है। सबदा रा अे करचा वार आग नाख'र दूकान बडावता थका म्हनै बोल्या—'घरे चाल अर ढग सू बात करणी सीख।'

म्हारो सग रोस-जोस नदारद हो अर म्है रगै हाथा पकडीजिया गुनगार री ज्यू हाक बाक होयोडो घर कानी वहीर होयो।

बात तो पून री गति सू चाल। सगळा आ बात उडगी कै कनियै आपर बाप नै कूट दियो। इणी कस्बै म परणायोडी बिदामी तक ई आ बात पूगी तो वा बरनाटै अठै आयगी। वा म्हन झझोड-झमोड न पूछ रैई ही—'बोल कमसल क्यू हाथ उठायो म्हारा बापूजी माथै?'

बापरे इती तेज है जीजो, म्है तो इणनै साव गऊ समझतो।

म्है घणी ताळ री गताघम मे रैयो छैवट की बतावण सारू मुडो खोलणो चायो तो बापू लप देणी म्हारै मुड आडी हथाळी देय दी। बिदामी की समझ नी पाई। वा नी जाण काई सोचती होसी? किण किण तरै रा अरथ लगावती हासी। उण फेर कयो—

'इण नालायक री पुलिस थाणा मे सिकायत क्यू नी करी आप! अैडो नीच कतरला आ ता नी जाणी ही।' जीजी रा पछताव रा आसू ढळक रैया हा। म्हारै अेक साल रा बेटा न गादी माय उलण्या घरवाळी ई आखा निजारा टुकर-टुकर जोय रई ही। म्है अबै फाट रैया हा—लफनै जीजी रा पग झाल लिया—'जीजी म्हनै दाय साळ रो नैनो टाबर बणा दे—म्हनै टाबर बणा दे ।'

बिचारी जीजी की तो नी समझ रैई ही। □

हीरा महाराज

मीठेश निरमाही

हीरा महाराज नैं माथा झाल्या पुरो पखवाड़ा होयग्या। वा रा हगणा मूतणा ई पाळ म इ हावै। इतरा दिन टमटा गळै उतार लिया करता हा, पण कारल हफ्तभर स ता अन्नपाणी ई त्याग दिया है।

पूरै गाव म अेक ई बात वै हीरामहाराज नै हवा रा असर हायग्या है। व घणा दुकातरा है। जीवण री आस ई वा रैई है नी। दरसणी मूरती है, वेहल दरसण कर नेणा चाइज।

सो नेडै घरा री इण वस्ती म सू अेक-अेक कर र लगालग पूरा गाव वा रा दरसण कर सरधा मुजब भेंट चढाय आया है।

गाव म किणी घर गुवाड़ी म जे कठैई थाड़ी घणी राड रुड सरु हाय जाव ता वहम रै मारियै लागा नैं वाईसा, भरूजी, भामियाजी कै पाबूजी रा थान लिग आव। थान जाय'र पूछ करावै अर भापाजी बतावै सा लाहे री लकीर। आ देवी-देवतावा नैं परसण करण खातर नारळ सू लगाय र अजे ताई लाजरू ई करै। दारू रा प्याला क गुळ रोठ ई चाढै। इत्ता ई नी मनौती पूरण सारू मनजाणी वालवा ई करै अर पूर। मचियाडा साड वणिया हीरा महाराज आ अधविस्वासी कूदडा म कूद-कूद र धापटा करिया है।

हाल हारी वमारी री वळा डागदर क वैद री ठौड गाववाळा नैं हीरा महाराज रो घर दीसै। जठै हीरा महाराज झाडा फूका कर र सरणै आवण वाळा रा हळको हाथ करै। भूत प्रेत री छीया बताय र वा सू मुगति पावण रा झाडा जतर कर ता किणी रा डारा डाडा कर र मन बिलमाव। इणी कारण हीरा महाराज आखै गाव दवरूप पूजीज।

भगवान भरास जे आरै सरण आयोडो ठीक होय जावै ता हीरा महाराज री ज ज कारी होय जावै। अर जे कोई मरखप जाव ता वेमाता र लिग्योड लेखा रै हवाल कर दिया जाव।

गाव मे हीरा महाराज र सौ नेडा चेला चाटी है। वा म सू चार पाचक तो हरदम वा री हाजरी म ऊभा लाधै। गरुजी री सवाचाकरी म कोई कसर नी। भगती भावना मे जडा गरूजी वडा ई वारा चेला चाटी। काना फूकयाडै मतर करोना सवा तो पावाला मेवा म सगळा ई रग्गा-बग्ग रगियोडा।

गरुजी रै बताया सैं ई मान है कै कुदरत री माया अपरमपार जलम मरण इ कुदरत रा इ खेल। गरुजी री मादगी ई कुदरत स जगै ई परजारी नी। आ मान'र सगळा ई गरुजी री हाजरी मे पगा ऊभा है।

हीरा महाराज रै आळया दाळया फिरता घिरता सैं ई कव क किणी र माथ पर वाझ हावै ता ऊचाया जा सकै है, पण दुख दरद ता करमा रा फळ है। करम करणिय नै ई भुगतणा पडै है। किणी सू ऊचाया नी ऊच। सैई मानै कै हीरा महाराज आपरो नी, परायै दुख दरद नै भुगत रैया है परायै दुख सू झवाझोळ हायाडा है। त्यारलै दिना अेक माटयार नै बचावण खातर खुद हवा री फेंट मे झिलग्या। तद सू ई आ री दसा दिनो दिन बिगडती जा रैई है। म सू पैली हवा रो असर पगा पर हाया ता गरुजी माचा झाल लिया। अब कमर अर पेट पर है ता आना खाज अर मराडा चालै। पट मे आफरा अर हाथ पगा म सुन वापरियाडी है। टट्टी-पेसाब ई बद है।

माचै माथै पडिया पडिया महाराज रै मारा अर कमर मे टाकिया पडण ढूकगी है। धा रा चेला हवानै डामणै रो असर बतावै। वै कैवै—हवा जिणनै अै वस मे करणी चाई हा, वा हवा ई आ रै डील मे डाम चेप्या है, जिका टाकिया रूप उघड रैया है।

जठै हीरा महाराज सूता है, वी माचै र आळया दोळ्या माख्या ई माख्या भवै। हीरा महाराज जद ई टसका करता आपरै हाथ पगा म हिलावै, मभावण वाळी माख्या उड'र धरा घाल लेवै। सगळा ई चेला मानै है कै गरुजी जमराज सू आथड है।

हज री बेमारी फैली ता अडी कै पूरी बस्ती रा फीफरा ई बिखेरगी। अेकण ई साथै छोटी मोटी बीस पचीसेक नेडी मौता होयगी। हीरा महाराज री गुवाडी ई अछूती का रई नी। वा रा अेक डीकरो अर अेक डीकरी ई हेजै र हाथा चढग्या हा। पण महामारी रै बावजूद ई हेजै री फट झिल्या केई लाग बचग्या हा। गाववाळा हाल मानै है क जिका मरग्या हा वै देवी रै परकोप सू मरिया हा अर जिका ई बचग्या हा वै हीरा महाराज रै जतर मतर अर डोरा डाडा रै पुन परताप सू बचिया हा।

अर कवै डोरा डाडा अर जतर मतर करती वेळा जे थोडी घणी भूल-चूक होय जावै तो सामली हवा डोरा डाडा अर जतर मतर करणिय रै घर रा सित्यानास कर न्हास। अै सगळी ई बाता हीरा महाराज री ई बतायोडी, सो टेक राखता महाराज रा चेला जोर देय र कैवै कै हीरा महाराज रै बेटै अर बेटी री मौता ई इणी कारणै होई है। गाव वाळा नै तो महाराज बचाय लिया हा, पण घर न को उबार सकिया हा नी। डूबती बस्ती न बचावण खातर गरुजी माथ जितरा ई गुमेज करा, थोडो है।

आ टावरा रै मरिया रै बाद हीरा महाराज र परिवार मे घरवाळी, दो माटयार अर अेक डीकरी है। डीकरी रा पीळा हाथ होया तीन वरस बीतगा। मोटयारा म सू अेक वा री उगीनाइया सू तग आय'र भाज'र फौज म भरती होयग्यो अर बिचेटियो आपर बापरै झाडा जतर, डारा डाडा अर पाखडा सू तग आय र स्हैर मिळग्या।

वा दिना आखै परगनै म घणी ई अफवाहा चाली ही क हवा जिणनै हीरा महाराज वस मे करण री तेवडी ही वा ही महाराज रै बिचेटियै प्रभुडै नै गायब कर दिया। इण

अफवाहा रै कारणै वा रै परगनै म वा रा खासा भला परचार हायग्या हा। वा र जस रा गीत दूणा गाईजण लागग्या हा। लागा री ताणा पर लेणा लागगी ही। अर व अगैइ धापटा करिया हा। अर की वरसा रै आतरै वस्तीवाळा नै ठा पडी हीरा महाराज रा विचेटियो हाल जीवता है। बी अे, अेम जे ताईं री भणाई कर ली है। अर स्हैर मे अेक सरकारी दपतर मे नौकर हे। मणी-पढी छारी सू ब्याव करियो है। वा ई सरकारी असपताळ मे नरस है। अर वी रा दा टाबरिया अंग्रेजी स्कूल म भण है।

गाव वाळा इणनै हीरा महाराज रा कमायाडा पुन माया।

हीरा महाराज जद सू मादा पडिया है, वी बूढिया प्रभुडे नै बुलावण खातर जार दिया है। अर महाराज वा नै आ कैय'र समझाया है कै— 'म्हैं देवी रा भगत हू, म्हारा तो बाळ ई बाको का हावै नी। पछै अेळ ई छारै नै क्यू बुलाया जावै। बस्तीवाळा ई बात मानली है कै महाराज सही फरमाव है।

पण ज्यू ज्यू व घणा डाफा चूक हावता गया है। वा री घरवाळी टाबरा न बुलावण री रट लगाय राखी है। इत्ताई नी, अेक दिन तो वा मौका देख'र हीरा महाराज नै समझाया ई हा कै—'हेजै वाळी महामारी नै याद करा, वा दिना थार परवारै ई प्रभुडो सुई दिराय आयो हो। घणी ई महामारी फैल्याडी ही, पण वा ता उवरग्या अर दूजा घणकरा उणरा साथी सायना हुजै मे झिल'र दम ताडग्या हा। अठै नी ता स्हैर मे थारा इलाज हाय सकै है।' पण छेहलै ताईं हीरा महाराज ज्या ई भरता रया हा।

अर जद माटै सू माटा अर चावै सू चावा झाडागर अर डारा डाडा करणिया आय परा'र हाथ चाडग्या है, वा री घरवाळी परवारै ई आपरी बेटी नै बुलायली है। वडाड नै बुलावण तार दिराया है अर विचेटिय नै लावण माधै नै भिजवाया है।

स्हैर है। स्हैर री गळिया है। अर उणी गळी म जनकवि उस्ताद गळी है। जिणमे हीरा महाराज रो विचेटियो प्रभु नारायण मकान ठाय लियो है।

माधा गाव सू स्हैर अर स्हैर री इणी गळी मे आय पूगा है। गळी म क्रिकट रमता हीरा महाराज रा पोतरा वीन पिछाण साम्ही दौड मा है। हाथ पकड'र लटूमिया है अर हाका करिया है—'माधव बा ऽऽ आयग्या माधव बाऽऽ आयग्या!' माधो वा न गोदी म ऊचाय अेक अेक कर र लाड करियो है। अर अेक नै ऊचाया आपरी गेडी न सभाळता-सभाळता हीरा महाराज रै बेटै रै घर ताइ आय पूग्यो है। दारण नेम पलेट टगयाडी है— प्रभुनारायण राजोलासुद।

दोवू टाबर हाका करता-करता माध रा हाथ छुडाय'र आपरी मा कन भाग्या है— अर मम्मा! थारै देस गाव सू माधव बा आया है। यू माधा पली ई दो-तीन बार आय चुक्या हा सो टाबर पैली सू जाणै हा।

माधो घर म पग धरता ई हीरा महाराज रै बेटै री बहू नै पगै लागणा करिया है अर बदळै म 'जीवता रो माधवजी सबद काना घाल्या है। अर नेड जाय आगणै ई बैठग्यो है।

'अबकै ता हाऊ मतो करियो, माधवजी!'

माधो पडूत्तर दियो है—'आवणा पडिया है।' साथै वा पूछ ई लियो है—'प्रभु महाराज सिध पधारियोडा है।'

'थारै आगै-आगै, अबार ई ता निकळया है। छुट्टी है, पण कैवता वै दफतर म आडिट पार्टी, आयोडी है। अर दायैक दूजी मीटिंगा म ई जावण रो कैयग्या है। पण थे आवता ई वानै पूछण लागग्या, क्यू काई खास वात है?' की रुक'र—'गाव म है तो सगळा ई ठार?'

माधा पडूत्तर दिया है—'अबक की फारा समचार है। म्है सीधा गाव सू ई आया हू। बापसी घणा-डाफा चूब है। अकदम सगत बमार।'

'वगतसर कागद कै तार दिराय देवणा हो नी। बेमारी ता नी बधती। वै कित्ताई कय चुक्या है, पण गिनारै कुण?'

माधा बाल्या—'आप ता जाणा ई हा सा वै वै पुराणिया लाग है। हरेक बात मे लाभ करै। इत्ता दिना आ कैय'र काढ लिया कै महाराज सावळ हाम जासी। डागरा नै भाडै हेठै क्यू देवा। सो-दा सो रिपिया रा हालती म जूत लाग जासी।'

'पण अबै ता हजारा रा जूत लागणा है। आखिर गिवार ता गिवार ई हावै।'

आ बात माधै नै चोखी का लागी नी वा नीची घूण कर'र आपरै अेक खारडै न दूजाडै माथै रगड'र रीस झाडता बाल्या—'हावणी जिकी ता हायगी सा, प्रभु महाराज न बुलावा जिकी बात करो। पाछा पल्डी गाडी सू ई बहीर हायणा है।'

पण व तो दफतर जावता-आवता बतायग्या हा कै आडिट पार्टी आयाडी है अर बी रै मरचै-पाणी नै सेय'र थाल ई वा रै अर अफसरा रै बीचै गाट-क्षपाट हाई ही। छुट्टी-छपाटी मिलसी कै नी। कैवै नी क जद आपना आव जद अेक माथै अेक आवती दूज जावै। म्है थानै राटी परूस दू, थ जीमा उती जज म ई बुलवायलू वा नै।'

राटी जीमण रा ता मगई मन कायनी। माधा बान्या।

'ता काम?'

चा ता पी लेसू।'

प्रभु री घरवाळी चाय बणाय र दवण र बाद माच्या किणी पडास... बुलावण भेज्या जा गव है, पण आगले ई पल साच्या सगळा ई दातर मर्यादा हागा।

अर यू इ पडौस काय रा, काम पडिया कांई वाली आगळा माय ई वा मूत ना। आ सोच्या रै बाद वा साग ई पगा आपरै घर धणी नै बुलावण निरळगी ही।

लारल दा दिना र आखय सू माथै रो आग्या रातो नुट हायगी ही। चाय पीया र याद ई रय रैय'र उणन झपकिया आवती इज जाय रई ही। जठै वा वठा हा उठै ई आपर पातिय न सिराणै देय र आडा हायग्या। हीरा महाराज रा बुचमाना पातरा यू घर नै माय ल मल्या हा, पण ज्यू-ज्यू ट वा अब मागीडो नीद नय लीवी हा। अर नीद लिया र याद जद चिलम री मसा हाई ता चिलम भरी। पातियै सू लीरो फाड र गाटी बणाई। साफी नै भिजाय र अगूठ अर आगळिया रै बिचाळ घाल्या निचोडता थका दा-तीनक झपटा दिया। अर छेहल, चिलम र गाफी लपट र दा-तीनक फूका खीची इ ही कै हीरामहाराज रै वटै री वहू रामती सारती घर मे आय पूगी। अर लारै रो लारै कूटो खडखडावतो प्रभुनारायण ई आय पूग्या हो।

माथा आगै होय र रामास्यामा करिया हा अर प्रभु उणनै जिना की बाल्या करिया ई गळै लगाय लियो हो। माघो बताया हा— हीरा महाराज सफाई डाफा चूक हायग्या है। माजी भेज्यो है। पैली ई गाडी सू पाछा वहीर हावणा है।'

आपरै बाप री मादगी रा समचार सुणता इ प्रभु आपरै अतीत म खायग्या हा। अेकण ई सागै वी री सुरता म केई केई घटणावा आय ऊभी होयगी।

' गाव मे हेजै रा प्रकोप होया महामारी फलगी ही। म्है टमण जाय र सुई दिराय आयो हा। सिझ्या रा वावडता ई जीसा म्हारा हाड खोळा कर न्हाखिया हा। हाल जद कद ई वादळा होवै है, मारा अर कमर म हळीका हालै। जाणै अेकाअेक उणरी कमर अर मोरा मे हळीका उठण लागग्या अर वो की सोचतो आपरै डील माथ हाथ फेरण ढूकग्यो हो।

आरया मे सरगवासो बैन भाई प्रगटग्या हा हेजै रै दिना म जद अ घणा हायग्या हा, तो वा नै सफाखानै लेजावण री घणी ई खपत करी ही उण दिन ता जीसा अर म्हारै बीच बाप-बेटै रा नीठा काण कायदा रैया हा। म्है हारग्यो हा अर जीसा रा झाडा-जतर वा रा प्राण लेय लिया हा। अेकर फेरू उणरो रू रू ऊभा होयग्यो हो अर आख्या डबडबायगी। मगजी वाळी फूटरी फरी जाध जवान लाडल नै डाकण काढण र मिस वै चीपटा ई चीपटा सू मार मार र मारकाठो ही। म्है उण दिन ई घणोई विच पडियो हो कै उणनै डाकण नी 'हिस्टीरिय री बेमारी है, पण नी तो व गिनारिया हा अर नी ई वस्ती वाळा ई मानिया हा। अर उण दिन तो घणो ई गोधम मचियो हो जिण दिन पूनम कारीगर रो अगई खोज गयो परा हो। उणरै छोर न निमूनियो हायाडो हो अर जीसा ऊपरलो ऊपरलो कय र याडा फूका करता रया हा। म्है घणोई सफाखान लेजाय र इलाज करावण रो तगादा करियो हा, पण वारो हठ आखिर उणन ई रिवाय रिवाय'र मार काढियो।

अर उण दिन ता वै सफाई दुसमण बणग्या हा, जद म्हे वा रै चेला नै अध-विस्वास रै वरखिलाफ म वाता वताई ही। उण दिन ई दूजी वार म्हा दोवू वाप वेटै रै मना रा काण-कायदा अगैई टूटता लखाया हा। मोरा चौपटा पडता लखाया तो म्हें गाव छोड'र स्हेर भाग आयो हो। घणा दिन सडका माथै भूखा मरता काढिया हा। होटला पर कप पलेट धोय'र थारी-म्हारी ट्रासपोर्टा माथै हमालीपणो कर पट री आग बुझाई ही। वकीला रै घरै अेंटा चूटा बरतण-बासण माज वा री घरवाळिया रा लैगा अर टाबरा रा ढ्गा धोय धाय'र पढाई करी ही। अै सगळी घटणावा याद करता-करता अेकर फेरू वी रो रू रू ऊभो होयग्यो हो। अेकर तो चायो कै हिम्मत कर र माधै न कैयदे'कै 'हीरा महाराज मादा है ता थान झाडागर कै डोरा डाडा करणियै न बुलावै। म्हैं तो कोई जतर-मतर करणिया हू नी। म्हारै खातर तो वै उणी दिन मरग्या, जिण दिन थारी अणूताइया रै आग म्हनै गाव छोड'र स्हेर भागणो पडियो हो। म्हैं कथै-कथै नै दिन जीया हैं पण आगलै ई पल ममता री मूरत मा री सूरत अरस-परस प्रगटगी। आख्या डवडवायगी ही। मा कैया करती ही—'बेटा, आरै धध-पाणी रै खिलाफ है थू, पण अै जितरा ई कळाप करै, था टाबरा र पेट नै पाळण खातर ई ता करै है। बाप दादा सू चालतो आयो ओ धधो अेकाअेक किया छोड्या जा सकै है? अर जे छाड ई देसी तो दूज ई दिन घर मे भूख भुवाजी धडिया करण ढूक जासी। थारी भणाई-पढाई बन सुवासणिया रा आणा-टाणा किया होसी?'

अर वो इतरा ई वाल सकियो हो— 'था ई वतावो माधव, अबै काइ करणा चाइज ?'

गैरै सोच मे डूब'र माधा पडूत्तर दियो हो— 'म्हे तो गाव रा गिवार हा बापसी, काईं करणो चाइजै अर काई नी म्हे काई बताय सकू। आप भणिया-पढिया हो। सै जाणो ई हो, पण म्हारी तो आ इज अरज है बापसी कै छेहल्, बूढै मायता रा दरसण कर लेणा चाइजै। अबै काइ बिचारै जडी वात का रैई है नी। म्हैं जद वहीर हायो हो, आपरा माजी मुळावण देवता फरमायो हा कै 'थू प्रभु नै म्हारो नाव लय र बतावज कै थारा वाप थारी ई रट लगाय राखी है, जद ई वा रा हुरफ उघडै, जबान माथ थारो ई नाव।'

आखिर प्रभुनारायण न आपरै मेळावै र साग गाव वहीर होवणा पडियो हो।

माथा ऊपर वाळी सीट माथै पसरियाडो खुराटा भरै हो अर वै दोवू धणी लुगाई सीट मिळिया रै बाद ई हीरा महाराज री चिंत्या मे उळझग्या हा—

बेमार है तो ले आसा स्हेर।'

'थू को जाणै है नी वानै। अधविस्वासी लागा रै बापा रा ई बाप है व। मानसी तद नी!'

'गाव मे रैया इ तो वा रा इलाज करिया जा सकै है ।   माधवजी बमारी रा अेलाण बताय दिया हा अर म्है डागदर सू 'कन्सल्ट' कर र दवाइया ले आई हू ।'

'पण दवाइया तो लेसी जद !'

'नीतर काइ करसो ?'

करसा काइ, हाई हाई देखसा ।'

इण बिचाळै अेक धसको सो लाग्यो । गाडी किणी टेसण र सिगल न पार कर'र लैण बदळ रेई ही ।   अेकण ई सागै केई लाग हरक्त मे आयग्या हा । गणमणाटो सुणीजै हो—पाली री टसण आयगी   पाली री टेसण आयगी ।

गणमणाटै सू माधै री नीद उडगी ही अर वो आळस मराड'र उबासिया खावतो थको ऊपरली सीट सू नीच उतर आया हो ।

गाडी 'प्लेट फाम माय आय ढबगी ही ।   उतरण अर चढण वाळै लोगा री उतावळ रै कारणै की धक्का धुक्की मचगी ही, पण की जेज होया ई अेक-अेक कर'र आधो डिब्बो खाली हायग्यो हो ।

दूजै जात्रिया रै सागै माधो अर प्रभु ई आपर टाबर टूबरा अर समान सम्भ लेय'र उतरग्या हा ।

रेल जाता र बाद वै 'बस स्टेण्ड' पूग'र बस पकडी ही । टाबर भूख सू बिल बिलावण लाग्या ता माधो अेक ढाबै सू आठ दसक रोटिया अर दो दूना मे साग ले आया ।

अचाणचक बस रै नडै आय र कोई जाणतु प्रभु नै बतायग्या हो— 'म्है भागफाटी री थळा गाव सू वहीर हाया हो, थारी गुवाडी मे लुगाया करणै ही ।'

टाबर उछलकूद र सागै राटी रा टुकडा तोडण ढूकग्या हा अर प्रभु ऊडै सोच मे डूब्या गतागूम होयग्या हो । बस सरपट दौडै ही   जाढण, साजत, सियाट अर दूजाई केई गाव लार छूटग्या हा ।

रल अर बस बदळ र जीपडी माड करिया रोटीवळा ताइ वै आपरै गाव रै फिळ भिळग्या हा । जीपडी सू उतरता ई दोवू धणी-लुगाइ धरम आड देवता-देवता छावट मानी मुडिया ई हा कै पीचकै सू आवती पणिहारिया आपसरी म पूछण ढूकगी ही—'कुण है अै ?'

वा म सू अक वाली ही— हीरा महाराज रा विचेटिया बटा-वहू दिसै । स्हैर म नौकरी करै है । काल माधाजी गिया हा, ले आया है ।

पण राडा आनै खाना ता करावो म डोकरा हाल जीवै है ।' अेक साग केई सुर उभरिया हा ।

दूजोडी बोली ही—'हो नँ नी हो हीरा महाराज री तो उमर् बद्ध्गी।'

'थू ई सफा बावळी होई ह, कदेई काई हवा रै फेंटै झिल्यो कोई बचियो है ?'

इतरै मे वा मे सू अेक आगै होय'र वा दावू धणी लुगाई नै छाती करावती बोली ही— 'थे जिको सोच रया हो वीरा वा बात नी है। हीरा महाराज तो थारै मे ई जी अटकायाडा है। थारी इज रट लगाय राखी है। जद-कद ई आंख खुले अर हरफ उघडै होठा माथ थारा ई नाव है।'

'थे भागसाळी हो वीरा कै टेमसर पूगग्या। महाराज र जीवता रो मुडो तो देख लेसा। थारा वडाडा भाई घणाई लारल महीणै मर सू भेळा ई हा नी कठै ठा ही कै उठीन यै वहीर होवैला अर अठीन अ माचो झाल लेवला।

'खाधो देवणो ई लिरयोडो होव तो दिरीज। व आयोडा थका ई गया परा अर अ अळगै सू आय पूगग्या। तीजोडी बोली ही।

'पछ तो रोवता रावता आसी अर रोय'र रैय जासी। कैवती-कैवती पणियारिया ज्यू ज्यू आप-आपरा घर आया अेक अेक कर'र सगळी ई विखरगी ही।

वै दावू धणी लुगाई आपरी गुवाडी ताईं आय पूग्या हा। गुवाडी गतागूम हायोडी ही। हीरा महाराज रो माचा वा र चेला चाटिया अर गाव रै वड वडेरा सू घिरयोडो हो। अर गुवाडी म हाय तोबा मचियोडी ही।

प्रभु नारायण जावता ई आपरी मा री छाती म माथा देय र बाग दे दीवी ही। डील चढयोडी मा री आरया ई वरसण लागगी ही। धणी जेज ताइ दावू मा बेटा अेक-दूजे रै गळै मिळिया रोवता ई रैया हा। पछै हथेळिया मे झाल र ल्हाला देवती प्रभु री मा उणन हीरा महाराज र माचा ताइ लेयगी ही। वा र सिराणिय बैठ बालण लागी—'देखो, आख्या खालो, थारो वमडावत आयग्यो है। थारो फुटरचन प्रभुडो आयो है। थारो जीव इणी मे अटक्योडो हो नी ?'

यवळै मे हीरा महाराज री उपर उठ्योडो आख्या छळक'र रैयगी हा अर ऊचा हाया वारा हाथ अर कान पाछी आपरी पैली वाळी गत पकड ली ही।

वो देखै हा ठरकै अर हरदम सजधज र रैवणिया वीरा वाप अगै ई धुमळाइज'र अधगायळा होयग्या हा। काठी जैडो वारा डील बेमारी रै थपीड सू सपाई गळग्यो हा। या री ऊजळी वरू घाती अर बटी अगै ई मैली होयगी ही। मरोडदार पोतियो सिराणै कानी मसळीज्योडो विखरिया पडियो हो। गळ वाळी मणिया री माळा माच रै पाग म टिरै ही अर वा रै मुडै सू पडती लाळा उणवर सू होय'र नीचै पडै ही। आरया माथै आयोडा गीड वार मुडै माथै उग्याड गत म रळ मिळै हा। पट आफरै सू तणमेल्यो हो अर व रय रय'र टसका करै हा।

हीरा महाराज नैं दरणण रै तुरत फुरत बाद प्रभु री घरवाळी घटोरीभर पाणी ऊनो कर'र दोय-तीनक गोळिया घाळ'र माडाणी पाय दीवी ही।

दवाई देवण रै पैली वठ ऊभी दोय-तीनेक डोकरिया गाती पड़ती थकी झाड़ झपाट ई करी ही कै हवा री ई बाण कुरब हावे है। उणन तो गागणी ई पड़सी। हवा अर दवा रा वठै मेळ? दवा सू जे हवा भिड़जगी तो थारी घर गुवाड़ी सू उणरो प्रकोप गाव र घर घर ताईं वधजासी। अर यू जद ई होयो है या लोगा रा फीकरा ई विगेरिया है।

प्रमुनारायण अेकर तो चायो कै आनै म्याना देय'र बताय देवै' कै अ आपा रा वणायोडा ई गपोडा है। पण वो मूण धार्‌योडो ई रैया अर नी अेज रै बाद यै इ ठाडी मीठी होयगी ही।

पण उणरी मा बोली ही—'आ री नो बेटा, इत्तीई उमर है। आ री तो आ जीळ है र। आ रा भाई, मावा दादा, परदादा अर बाप ई साठै रै बार को निकळया हा नी। अबै दवाई दवणी अकारथ है, बेटा।

गाळ्या रै बाद वानै गुळकोज ई पाया हो अर नी-नी करता ई री दूजी दवाइया ई देय दीवी ही।

जेज हाया हीरा महाराज र अगा म की हरक्त होवण ढूकगी ही। लोग समझण लागग्या हा कै हीरा महाराज रो हसलो तडफ रै। वा री विगडती लागती दसा पमुनारायण री मा स सही को जा रैई ही नी, हिम्मत बटोर र हीरा महाराज र कन जाय'र कवण लागी ही—अबै थारो हसो छूट तो सो छूटतो। अबै किणी म जी नी घालणो। अेक दिन ता सैगा नै ई जावणो है। माटी तो माटी म ई मिळणी है वाई बात मन म मती ले जायजो है जिको ई बोलो कोई दान पुन करणो होव गाया कुत्ता न की न्हाकणो न्हवणा होवै बैं सुवासणिया नै की देणो-दूणो होवै।

हीरा महाराज रा बोल कठै सू उघडता, वै नी बोल सकिया ता वा बोलती इजगी ही—थे कठै सू बोलो, उमर भर काठो जीव रैयो है नी थारा म्है थान आछी तरिया जाणू हू म्है ई बोलू हू—थार लारै गाया न चौपटै रो पूरो पचासो चराऊला काल ई वाडी मे चोर्‌पं र बीच न्हखवावणो सरू कर देवूला चिडी कमेडा खातर जठ ताइ म्हैं जीवूला दाणा पाणी मे कमी को राखूला नी। इत्तो ई नी, थार बारै इ दिन सगत करवाय'र साद-बामणा नै जीमावूला। अर पछ बाल सिर सू लगाय र नख ताइ ढकूला। जिको थार आगोतर मे आगै त्यार लाधला। थे सोच मत करो थारो ओ प्रभुडो थार लारै बारै दिन करमी नी तो म्हैं करवा सू गगाजळ। थारा अ चेला चाटी करमी। पूरै गाव न सिगरी न्यूत जीमावूला।' वा रै माचै रै सिराथिय बैठी बैठी प्रभु री मा बोलती इज गयी ही—'अव थे जीव मत उळझावो। थारा तडपणो म्है को सह सका नी। इणर अलावा मन मे फरू इ की होव तो बतावो।'

इणरै विचाळै हीरा महाराज रा चेला-चाटी इ आपर गरुजी र लार दान पुन करण री बोलवा कर काढ़ी ही।

ओ सै देख्या सुणिया प्रभु गळ ताइ भर आयो हा। छेवट भीमर र भाभराभूत

होय'र बोल्यो हो—'था सगळाई भेळा होय'र नी-नी जैडी वाता कर रैया हो। अै नी मरता होई ताई था आनै माडाणी मार काढो।'

इण पर उणरी मा ई बोली ही—'देख बेटा म्हैं तो आ रै साग आखी उमर काढी है। म्हैं जाणू हू आनै।

गुवाडी मे ऊभ नीमडै री छीया ढळण मे ही। सगळा ई इचरज मे हा। दवाइया आपरो कार जतावण ढूकगी ही। हीरा महाराज न डकारा पर डकारा आय रैई ही। वारी मायली फुरफुरी जागी। अर डील हरकत मे आयग्यो हो।

भेळा होयोडा सगळा ई लाग बाको फाड फाड'र हीरा महाराज अर प्रभु कानी भाळ हा। अर हीरा महाराज आफळ र पसवाडो फोरता थका बोल्या हा—'बेटा, अबै म्हन सफाखानै ले चाल म्हनै सफाखान ले चाल।' ▢

उळटी डाडी

रामकुमार ओझा

कैई दिना बाद अेक अखबार हाथ लाग्यो हो। बलवि दरसिंघ उर्फ बल्ला री निजर बैंगी बगी अखबार री ओळियां माथ भाजण लागी। छैंवट अेक खबर माथ आ टबी।

खबर र च्यारू मेर काळो हासियो हो। विचाळ उण री फोटू छपी ही। खबर वाच र उण रो मन कियो, अखबार री पुरजी पुरजी कर हवा मे उडाय दे। फरू इरादो बदळियो। क्यू नी इण फोटू र विचाळै ई उतरा बेजका वणा दे, जितरा बम र धमीड सू उडता रागे अर सीसे रा टुकडा सा तो री छाती माय घाल्या है।

पण वो न तो अखबार रो पुरजा पुरजो कर पाया, नी ई फोटू री छाती माय घाव घात सकियो। बस, कागद न मोड र आप री गोजी मे घात लियो।

वो अब अेड चोरायँ माथ ऊभो हो, जठै सू अेक चौडी सडक वी स्हर कानी जावती ही, जठै उण बम फाडियो हो। अर जठै सात्तो अबार अस्पताल माय दाखल ही। दूजै वच्च रस्तै चाल्तो तो आप रै गाव पूग जावतो। पण गाव री काकड मील हो चुकी ही। चौफेर पुलिस रो जावतो, पोहरो हो। तीजी पगडाडी पाछी उण जुवार गुरगण्डा अर ईख रै खेता कानी पुगावती ही जठै उण जाडी जुवार रैं ओटै तीन दिन रात बदीत किया हा। अर चौथी साम्डी सडक बैन अमनकौर रैं सासर री ही जठ सू वो अबार इज पाछो आया है।

लुकतो छिपतो निठासीक अमनकौर रै दरुजै ढुको हो। बीर रैं पगा रा धमीड पिछाण, अमनकौर पाळ माथै इज आ ऊभी अर दुपट्टो गळ मे घात र बोली।

'वीरा थू ऊभा-पगा पाछो सिधाज्या। थार बनोई री डूटी रणीज इलाक म है। यो अडा जनस मिनख है क वतन टाळ दूजो रस्तो नी माण। फमादिया अर देस र दरिया स वी री हमदरदी कोयनी। था दोयू जै आपसरो मे भिडिया तो म्हारो सुहाग उजडैला का वीर रो लास पडसी।

रयँ सू कवू वीरा। थू गुरदुवार री डाडी पकड। वाहे गुरु री देवळी माथ सिर झुका। साच मन सू अरदास कर पूछ। अब थन काइ करणो। साचो गुर थन टावी टौड पूगतो करसी।'

पण ग्रथी नी तो फाटक खोल्या अर नी ई वो गारू अरदास की। आतर सू

वोल्या। 'गुर रो घर दहसत पसन्दा री न्रगाह नी वण पाव। जिण र बहकाये कियो वा रै कनै जा अर जे आप रै मत्ते कियो ता ओरूकर देख। जै पछतावो हावै तो कानून री सरण मे जा। गुनाह कियो तो दण्ड भुगत पाक मन होय न गुरपरसाद छक्ज। इमरत छकिया आच्छो मिनख वण जावला।'

वल्लो मन ई मन सोचै। 'सिख रै वेटे रो तो जलम ई गुर परसाद रूप मे होवै है। गुर नाव रो जाप करणा इमरत छक्णो होव है। गुर री सिक्छा (शिक्षा) तो घणै री वरजणा करी ही। पण वर रो जैहर पावणिया हाथा मजहवी जनून रा घूटिया उण री घेन्की उतार दीया हो। उण हाथा नै पण वो कदै मी देख पायो हा। जिण हाथा उण र हाथ म बम पकडाया हो, उण रो मुडो पडदै री आट मे रैयो। आप र भायप वलिया री वी नै कोई ओळखाण नी ही। वो पगत आप रै उण बालगोठियै नै पिछाणतो हो, निण उणनै जनूनी परसादिया रै डरे पुगायो हा। डरे म फगत भीता वोलती ही। मिनख दीठ हैठळ नी आयो। वा इमरत रै नाव नी जाण काइ छकाया क उण रा माथा गिरण गेहर चढग्यो। भीता वारबार वालै।

'अेक यारी कौम री पिछाण सारू लडो। अेक मुदमुख्त्यार मुलक पावण सारू लडा। वा र मागै मिल र ऊडा जिको विना लडै अेक मादर मुलक (मायड भोम) वणाई है। अकल अर हथियार वा रा हौसलो थारो।'

मरू मे उण रो भेजो जवाव देयग्यो। 'कौम री पिछाण तो वाहै गुर रा दीधा पाच निसाण। केश, कन्घा, कच्छा कडा, किरपाण है। दसम गुरु हिन्दू हिन्दवाण री रिछपाळ करण सारू अे निसाण धारण किया, अणीज हिन्दू हिन्दवाणै रै खिलाफ लडण म काइ तुक?

'अर जिका यारा देस वणाया व कडा सोरा सुक्वी। अेक नारकी अेकळहत्थी हकुमत रै इलावा काई पाया। मुलक जिको वण्यो उण रा वासिन्दा छान रोवै तो छाणग (छाण री अगन) माय उघाडै पगा चलाया जाव अर चौडै रोवणिया री वकत् माय कारडा सडकाइज। रोवणो कुफ्र, फरियाद करणियो काफर। तूवै मुलक रो अेक इज धरम। मवूरी करो अर मजबूरी मे हासता रैवो।

पण भीता माथ उकेरीज्योडा वै आखर माले री इणी ज्यू तीग्गा हा। वा वन्धिन्दरसिंघ रै काळज म गहरो घाव घात दीयो। अर उणा रै मगज म अधार पग रा अधारो भरीजग्यो।

जिण रै सागै पीढिया रो सीर हो। हेत हिवळास चानता आयो हो। जिण रो लोही अेक हो। जिका कदै उण नै वातमणकारो नी दीधो। सूई रा घाव नी वीधा। परचार री झाड मे वी न लाग्यो जाण वी रा पाडोसिया वी न घायल कियो है।

घायल जिनावर आधै जोर सू हमलो कर। अठारहा वरस रो निछोर छोरो वेत्रात री वात नागो आरण झोटियै री गळाई मारकणो होयग्यो।

छेरट उण हनप उठायो अर अणजाण हाथा उण न देस री धरती री कावड र परल पास री धरती माथै उतार दीधो। इण वाट आई धरती सू खमीर जैडी वद

उळटी डाडी

रामकुमार ओझा

कैई दिना बाद अेक अखबार हाथ लाग्यो हो। बलविन्दरसिंघ उर्फ बल्ला री निजर घैंगी बगी अखबार री ओळिया माथ भाजण लागी। छेवट अेक खबर माथ आ ढबी।

खबर र च्यारू मेर काळो हासियो हो। बिचाळै उण री फोटू छपी ही। खबर बाच र उण रो मन कियो, अखबार री पुरजी पुरजी कर हवा म उडाय दे। फेर इरादो बदळियो। क्यू नी इण फाटू र बिचाळै ई उतरा बेजका बणा दे, जितरा बम र घमीड सू उडता रागे अर मीसे रा टुकडा सान्तो री छाती माय घाल्या है।

पण बा न तो अखबार रो पुरजो पुरजो कर पाया, नी ई फोटू री छाती माय घाव घात सकिया। बस, कागद न मोड'र आप री गोजी म घात लियो।

बो अबै जेड चोरायै माथ ऊभो हो जठै सू अेक चौडी सडक बी शहर कानी जावती ही, जठै उण बम फोडियो हो। अर जठै सान्तो अबार अस्पताल माय दाखल ही। दूजै कच्च रस्तै चालतो तो आप रै गाव पूग जावतो। पण गाव री फाकड मील हो चुकी ही। चौफेर पुलिस रो जाबतो, पोहरो हो। तीजी पगडाडी पाछी उण जुवार, गुरगण्डा अर ईख र खेता कानी पुगावती ही जठ उण जाडी जुवार रै ओटै तीन दिन रात बदीत किया हा। अर चौथी साकडी सडक बन अमनकौर रै सासर री ही जठ सू बो अबार इज पाछो आया है।

लुकतो छिपतो निठासीक अमनकौर रै दरूजै ढुको हो। बीर रै पगा रा घमीड पिछाण, अमनकौर पाळ माथ इज आ ऊभी अर दुपट्टो गळ मे घात र बोली।

'वीरा थू ऊभा-पगा पाछो सिधाज्या। थार बनोई री डूटी इणीज इलाक म है। बो अटो अनेस मिनख है कै वतन टाळ दूजो रस्तो नी माण। फसादिया अर देस र दरिया सू बी री हमदरदी कोयनी। था दोयू जे आपसरी मे भिडिया तो म्हारो सुहाग उजडैला का वीर री लास पडसी।'

दयै सू कवू वीरा। थू गुरदुवारे रो डाडो पकड। वाहे गुरु री देवळी माथ सिर झुका। साच मन सू अरदास कर पूछ। अब थनै काइ करणो। साचो गुर थन ठावी ठौड पूगतो करसी।'

पण ग्रयो नी ता फाटक खोल्यो अर नी ई वो मारू अरदास करी। आतर सू ई

वाल्यो। 'गुर रो घर दहसत पसन्दा री दरगाह नी वण पावै। जिण रै वहकाये कियो वा रै कनै जा अर जे आप रै मत्ते कियो तो औरू कर देस। जै पछतावो हावै तो कानून री सरण म जा। गुनाह कियो तो दण्ड भुगत पाक मन होय न गुरपरसाद छरज। इमरत छकिया आच्छा मिनख वण जावला।

वल्लो मन ई मन मोर्यै। 'सिख रै बेटे रो तो जलम ई गुर परसाद रूप म होवै है। गुर नाव रो जाप करणो इमरत छकणा हावै है। गुर री सिक्छा (शिक्षा) तो घणै री वरजणा करी ही। पण वर रो जट्ट पावणिया हाथा मजहबी जनून रो घटियो उण री घेरको उतार लीया हो। उण हाथा नै पण वा कदै नी देख पायो हा। जिण हाथा उण रै हाथ म बम पकडाया हा, उण रा मुडा पडदै री आट मे रैयो। आप र भायप वैल्यिा रा वी न काई आळखाण नी ही। वो फगत आप रै उण वानगोठियै नै पिछाणतो हा जिण उणनै जनूनी कमादिया रै डर पुगाया हा। डर मे फगत भीता वालती ही। मिनख दीठ हैठळ नी आया। वा इमरत रै नाव नी जाणै काइ छकाया क उण रा माथो गिरण गहर चढग्या। भीता वारवार वालै।

'अेक यारी कौम री पिछाण सारू लडो। अेक खुदमुख्त्यार मुलक पावण सारू लडो। वा र सागै मिल र लडा जिको विना लड अेक मादरै मुलक (मायड भोम) वणाई है। अकल अर हथियार वा रा हौसलो थारो।'

मन मे उण रो भेजो जवाव देयग्या। 'कौम री पिछाण तो वाहे गुरु रा दीघा पाच निसाण। केश, कघा, कच्छा, कडा, किरपाण है। दसम गुरु हिन्दू हिन्दवाणै री रिछपाळ करण सारू अे निसाण धारण किया उणीन हिन्दू हिन्दवाणै रै खिलाफ लडण म काइ तुक?'

'अर जिका न्यारो देस वणायो वै कैडा सोरा सुखी। अेक नारकी अेकळहत्थी हकुमत रै इलावा काई पाया। मुलक जिको वण्या उण रा वासिन्दा छान रोवै तो छाणग (छाणै री अगन) माथ उघाडै पगा चलाया जावै अर चौड रोवणिया री कडतू माथ कारडा सडकाइज। रोवणो कुफ, फरियाद करणियो काफर। खूब मुलक रो अेक इज धरम। सबूरी करा अर मजबूरी मे हासता रैवो।

पण भीता माथ उकेरीज्याडा वै आखर भाले री इणी ज्यू तीखा हा। वा दलविन्दरसिंघ रै काळज म मेहरो घाव घात दीया। अर उणा रै मगज म अधार पख रा अधारो भरीजग्या।

जिण र साग पीढ़िया रो सीर हो। हेत हिंवळास चालता आया हो। जिण रो लोही अेक हो। जिका कदै उण न बातभणकारो नी दीघो। सूई रो घाव नी वीधो। परवार री झाक म वी न लाग्यो जाण वी रा पाटोसिया वी न घायल कियो है।

घायल जिनावर आधै जोर सू हमलो कर। अठारहा वरस रो निछोर छोरो वेवात री वात लागो आरण झोटिय री मळाई मारकणो होयग्यो।

छेवट उण हरफ उठायो अर अणजाण हाथा उण न देस री धरती री कावड र परन पाम री धरती माथ उतार दीधो। इण बाट आई धरती सू स्मीर जैडी वद

वोई आय रैई ही। जद क उण री आप री धरती री माटा सू अेक सौंधी सुगवोइ उठती ही। जिकी धरती माथ वा उनारीज्यो उठ हथियारा री फसल ऊगी ही, जद क उण रै खेता माय अमन री हरियळ फसल ऊगती ही। उण र आप रै दरियावा म धवळा कमत मिलता अर अठ नाही रा बुडबुडिया उठै।

उण नै पण बतायोग्या—सुसवोई रै दरियाव लग पूगण सू पली वदळीज्योड पाणी री धार पार करणी पडै है। अर पडद रै पाछै सू अणजाण्या हाथा उण र हाय म टाइम वम पकडावत, निसाणो वताया। लक्ष्य री पिछाण कराई। लक्ष्य! जिको कोई लक्ष्य नी हो। रस्तै चालते मिनख नै निरी दहसत फलावण सारू मारणो कोई लक्ष्य हाव? वी री विण रस्त चालन सू दुसमणाई ही? जर, जोरू, जमीन किणी सारू तो वी री झोड झपाड नी हो। अर वल्ला आ इज वद जाणै हो वै अेन वगत पर मा'तो उणीज मारग सू गुजरली।

धमीड उपडीज्यो। झाळ पूळो उठयो-झाखर री गळाई मिनख अगन री झाळिया माय भूजीजग्यो। मास रा लोथडा पुरजी पुरजी उडिया। च्यारू कानी कूकणा माचग्या। भाजम भाज मे च्यार कूचीदडा मिनख बल्ल न अेक जीप मे बठाण अेक सुन मे अेकलो छोड भाज्या। अबार कौम री तो काई उण री आप री पिछाण इज उण मारू जाखमी होयगी।

इसडी अबखी वळा मे उण न खयाल आयो। 'ओ कुकाम उण क्यू कियो? किण र वास्तै कियो? किण र कैय कियो? अबै कठ जावै? मुडै माथ तो अडी कुछाप लागगी कै कुज कोई पिछाण जाव।

पुलिस हरकत मे आ चुकी होवला। जिण रै साथ रो जेसास हो, वै कूडपयी निसरग्या। अब अठ ऊभा रवणै म काइ मार?

साम्ही अेक वोड माथ लिखीज्याडो हो। 'गगानगर जिलो आप रा सुवागत कर है। अबखी वैळा म इज उणनै हासी आई। तो अबार इज वी रो सुवागत करणिया मौजूद है। काळूठै मुडवाळा रो सुवागत? तो भामला तो पजाव सू इ बार छोडग्या। पण किस्मत अजार साथ नी छोडयो है। अठै नेडै इज (ढाणी) 22 एन टी मे उण रो नानेरा है।

वो भाज छूटो। पण फेर आ सोच'र क भाजणियो मिनख तो सुबै म जरूर पकडयो जावै वा हाळ हाळ चालण लाग्यो। जाण कोई बीसक कास पण्ड चारयो थाकल मिनख जा रैयो होव। मुड माथै लापरवाही रो भाव, आख्या अर कान पण सावचेत।

चक रै गोरम आया तो भूसता कुतडा घेर लीवो। कुतडा री डार माय अुण रै नानै रा पाळेत जरमणिया अर जाळमडो इज हो। पैली उणन देख'र नटदा करता अर थाज वटका सू खावणा चावै है। कुतडा री अ तस दीठ माडै मानस री ओळखाण कर लेवै। वल रै कनै लाठी तकात कायनी ही। कारबाइन कारतूस अर मगजीन

ता जिण रा हा, व ले भाज्या। किरपाण गुर री निसाण। कुतडा माथै कीकर वावै। वो भाठा मारतो, कुतडा न भजावतो थको नानै र माड ज्ञा ढुकिया। आडा गडकाया। नान विवाड खोल्यो। वल्ला भीतर दाखल हायो अर झट करतै विवाड वद कर लिया। अर आगळ लगाय दी।

बूढो सरदार तजरबैकार। वणत रा वायरो जिको वाज रयो है वी रै रुख नै पिछाणै। समझग्या छोरो क्यू ई कौतक कर आयो है। बल्लो घवरीज्योडो हो अर मुड माथै आव कायनी ही। नानो वी नै भीतर नी ले जाय ई दरुजै री पूळा री काटडी मे लिरायग्या अर बोल्यो। 'यू ई वगत री हवा री चपट मे आग्या दीस है।

बल्लो री अडी मानसिकता नी ही कै वो कूड कपट री भासा मे बोल पावतो। उण सगळी हकीगत ज्यू री त्यू माड वताई तो ई बूढो सरदार थिरचक रयो अर पूळा री चगेत न उसेरतो थको बोल्यो। 'पुतरा, जिकै घर म आवतै ही तरो मुडो धीव सक्कर सू भरीजतो उण मुडै नै थू पूळा म लुका र बठज्या। अबख वगत मे भीता इज वरी हाय जाव है। घर वारै रो काई नी जाण क थू आयो है, इणी मे भलाई है।

अर बूढ बल्लै माथै पूळा री चगेत ज्यू री त्यू जचाय दी। अर खुद बारणै साम्ही माची ढाळ इया बैठग्यो जिया सदा बैठतो हो। पण मन म दकचुक।

चाद, सितारा, सूरज पौन-परकिरति रस ज्य रा त्यू मिनख नै पण काइ होयग्यो कै आप री बावडिया रै आप ई बटका बोडण लागग्या। आजकाल इण ढाणिया रा ई मूडो हवाल। कद किणी रै कुटळ मे मिलटरी रा जीव तो बम लाद जाव हे। कदै फरार थतली पकडीजै है। गैर लायस सी हथियारा हत्यारा, कानड पार स आवणिया तस्करिया, भेदिया, भगोडा री सरण-सथली वणगी आ धरम धरती।

दैम रै सीवाडै माथ आ गगानगर री सीली सीचित धरती। चक गाव, ढाणिया। हिन्दू सिखा री रळवा वस्तिया। मा सनातनी, बाप विश्नाई, बटो पण निहग अकाळी सिख। हिन्दुआणी मा गुरदुवार जावती। गुर किरपा सू बेटो पावती। केस बन्धावती, किरपाण बाधती अर बेट नै गुरदवार रा सेवादार वणाय देवती। सिख जुवक होळी रा चग बजावता, जट भगडो नावता। हिन्दू सिख बना सू रखडी बघावता अर सिख भाई हिन्दू बैन र भायरो भरण आवता।

मान, क्रमधारी मे कोई भेद भावना कायनी ही। 'अेक जोत रा सगा बन्दा। कौन बुरा को चगा।' गुर री पादसाही। परमसर रा बन्दा। रसै रळमिळ रैवता अर साझा गुर परव नै तीज त्यौहार मनावता। पण अबार मना म तीणा (बारीक बेजका) पडग्या।

अठ र जाया जलम्या मिनखा र तो आज इज क्षोयण री भावना कोनी। बारै रा लोग आव अर कुबद किरमाणी रा बीज ताप जाव। अर उण रा खारा फळ अठै र लोगा न खावणा पड रया है। अेक दूजे बिचाळै फाटी घातणिया भाज जाव अर पुलिस री कारवाही रा सिकार निरन्तास मिनख होव। भला भला मिनखा री गिनरत फसादिया म होवण लागगी।

चौबीस घण्टं लग वल्लो पूळा म लुक बैठ रैयो । आगली सुब नाना बोल्या । '—मीवाडै रा इण गाव-ढाणिया रै वासिन्दा रा सिनाख्ती वाड वणाया है । मेहमान आव तो पुलिस म रपट दरज करावणी पड है । रात रा कर्फ्यू अर दिन री निगरानी री गस्त हावै है । सीमा सुरक्षा दल रै जवाना रा पोट वाजता ई रवै है । आछी वात तो आ ।

बूढो कय नी पायो क थू आपै आप नै पुलिस रै हवाले कर दे । उण घर रा दूजा लोगा नै सता वानो टौर वहीर किया अर वल्लै कानी मवालिया निजर नाखी । थार ? पुतरा कठ जावणो चावै ह ?

अेकर तो उणी स्हैर मे जावणा चावू हू ।'

मान्ता सू मिलण रो मन करै है ?'

वल्लो हाकधाक । नाने कीकर जाणी ।

बूढळै र मुड उदास सी मुळक आयगी । 'सगली हकीकत अखबारा मे छप चुकी । सान्ता जिको कै घायल होई है, उण सागै तेरो प्रेम परसग चालतो पुलस जाइज जाण चुकी है । थार जवान रो दिल तोडणा ठीक कोनी । म्हैं थनै स्हैर री सडक माथ छोड आवूला । स्यात मान्ती री हालत देख नै थन सद्बुधि आ जाव ।'

बूढै टैक्टर री टाली मे रुड र वारा हैठै वल्लै न लुकायो अर स्हैर री सडक माथै छोडतो थको वाल्यो । 'जा पुतरा, रब तैनू सद्मति देवै ।

तद ई साम्ही सू दो जीपा आवती दीसी । 'वेगा सो जुवार म जाय न लुक जा ।' बूढ आ कैवत ट्रैक्टर टौर वहीर कियो । अर तद सू वल्लो तीन दिन रात जुवार म लुक रैयो ।

नानै रो दीयो काळा कामळ डील पर लपेट परी वल्लो चाराया छोड स्हैर कानी वहीर हाया । ठण्डी पून रा फटकारा । ओस अर धवर बीच-बीच म मेह झड । अडै अवरै मौसम म स्हैर सुनैड रो डरो । मिनख री नाव नी । हा, जठै कठ पुलसिया जाटै म बैठ परी धुणी ताप रैया । काळी कामळ र कारण वल्लो धवर मे अेकमेक होय रैयो अर उणीज चाराय माथै पूगो जठ क उण धमीड कीयो हो । बी न वेरा कोनी हो क सान्ती किस्य अस्पताल म ह । पूछै तो की नै । अर पूछताछ मे खतरो ई ।

कठै जावै ? किण नै पूछ ? हरेक अस्पताल मे ढूढ तो पकडीज जाव । अचाणचक वी न आप र उण बोलगाठियै री याद आई, जिण वी न उळटी डाडी री राह घालयो हो । वो उण र घरा पूगो तो कुवाणो मच्योडो हो । उण पडी म गस्ती-दल रै सागै भिडन्त म लारली रात मारीजग्यो ।

वल्लो ऊन-पगा मुडियो । भीता माथै उण री फोटू समत इस्तिहार चैपीज्योडा । वी न ओझ याद आई वै अठार वा इस्तिहारी मुलजम है अर वा दहळग्या ।

जगतारसिंघ ! उल्टी डाडी माथ चालण री उणाँ त्यारी करत देश जगतारसिंघ वीं न चेतावणी दी हो ।

'सुण मितरा । इण अधारी गळिया म बडण रा तो रस्ता है निकलण री पण काइ राह कायनी । जिका इण म वडे, अधार म घाटोज र मर जावै है ।

पण बल्लें नें तद तकात अधारै उजाळ री पिछाण कोनी ही । जगतार नें उण कौम रा गद्दार करार दीधा अर मारकणा मानसा रो गाधोद बणग्या । जिण रा सीग या अमीर तक नीं देख पाया । मरता पण काइ करता । वो जगतार रै दरूजै आ ऊभो ।

जगतार वी नैं दरूजै सू लौटाया कोनी । हाल हवीकत इ कोनी पूछी । नी सवाल किया, नी उपदस दिया । गहज भाय सू भीतर लिरा लयग्या । जद बल्ला सुणता चुकग्या ता जगतार बोल्यो । सुक्र है गुर महाराज रै परताप सू कदै कदै गळत वाना ई मिनख री मददगार बण जावै है ।'

बल्ला समझ्या कोनी । बस, वाको फाड वो कानी दखता रैया ।

'सहर म कर्फ्यू नाफिज (लागू) है । दगै रा हालात है । थू पुलिस री निजर अर दगाइया री छुरी री धार सू बच'र आयग्या, सुक्र है ।

'पण कर्फ्यू क्यू ?

जगतार कोई पडूत्तर नी द बस, हासता रैयो । उण री हासी चोड माड बताई क कर्फ्यू ता उण दिन सूं ई नाफिज है, जिण दिन उण बम फाडिया हा ।

जगतार थिरचक हाय बैठया अर ठेठाव सू बात करण लागग्या ।

बल्लो सोच रैयो । 'आ कैडा मिनख । जाणै है केव लुगार कतली न आप रै घर म पनाह दी है अर पुलस सू डरै काय नी । म्हनै पूछ कोनी के म्हैं औ कुकाम कियो है क मूठमूट ई म्हारै खिलाफ इस्तिहार छपाइजग्या ।

छेवट बल्ला इज बोल्या । 'जगतार थारी बरजणा रै बावजूद म्है जो इ कियो, वी रा जवाब थू म्हासू माग्या क्यू नी ? अबार म्हारी जरूरत काइ है आ बूझी क्यू नी ।'

'बूझणो काइ । अबार थन लुक'र जीवणा है जद तकात राख पावूला राखूला । ज थू थारा पुराणा भायला स मिलणो चाव तो पुगावण री तजवीज करूला । और थू काइ चावै है जिको बताय दे ।'

थू अेक बार म्हन साथी रै कन्न पुगाय दे । फेरू थू जिको चावला वा ई म्है करूला ।'

जगतार वी रो हुलिया तबदील कियो, गाभा बदळाया अर जियान तियान साथी स मिलाया । साथी ठीक हवाल हो । घाव कमती पडिया हा, डरपी घणी ही ।

वल्ले नै दख र तो चीराळी मार भाजी । 'थू हित्यारा है । म्हान मारणो चाव । ल मार । अर वा वावळी ज्यू उण आग ऊभी होयगी । वल्ल रा मन किया । धरती फाट जाव अर वी नै निगळ जाव ।

सा तो बाल्ती रई । 'थू कुण सा पुरसारथ कियो । कुण सो पुन कमाया । ज मिनख मारया ई सवाब मिल, (मुक्ति होव) तो म्हान मार । थू कवतो सातो थू म्हारी साचली साती है तो काइ आ इ है थारी साती ?'

जगतार वी नै सात कीवी ता वा मुडो ढाक र रोवण लागगी । जगतार बल्ल नै बार लिरा लाया ।

बोल मिल लियो साती सू ?'

'म्ह थार साग हू ।'

म्हार साग ? म्है ता अेक जग लड रैयो हू । थू म्हारो साथ दे सकैला ?'

अबै जग जुद्ध र अलावै म्हारी जिन्दगी रो मकसद ई काइ रयग्यो है ।'

पण म्हारो जग आटी टाटी पगडाण्डी भाजतै नी लडियो जावै । म्हार साग ता सीधी सडक भाजणो है । सोच देख । आटी बाकी पगडाण्डी तो किणी हिफाजत री जगया पुगा ई दे, पण सीधी सडक भाजणियै नै कोई आ पकडै ।

पकडण धकडण री म्हन फिकर कोनी । थनै जे हथियारा री जरूरत होव तो, उण ठौड पुगाय दू जठ हथियारा रा ढिगला लाग्योडा है । अर जे लाठी, छुरी सू लडणो है तो वा था सप्लाई कराला ।'

नही । म्हारी जग हथियारा सू नी लडी जावै । फसादिया रो साथ देवणो म्हारो काम कोनी । म्हारो आन रो मिसन है । अखलाक (नैतिकता), इसानियत अर ईमान जिका म्हा कन है, वा इज काफी सबळो हथियार है । थू चाल दख । अबार ई दुनिया म नफरत ममती अर प्रेम घणैरो है । हथियार दूबळा अर मिनख सबळो है । जरूरत पण मिनख री सवदना न जगावण री है । आम सहराती नी लडै है । की स्वारथ लाग्या मिनख लडावै है अर उण लडावणिया नै, न किणी मुलक री चायना है न मजहब री । आप री रोट्या हेठै खीरा दवणा उण रो मजहब है, अर वा रो तीर जठ तवात चालै उठै ताई उण रो मुलक है ।

थोडी ताळ बाद अेक मियाद सारू कर्फ्यू उठाइज्यो । वो ई चारायो अर वो ई मिनखा रो रलो । पण अबार वै साग तरकारी रा खरीददार नी हा । वै जगतार र मिसन रा मिनख हा । मिनख लुगाई, टाबर, बूढा, जुवान । वड रा वड भळा होया । हिन्दू, सिख, मुसलमान । हकीकत मे वा अेक भीड नी, समूचो हिन्दुस्तान हो ।

वल्ला भीत ज्यू ऊभो । जगतार बोल रैया । लाग सुण रैया । न कोई मच न सभा सम्मेलन । रात चालता मिनख सुणण लागग्या । जगतार चाल्या तो लोग चालण लागग्या । जगतार रुक्या ता रुकग्या । जगतार बताई ज्यू बोल रैया हा । जगतार बोल

रया। 'अमना अमन।' अर लाग वोल रैया 'ओम रा ता। 'अपनी धरती जाडती। फिरकापरस्ती तोडती।'

लागा रा समवेत सुर सुणीज्या ता घरा रा दरजा खुलग्या। दूकाना रा सटर उठग्या। ता कर्फ्यू इज उठाइजग्या। रस्ता, ‍ारस्ता, चोराया सडका आपमरी म गुधगी। अेक दूजे रै गळ मिली ता वरला गदगदीजतो सीक वात्या।

'तो म्ह अवार चालू।'

'अवार काई विचार है ?'

'वदी री राह चाल दरो। काइ मिल्यो ? वारूद सू मुडा काळा करण रै सिवाय। सूप, म्हारै डील सू वारूद री गिंध आवै है। दिमाग म हथियारा री चगत चिणिजी है। नफरत रा भाला म्हार हीयै म छवला कर छोडिया है। म्ह पराछित री डाडी चाल'र मरहम पट्टी सार जावूला। पण पैली किये रा दण्ड भुगता र फेरू सूद्धताइ रै गेनै जा पावूला फेरू जे मन रा मेल धुपीजग्यो तो था कनै आवूला।'

जगतार फेरू कोई सवाल नी कियो। वस इतरो कैया। 'सद्गुरु थन रस्ता दिखावता रवैला, जे जोत मे जात मिलावण री कासिम करसी। सव रै सिवाय औरू का अमान नी करमी। म्हैं था री पेरवी नी कर ला। पण दुआ जरूर करतो रैवूला। परमेसर कर, जद थू पाछो वावडै तो अेक गुलिस्ता वण्यै मुलक म लौट र आवै। जठ अेक फूल दूजै री खुसबोई सू सनीज्योडो होवै। अेक रूख री डाळी दूजी सू गुथीज्योडी हावै। □

धनवीरो

करणीदान बारहठ

धनवीरो म्हारै घर म बड्या ता म्ह रासा उदास हा। उण ता आवता ही टोक्यो—'काइ बात है किया मुडा लटकाया बठया हा, खैर तो है ?

—'अरे भाई, काइ बताऊँ ? आज तो भीत खाटी होई।' म्है कैया।

—'किया ?' उण पूछ्या।

वो साम्है पडी खाली कुरसी पर बैठग्या।

म्है बताया—'का' बात बताऊ ? बात न बात रा नाम। थारला पाडौनी है नी चिमनियो, म्हार मळै पडग्यो। म्हारा माजनो ले लियो। डाग ता मारी कोनी, बाकी की कोर कसर राखी नी।

— कोई बात ता होवै ?' उण कया।

— बात का' बताऊ थू काइ समझ अर के वो समझ। म्हारी एक कहाणी म वीरो नाम हा, वो ता पल्डो कोनी, किण ही बता दिया। फेर तो बस, आव देख्यो नी ताव। सीधा मळै आयो खावण कुतिय री तरिया, म्हारै माथ बरस पडयो। म्हारा तो खेरो छुडावणा ओखा हायग्या।

—'बस, इत्ती सी बात है। वा तो मुसळ है, बावळी टाट है। सफा आड़ है, किण ही लगा दियो लागग्यो। म्ह थानै कित्ती बार कह दी, थे म्हारी कहाणी लिखो, थारी पोथी म म्हारा नाम छपावो, फेर देखो म्है थारा कित्ता कोड करू, थारा कित्ता गीत गाऊ।'

—'म्हार तो लारला नाम ही गळ मे आरैया है। थू और कहाणी लिखावै।'

म्हारी कहाणी क्यू नी लिखो, देखो, थानै केरो है। म्हार सात टीगरया हायगी एक ही छारो कोनी। म्है दिन रात कमाई करू, म्हारी पार पड कोनी। एक ऊट है, एक गाडो है। बीस बीघा जमीन है जिकी बारो कोनी दे। झाझरक उठू, आधी रात रा आऊ। कदै ऊटियो बाद म जुडज्या, कद भैंमडी मान्नी पड जावै। कदै लुगावडी र बडतू म पीड उठ जावै। कद की टीगरी र ताप सिरा हो आवै, एक जीव हू आग पीछै। म्है ता भाजतो भाजतो मेलरी बणग्यो। दस जीवा रा पेट किया भरीज। मागतोडा बावळा बणा दियो। कदै रामस्वरूप आ मरै तो कद फूसियो। बाला काइ

करू ? आ जिन्दगी ई कोई जिन्दगी है। लाग मिनखजमारै री बडाई करै, ओ ल्यो मिनखजमारो। म्हासू तो अे चिडी कागला ही चोखा जिका र आ कास तो कानी। आ कहाणी कोनी लिख सको थे ? राज न पतो तो पड कै थारी जनता कित्ती दुखी है ?

फेर वो थोडा डरघो अर उण हेलो मारयो— 'अे काकी, जे काकी।'

उण म्हारी घरवाळी नै हेला मार्यो। वीनै वो काकी कव। गाव म सगळा ही अड रिस्ता सू जुडेडा है, आ मे जात पात आडी कानी आवै।

हेला सुणता ई म्हारी घरवाळी नै आवणो ही हो।

—'अरे धनवीरिया,' — वा आवता ही बोली—'थनै म्हारी तूडी कानी लावणी ?'

—'म्है ता इण सारू ही आयो हू, लावो रिपिया तीन सौ।'

उण रकम देयदी अर तूडी सारू ताकड करी।

पण धनवीरै री वा ही कहाणी – 'म्हारै सात छोरया होयगी, आरा पेट किया भरसू, म्ह ता अबै 'अपरेसन' करास। चावै की होवो। म्है तो नाक नाक आ लिया।

म्हारै घर सू बोली— 'अपरेसन' तो रैवण दे, बीनणी नै की घाल, वा अेन सीख सी होय रई है।

—'म्ह ता घणो ही सन्तरै रो रस पाय देवू पण पावू किणर बाप रो, राबडी रोटी मिल जावै तो ई घणी है।'

— दख। धनवीरा,' म्है हसा मे बोल्यो, 'थू अपरसन मत करा, अेक मौको और दे।'

— जे छोरी हायगी ता ?' वो बोल्यो।

—'तो ब्याव म्है करसू,' म्हैं कैयो।

— तो थारो कयो मान लेसा। अबक और सही। सात री जगा आठ हो जासी।'

फेर म्हारै घर सू नाव गिणावण लागगी। फलाणिय रै सात छोर्‌या रै पछ छोरो होया, फलाणिय रै तीन छोर्‌या पर होग्यो। ढीकडै र छोरी होई ई कोनी। गाव रा पानडा खोल्या पछै काइ नीवडै। धनवीरै पइसा लिया अर चाल पडघो पण चालता चालता फेर कैयग्यो —'हा तो, म्हारी कहाणी लिखणी है। काई कैवू हू थानै भूलीज्यो मत।

म्है धनवीरै नै दखतो रैयो, दखतो रयो। धनवीरो क्यारो घडेडो है राम जाण। छाटी-सी देह डील पर हाडका ही हाडका दीसै। झीणी सी चादरडी लपटेडी जिकी मे सीधी पतळी आकतडया सी टागडया। कारी दियेडो कुडतियो जिको पर लीरालीर होयडो कामळियो। ठड तो सतावती हासी इनै। झाझरकै कित्तो रठ औसरै जिकै मे

कोई मुरदै नै इ कोनी काढ पण आ तो कोनी चूकै। चाल हो पड। नीचै जूता ता तकडा पै'र है जिका मे पामोजिया ई है, पण पट थाथा, पट ई एक कानी, साथै दस पट और जुडेडा। बडी हिम्मत है इण छोटी सी काया मे। वडी मजे री वात एक और—ओ घर सू निकळै, निकळता ही लोगा न वतळावता चालै—'अरे मालिया, काइ होरया है। ठीक ता ह, कामडा ता ठीक चालै। ओ रे खीवला, टाबर तो ठीक हायग्यो होसी। काल वीमार हो नी।' फेर आपइ हसै, अगल नै ई हमाणै री चेस्टा कर। आपरी पीड न दावणै रो ओ ई एक रस्ता हे।

एक दिन म्हे बार निकळ्या तो धनवीरो आपर ऊट न गुवाड मे बाध राख्या हो।

—'अरे, काइँ बात है, धनवीरा ?'

— बस, अबै मौत रा बुलावो आयो है।'

—क्यू भई ?'

—'ओ, थारलो भगवान् है नी, ओ ई माटोडा सू डरै है, निबळ रो बैरी है।'

—'बात तो की होसी।'

—'ऊट बादी म जुडग्यो।'

—'इलाज करा भाई।'

— हो लियो इलाज, ओ तो मरसी, पण म्हान और मारसी। काम बन्द अर खरचा सरू। मरणै म आग्या। टीका दिरा दिया, दवाया दीरादी, आ तो दिन दिन बैठ्या वग है, हाल ही कानी।

साच्याई धनवीर रा ऊट ठीक कोनी हाया। वा धनवीर रो गाडा कोनी जोडघा, वो खड्यो हो कोनी होवै। बीरा गोटा जुडग्या। पण वीरो खाणो-पीणो बन्द कोनी, विया ही खावै पीव। धनवीरा हार नै म्हारै कनै आया।

—'म्हनै बैंक सू लोन दिरादद्या, म्है और ऊट लेसू।

— आ ऊट ?'

— ओ ऊट गया काम सू। टावरा न भूखा थोडा ही मारणा है।

—'की दवा दारू दिरावता !

—'थान गी ऊट रा वरा नो इण री दवादारू रा। थे ता आक जाणा हो, अेक कलम चाइजै, एक कागज अर कलम री स्याही। कहाणी लिखा अर मौज करो। पण म्हारी कलम ता ऊट है, लान दिराओ ता एक ऊट और ले आऊ। थारी बैंक वाळा सू संदमैंद है।

म्है बी नै बैंक सू लोन दिरा दिया अर उण एक ऊट और ले लियो। गाडा फेर धामण लागग्या, घर री गाडी ई चालण लागगी।

एक दिन वो आपरै पुराणियै ऊट वन खड्या वीरा लाड करै ।

म्है देखन कयो— 'अरे, क्यारो लाड करै है, इण ता थनै धोखा दिया ।'

—'अजी इण वडी कमाई करी म्हारै । बीमारी किणरै सारै । म्है तो इणन भूखा कानी मारू, विया ही नीरा गरू विया ही पाणी पावू । म्हारा ओ ही बेटो है । म्है इणरा गुण नी भूल सकू । ओ ता ओ ही हो । म्हैं सोचू, जठ दस जीव पाळू उठ ग्यारवा ओर सही ।'

मोह माया सू वडा होव ।

ओर फेर एक दिन धनवीरै रै घर थाळी वाजी । बीर घर रा सूरज ऊग्या । उण डोळ मारू खुसिया मनाई । लाबी उदासी रा बादळ फाट्या, मीठो बायरो चालण लाग्यो । आडोस्या पाडोस्या रो ई जी सोरो होया ।

म्है नाव र दिन वीरै घरै गयो । धनवीरै रो घर काइ हो—एक छोटा सो दरवाजिया जिकै रै कीवाड कोनी । दो तार बाधेडा राखै । दरवाजिय मे एक कानी तूडो पडो । मायनै एक नाव रो आगणो । आगण रै बारै एक छोटी-सी गुवाडी जिकै मे एक कानी ऊट खड्या अर एक कानी भैंस । दो कच्चा कोठलिया जिका म तीन तीन माची मसा मावड । एक छोटी-सी रसावडी जिकी मे चूल्है रै स्हार फगत राटी वणावण वाळी बैठ सक । छाण्या सू आगणो भरेडो, एक ही सार्वं री घडेडो-सी पतळी पतळी, गोरी गोरी ।

पीढै पर धनवीर री बीनणी बैठी ही, घूघटो काढ रारया हा गोडा ताइ । पीळा ओढ रारया हो । बेटै री मा हायगी ही । पीळो ता आढणो ही हो ।

म्है वेटै र हाथ मे दस रिपिया दिया, धनवीरै ना करी, जद म्है कैया—अर हजारा सू ही लारो कानी छूटतो, अबै ता दस ही रिपिया सू लारो छूट है ।

जद धनवीरै कैयो—'अजी थारा ही दियडा दिन है ।'

धनवीरो घोत राजी हो, वीरो मुडो चैळक होरयो हो जाणै वीन एक साथ कठ सू धन मिलग्यो होवै । उण म्हारा कोड करया, चाय-पाणी री पूछी, पण म्हैं ता रामा स्यामा करन घरै आयग्यो ।

आ धरती काळ आपरी विरासत मे ल्याई है । अठ कदै कदै जमानो हाव, जमानो होवै तो अठै रै मिनखा रो रुतबो ही न्यारो हो जावै, नी ता सगळा ही फीका फीका उदास उदास ही रैवै । अठै केई साला सू एक नहर रो खाळियो आयेडो है जिको आ रो रठाण रो अधार है, नी तो अ ऊजडडा ही हा । इण खाळियै रै स्हार लोगा री मैणत मजूरी चाल जाव । कोरी बिरानी जमीन पर जि दगी गुजारै, वीरी तो माथा पच्ची सी है । बारा महीणा बादळा कानी ताकता रवै, बरस जाव तो वाह वाह, नी तो जमी नागी पडी रैव । गाव ई भूखो अर धन पसु इ भूखा ।

धनवीरो बिरानी जमीन रो धणी है, जद ही ता ऊट गाडो राखै । जमानै म ई वो ऊट गाडो कोनी छोडै ।

धनवीरै रा बारा महीणा एकसा ही वग है। जिसा दिन उगै विसो ही छिप जावै। छोरचा जुवान हावण लाग रैई ही, पर दो साल समै रा निकळग्या, उण एक साथै दो छोर्‌या नै टीबडियै चढादी। कै घर रा सुवाज हो कै मागत करलो। वा मागता रै सार कोनी रैवतो, काम हावणो चाइजै। वो जाणै हा क इण घर म पैरासूट सू तो धन ऊतरै कोनी, इण खीचाताण मे जाम्यो हो, आ हो खीचाताण लारै छाडन जासू।

घणा ही दिन काइ वरस गुजरग्या, म्हैं म्हारै धध लागरयो हा। मोरी रा बारणो साल साररयो हो। चाणचकै किण ही गळी मे चिरळी मारी—'अरे धनवीर रा हाथ कटग्या।

म्हारै काळजै घण री सी चोट पडी, चालता चालता ओ काइ हायो ?

म्हन बयारी ध्यावस होवै ही। म्हैं काम छाडचो अर वारै गया जद पतो लाग्यो—धनवीरो कुत्तर कटावै हो अर दोवू हाथ मसीन म आयग्या। हाथा रो चूरो मूरा होयग्यो। बीन जीप सू स्हैर रै अस्पताळ म लेयग्या—देखो काई हाव।

भोत माडी बात हाई, बापडो टाबरा रो पट भर हो, गाटली गुडक ही, अब काइ होसी ?

घरे वीरी लुगाई अर टाबर झरर झरर राव। वारा आसू थमै ही कोनी।

वीरो ब्योहार समझा या गाव री अपणी रीत नीत, धनवीरै नै तो कोनी लाग्या क कठै सू तो रिपिया आया, कुण दवाइ ल्यायो, कुण आपरेसन करायो कुण दाळ दळिया दियो, कुण घर रा धन पसु नीर्‌या, पण वा एक दिन ठीक होयन घर आयग्यो। लोगा बतायो कै पूरा पाच हजार रिपिया लागग्या पण दोवू हाथा रा पजा कटग्या, हाथ डडा सा रैयग्या। अब वो करसी काइ ?

म्है इ धनवीरै न देखण गयो। धनवीरो एक खाटली म सूत्या हा, दावू हाथा र पाटा बधरया हा। वो माची र अेन चिपरयो हो। मुडा होरया हा धाळोधप्प।

धनवीर म्हन देरयो हाथ जाडचा अर हस्यो। वीरी हसी ओजू उडी कोनी ही।

म्हे वीनै बतळाया—'किया है धनवीरा ?'

— काइ बताऊ, काका, करमा रा दड भोगणा है। इण जलम म तो कीरो ही बुरा कोनी कर्‌या। लारलै जलम रो किनै बेरो। पण मालिक साथै लडाई होयडा है। बदळो लेव है। बदळो तो म्हा सू लेवा, आ जिलफा काई विगाडचो !

धनवीर री बीनणो रा आसू ओजू सूक्या कानी हा। टाबरा री इ आरया भरीजगी।

वो फेर बोल्यो—'म्हैं हारचो कोनी जीत्या हू। हारता जद म्हैं मर जावता। पण आजू देखो अवार ही किसो लारो छूटग्यो।

— अ टाबर ? म्हैं सवाल कर्‌या।

—'टाबरा रा भाग तो धापनै माडा, म्हारै घरै आयो जिकै [illegible] सांडो।
अब अ खासी काइ ?' वो हसतो हसतो एकदम उदास होयग्यो।

म्हैं वीरै नानडियै कानी देरयो, वो पाच साल रो तो हो हो। एक थाळी में
रावडी रोटी खावण लागरयो हो डील ई भरवा हो।

म्हनै परदेस जाणो पडग्यो। म्है दूर चल्यो गयो कोसां, कदै, कदै गाव नै याद
कर लेवतो अर धनवीरै नै ई। इण आदमी रो नाव आवता ही, कई देर ताइ फिकर मे
डूब्यो रवतो।

ठीक ठीक तो म्हनै याद कोनी पण सात साल सू गाव मे आयो।। आवता ही
म्है धनवीरै रो फिकर करयो।

म्है सीधो धनवीरै र घर कानी चाल पड्यो। पण वो तो म्हन रस्तै मे ही
मिलग्यो। ऊट गाडै रै आगै होरैयो हो। गाडै पर तूडी लदेडी ही। आपरै दोवू हाथा री
अदूणी रै बिचै ऊट री मोरी धाल राखी ही।

उण म्हनै देरयो अर दोनू हाथ जोडनै राम रमी करी। हाथ तो बयारा हा हाथ
रा डडा हा।

—'काइ हाल है र, धनवीरा ?'

—'थे तो परदेसा रमग्या, बारोठिया हाग्या। म्हानै तो भूल ही ग्या। हाल
ता देखल्यो, आखड्यो जिसो पड्यो कोनी। था लोगा स रामरमी करण जागा हाथ
राख दिया।'

—'जठै चाह है उठै राह है, भाई। काम तो कर ही ले है ?

—'हा, हा, आ देखो, इत्तो ही कट्यो, आगै सू ई कट सक हो, म्है तो खर
मनाऊ हू।'

— जद तो मार देवता।'

— मार कांई देवतो, नरक भोगतो। पण अब म्हैं किणरै सारै, छोरो कमाऊ
होयग्यो।'

म्हैं छोरै कानी देख्यो, वो तो पूरो जवान हारैयो है।

—'दादै रै पगा लाग।' धनवीरै कैयो।

छारा म्हारै पगा लाग्यो, म्हैं वीरै सिर पर हाथ फेरयो। छोरो धनवीरै स्
ऊपर निकळै हो। बारह-तेरह साल री ओस्था मे ई वो पूरो जुवान लागै हो।

धनवीरो बतावण लाग्यो—'सरू रा दिन दोरा टीप्या, काका, पण दो साल
इकलग जमानो होयो, बसग्यो। दो छोरया नै ओर फेरा दे दिया। अब तो काकडा
लागरैयो हू, छोरया तीन रैई है।

'बूढो तो होयग्या धनवीरा।'

'आछा ई है।' उणरै चैरै माथै उदासी पुतगी। चालण सू पैली म्हैं देख रैयो
हा उण रै मुड वा मुळक नी ही। उण म्हनै कहाणी लिखण रो तकादो ई नी कियो।
म्है साच रैया हू--धनवीरै अर उणरै जुवान बेटै री कहाणी म फरक काई हावैला।

□

मायलो मिनख

हरीश भादानी

लारल छह बरसा सू म्है दोनू माथै रैवा। च्यार-पाच घटा कालज मे, इकातर दूज घर री बैठक म अर दीतवार नै तो आग्गो आग्गो दिन मू ई सिझ्या होय जाव। कणै ई मा टोक तो कणै ई भाइजी दावल दयर जीमण न उठाव।

दोना री वाता इमी क खूटण रो नाव ई नही। मधरी मधरी वाता री घार अचाणचक भभकारा मार चालण लागै, मा सुणं ता भाईजी ई सुण, कठैई लड ना पड। जिया इ म्हारी क करमू री निजरा मा सू चोनिजरा होव, जाणै बिजळी गुन हायगी होवै।

अरे हम थाकग्या होवोला की गळोगीलो करतो भाईजी छापो सावटता बोलै। मा गणमण करती जावै, पाछी आवै। थाळकियै मे वेसण री पूडया अर कटोरा म दही। पोथ्या नै हाथ री बुआरी सू सरका र थाळकिया राग्न।

'या दोना री वाता कदई खूटै ई कोयनी अर वाता री ताण इसी क ए लडिया क वै लडिया पाडोसी सुण तो काइ समझै नाडी —मा र वाना सू ओळमै सू बेसी हेत ढुळतो लाग म्हा दोना नै।

करमू तो की नी बोलै पण म्हारी चरखी तो चाल इज।

मा आ वाता स माथै री सोच साफ होवै। सोच साफ रवै जण काम ई साफ होव। नी जणै दखलै काइ करियो छाटे बासवाळा काकोजी अर अबै काइ कर है वारो जीवण ?' तो थू वारै सोच सू क्यू दूबळो होव है ? अठै कुण दीस है थन काको जी जडा काम करणिया ?' भाईजी छापो लिया बैठक म आय ऊभै। म्हारी तो सिट्टी पिट्टी गुम अर करमू ता साव भेळा भेळा।

थू नही समझैली आरी वाता मा। पण म्हारी वात री गाठ बाधल आज। ई सू बिना पूछ्या ना तो थू इ र ब्याव री सोच अर ना ई नौकरी री। आपरी करत न धापण दियै इनै कय र भाई जी हसता सरक जावता। मा आपरै कामा मे अर म्है भळै नागता वाता मठारण। वाता राज री समाज री घर बिद री। इया दिन महीणा वरस बीतता रैया। एक दिन वाता ई वाता मे करमू काम तपासण री वात कई। दो च्यार दिन आतर स् भाइजी नै कैयो भाईजी सुण र कया देखसा

म्हा दोना री राजीना री एक ई रट इकातरे दूजे वाता रा घरकोलिया वणाणा

अतीतवार नै ढिगा । काम री वात ना करमू दुसराई अर न ई म्हनै याद रई । भाईजी ही एक दिन हेलो पाड्यो 'धरमू रे, अठी आई, ओ धरमू

याता री वगग-वगग न करमू ई थामी । 'जा नी, भाईजी हेला पाड रैया है' हू ई अचपळो सा उठियो । घर मे भाईजी ई है भाईजी साळ म मुडो ढाळया वठा हा ।

'थनै की याद ई रैव है कै नी, थू करमू रै खातर काम री बात कैई ही नी '

'हा भाईजी करमू ही म्हनै कैयो हो पण वी तो दूसरी की ' दूसरी भळ काइ हाव । थनै कई तो थन ई याद राखणा ही खर सल्ला थू काल सू करमू नै म्हार दफ्तर भेज दियै तीन घटा रो काम है भाईजी तो रमग्या आपर छापे म । म्हनै लाग्यो क म्हारा पग भी भारी होयग्या है । वैठक म आयो करमू पोथी रा पाना पलट हो ।

म्हासू पण वालीजै ई नी मुड म जाण कवा । छेकड गदगदीज्याडो वोल्यो थू म्हन काम री वात कैई ही नी, थू तो दुसराई ई कायनी अर हू ई भूलग्यो । भाईजी थारी खातर काम रो जुगाड बिठाय दियो है । थू काल वार दफ्तर जाये परी, ठीक तो ' म्हारी वात सुणता ई करमू हळफळार उठग्यो । म्हारै खाधा माथ हाथ राख दिया। 'साची कव है धरमू ? म्हन काम मिल जासी ? हू वी री आख्या मे झाको घालू । झीणो झीणो सा तिरतो पाणी दीसै म्हनै । हू वी पाणी रो अरथ करण रो जतन करू कै करमू ओ जा वो जा

इकातरै दूजै री वाता तो थमगी पण रवीवार तो नही'ज चूकतो । थू पढी काई काल्ली री रामकथा खूव ई चेपा लगाया है '

'काल ही तो खतम करी है, चेपा काकर कवे है, अहिल्या रो 'एलिनेशन तो अनूठो ई है फेर जनक रो पछतावो '

'टाळवी वाता ता जग्या जग्या है पण पूरो कथा सार किण अरथ म नूवो है ? धरम अर मिथक री कथावा न ।। दोना नू अळगी करीजै जणई तो नूवी दीस । आदिम जात्या न जोडण री कथा तो इया लाग जाण विनोवा रै सपरदाय रो कोई आदोलन राम हावो क रावण, हा तो दानू राजा ई, राज रै बधाप पेटै वुणीज्या ताणा-वाणा नै ममक्ष री आख सू देखा कै नूवो राखण री कोरी भावना मे बैवा '

'म्हनै लाग करमू थू एकै समचै निरवाळो सिरा थाम'र तोलण लाग जाव '

'अरे तीन वजगी ! कपडा धावणा है । अच्छा धरमू अवार तो हू जासू । ई राम कथा माथ भळै वाता करसा । ई राम कथा रै लगोलग आज री राम कथा ई तो वुणीजै है '

हू साचू आज री राम कथा करमू कपडा धोवणा है करमू अर कथा

धावी कपडा लाया है धरमू गिण र राखलै ' म्हारै मोच री विणगट विगर जाव ।

भै नही भैंसाण मारै। निरा दिन याळजै मे धसियोडो रैया इम्त्यान रा भसाण। 'काई ठीक चालै है पढाई ?' 'परचा ठीक होयग्या नी' परचा पूरा हायग्या। पण भैंसाण तो काळजे म बैठो ही हो, आज निसरघा है। हू छापो लिया वठो हू। करमू री उडीक है म्हन मा सीरो वणावै। भाईजी पचास रिपिया दयग्या है। म्हनै लाग हू वोड मे की फूलग्यो हू

हू पैलै दरज पास होयो हू। करमू ई अव्वल अर पूरै सूबे म दूजो नम्बर लिया है भाई होयो काई आज हाल ताइ नी आयो

धरमू आ लाडी, सीरो उडा ठडा होय, आ जीमल बितरो राजी होयो। थारो भाई रतनू थारो रिजल्ट देख र। थार मातर वपडा लावण गयो है। तू आ अबै किणनै उडीक है

'मा करमू को आयो नी आज, पता नी। कांई होयग्या आज ? यू अबार ना पुरस हू वीरै घर जाय'र आऊ। दोनू मायेई जीमसा टा है यनै मा करमू पूरे सूबे म दूजे नम्बर आयो है। बस हू ओ गयो र ओ आयो

हू करमू रै घरै कदेईसीक जाया करतो। कारण तो काई खास नी हो। हा घर छोटो हो अर परवार वडडो। एक दो वार वठा ई हा पण घणी देर काता नी होई। म्हारो अभ्यास ई नी पडियो। फेर म्हारो घर ई विचाळ पडतो। ई कारण करमू रो आव जाव म्हारै अठैई वेसी रैवतो। हू ता कोड सू भरीज्योडो हो जोर सू ई हलो पाड्यो

'करमू ! ओ करमू ! करमू !

करमू री बैन बारणै माय सू ई बाली— भाई तो कायनी। आप आओ।'

'कोमनी कठ गया है तो

'कदेई कैयर नी जाव वस आवै अर जावै, काइ करै काइ नी करै म्हन ई ठा कोनी कवता करमू रा बूढा पिताजी बारै निसरै। हाथ म गेडियो, सफेद सुन माथो। डील माथै उमर रो भारो लदियोडो लाग्यो म्हन।

'धोक बावो सा, हू तो दिनुगै सू उडीकू हू करमू न रोजीना मिल पण आज नी आयो अबार ताइ देखो थाँरो रिजल्ट आयो है वो अव्वल दरजे सू पास होयो है। अर सबसू वडी वात तो आ बाबो सा वो आखे सूबे मे दूजै नम्बर आया है '

'काइ कैयो थू भळै बोल तो काई नाव थारो थू धरमू है नी। काइ होयो पास होयो है काय मे पास होया है करमू बता ता चाल मायन चाल अरे सुणै है स तूनी ! थारी मा न बुला ऽऽ तो हा बाच तो। काइ पास हाया है

म्हारो मुडो किण ई सी दियो है। हू करमू र पिताजी री फाटयाडी आख्या देखू। करमू री मा भीत रो सायरो लेयर गोडा थामता सा वठे करमू री बैन गूगी सी ऊभी है। हू बोल्यो क सरणाटो ढोळ दिया हू अचरज सू एक एक रा चेहरा देखू। साळ मे घूमती घट्टी थमगी। रसोई सू बारै आय र वरजी पूछै काई हायग्यो धरमू भाईजी

स तूडी झाड़ लिया ई ऊभी है   छेकड म्हनै ई तोडनो पड़ै मून रो मणीको   'करमू एम ए म पास होयो है । पेले नम्बर आयो है । 'करमू एम ए पढी है । पण क्या तो कदई नही । हा काम माथै तो जावै है कठई, रिपिया ई घर मे देवै । पण पढ़ण रो तो कदैई नी क्यो । म्हार कन तो पढाण री गुजास ई कठै । म्ह सू परवार ई दौरो पळ ।' म्हन लाग म्हारै कोड माथै पाणी पडग्यो है । हू मोजग्यो हू । करम रै घर मे ई ठा कोयनी कै करमू पढै   तो हू चालू बावोसा   मा उडीकती हासी   आवै तो कैया धरमू आयो हो   बोली री ठक ठक सू टूटया मून रो मणीका पगा माथ जा पड्यो पग नी उठै

'बठ नी धरमू, आवतोई होवला, म्हनै बता तो सरी वो काट-काइ करै   घर म रवै ता पोथ्या सागै अर वार   '

'अर धरमू थू अठ हू ? तो घरै जायर आयो ह । मा क्यो कै थू तो म्हनै बुलाण गयो है । रिजल्ट री बात ता म्हनै मा बताई । आज ता दफ्तर   ले उठ चाला मा उडीक   हू अबार आयो काका   '

'करमू थू पढाई कर, म्हनै ता धरम् बताई आ बात   घर म किणन ई ठा कोयनी । बस ठा है तो आ कै थू आवै अर जाव   करमू ।   कैवता कैवता करम् रा काका गळगळा हो जाव

इण मे कैवण री काइ बात काका अणूता ई बिराजी होवो सतू जा काका न मायन ल जा, ले आ, मा नै दवाई दे दे   बस हू अबार आयो   चाल धरमू । बठ मा कण सू उडीक

खीचतो सो करमू म्हनै बार निकाळ लै । रास्ते म की नी बोला । बैठक म आय बठा । मा हरखी हरखी थाळी राख जावै । म्हासू तो पण भळई नी वारीज ।

करमू म्हनै क्वा देवै हू   करमू न देखू । म्हनै लाग कुदण स चेरो उकेर दियो है— लखा तो किस्स सोच म पडिया है थू

करमू, थू बाबासा नै ई नही बतायो क थू पढ ई है   काम ई कर

बताण सू काइ फरक पडतो धरमू ! काको ता जूण रा विखा भेलता झेलता माठा सू पला ई साठीकड होयग्या । हान ही क्टै ई है । जिया तिया दसवी हू इज गाठ बाधली । घर रा हान तो सचन्नण हा ही । कइ क्वता काका नै भार इ तो बधता

'काम री खातर कितरा कागज काळा करिया, दसू देवळया थरकणा धाकी । चपरासी इ नी राख्यो किण ई । जठै जाऊ   जठै कैनू,   बठ-बठ दीस्यो लाव लाव रा फाटयोडा बाको । काका म भरणवाळा भाठा हा कठ धरमू   छेकड चरणदास ई पसीज्या । छऊ घटा री होटल री मटणी ज्या त्या काढचा तीन वरस । चरणदास री ई मायली गुनगी । सौ रुपल्ली म दा काम मधै   'करमू एक सौ पचास देसू पण काम तो हमै बारह घटा ई करणा पडसी   सुणता ई सीकम्प बैठग्या   आ टूटी   त्रा टूटी मकळप री डार   मक्तै सक्त ई तो थन क्या क की काम तपाम । भाईजी माथ दी

डोर होयगी नी आधळ घाटी पार 'भळ काई साच है ? तो ले जीम, सीरो ठडा हाव '

'कास करमू हू पैला ई आक लेवता थारै माय हू ई काई इयाई करतो ता पण म्है तो भाईजी अर मा रै आसर ई रयो । वार माथै भार ई रैयो ।'

नही धरमू, आ बात नही, मा अर भाईजी थनै बोझ मान'र थोडी पढायो । आरै कन साधन हा आ साधना नै वा थारै खातर बरतया, जणै थारी पढाई होई । थारो सभाव इसो होयो । थारा म्हारो मेळ निभियो, साधन अर मोच तो छोटे वास वाळा काकोजी कनै ई है काई हायो जीवण रो । वारा साच जे सही हावता तो जीवण इया भटकतो काई ?

'करमू जिया जीवण एक छेकडलो लूट याम्याडो लागै, वियाई थू जद जद ई रामकथा माथै बोल, क्रिसण चरित्र माथ बोल, म्हनै लागै थू ई अति कानी जा रया है ?'

'नही धरमू हाल री घडी तो आ बात म्हनै नी लागै । काका नै होटल मे बरतण धोवण री वात बता देवतो तो वारो विरामण जाय जावतो । भलै ई वै म्हन की नी कैवता, पण माय सू तो टूट ई जावता । आ तो थू ई जाणै है कै आज काय री जात अर काय रो धरम, फेर जूण र पटे किसो काम ओछो । पण सस्कार तो है ही । आसू जडियोडी है सोच, देखै ही है नी अेडै सोच रा नतीजा, लड रैया हा, मर रैया हा, मार रैया हा, पण नी उगत नी आय रैई है । क कुण मर है अर कुण मारै है । थन बाडो लागू हू नी हा हू बाडो, पण बाडो तो बोलू खुद नै बदळण सारू । पढाइ रै नाव, सिक्षा र नाव । धरम करम रै नाव जितो साम्है दीस जितो दिरीजै । आनै बजा ठोक र नी लेसा तो स्यात किणी वगत थू ई, हू ई वा सिरसा ही होय जावाला । पढाई रो असली अरथ तो भणता गुणता माय सू नूवो मिनख निकाळनो है अच्छा तो हू चालू ।'

म्हैसू उठीज्या कोयनी । रोजीना बैठतो अर बालता करमू म्हनै पैला तो इसो नी दीस्यो ? करमू तो वो ई है म्है इज नी देख्यो ? आ उगत करमू कनै कठै सू आई ? हू बैठा बैठो सवाला स उळझू साम्है देखू करमू तो गयो पण वीरी छिया म्हन म्हार साम्है साव ऊभी लाग । हू उठ र देखू म्हन लागै क करमू जितरो डीघो है ! चाळ पजामै म म्हन नूवो मिनख दीसै ! मिनख माय सू नूवो मिनख बारर निकळै करमू, बता करमू बारर निकळै ?

□

सारस री जोडी

हरमन चौहान

स्हैर सू म्हारो गाव जस कोई कोम डाढै क आतर होवै ना। ओ उगूणी दिसा म अेक मावरी री खाळया म वस्योडा है। इणरै धुराऊ अर लकाऊ दानू कानी तळाव है। गाव र साम्ही तळाव री पाळ लारै आवा रा रूखडा ऊभा है। इण अवराई रो ओ दरमाव अठै घणा सावणो लागै। म्ह इण अवराई रै हठै वैठो हू। जद जद ई म्है अठ आयो हू म्हन जाण क्यू मन री सायत मिलै है। अवार ई अठ सायत रै वास्त इज आया हू। आ आवा री डाळया माथै मीजरिया बोरावता म्है केई दफै देखी हू। भाळाप री आळू केई वार ताजा हाय जाया करै।

म्हैं अठै इज माई भीमसिंह रै सागै रमतो हो। म्हारा कावाई भाई सा सागै अचपळाया करतो हो। दुपारी रा तपता तावडा म कदै कदै तळाव म भैस्या माथै चढ'र गत्ता बोडता हा, क मीडक्या मारया करता हा। उ हाळै म म्ह गाव रा छारा साग अठै रा रखवाळा कूजडा न चकमो देयर करी रा गुच्छा माथै 'तऽऽ' करतो भाटो वगावता अर भाटा रै सागै दठ दठ करैया हेठै पम्ती, म्हे पुरती सू चग र चाटी दे जावता। खूब हसता खेलता रैवता हा

वै दिन अबै कठै? भाई मट्रिक म फैल होवता ई छारै फौज मे भरती होयग्यो उणरो कागद आया इज ठा पडी ही। म्हे पास हायर आग पढता–'वी अे' कर लीवी। फौज म भरती होया पछ भाई रो तो दा वरसा माय ब्याव ई होयग्यो। जिका जेक साग रवता हा, या लोगा न अब मिलण रा इ जादा पडग्या। म्हारै साथ रा सगळा लोग आप आप रा धधा पाणी मे लागग्या हा। अेक अेक करनै भायला विछडग्या। म्है अक्लो गाव मे गिडक मारया करतो वगारी म। कोई ठावी नौकरी री आस करै हो। राजिना स्हैर जावता अर वैकैसी रा कालम अखवार म देखतो, अरज्या लिखतो। जिण दिन स्हैर जाण रा मूट नी होवता ता अवराई री इण छीया मे आयर वठ जावतो।

भाई रो नूवा नूवो ब्याव होया तो उणरो रामो इज विगडग्यो। वा फालतू गाव म नी जावता अर नी हथाई माथै वैठता। घर सलामत हा या फेर आ अवराई जठ दा महीणा म्ह सागै वठर काटया हा। म्हैं स्हैर जावतो तो मिझया पाछा वावडर उणमू मिलता। वो ढोलिया माथै पाढयाडो लाधतो। चाणचक क-कद जावता ता भाभी-मा म रौळ क कातक करताडो लाधतो। म्हन देखर भाभी-मा घूघटा काढ लिया करती ही। भाई घणोई वरजतो कै देवर सू काइ घूघटो काढै? पण वा रा कैवणा हो क

'देवरजी आपरै सायना है, म्हैं घूघटो काढण सू किसी घिस जाऊली ? देवरजी फेर टावर ई ता नी है, लूठा है अर लूठा देवर सू वात करूला तो लोग काइ कैसी ?'

अक्सर म्हे तडकै तळाव री तीर ऊभा-ऊभा वाता करता, उठै री दरसाव देखता। मिनान करणै रो मूड होवतो ता पाळ रै विच्चै आयोडी मोरी पर सू गठा थीडता। तीर मे कदै सारस री जोडी कुरळावती तो म्हैं कवतो—'भीमा ! वा देख सारस री जोडी, अेकै साग कित्ती फूटरी लागै है ?

'हा, र। जोडी जोडी सारस री ! हर टेम अेकै सागै रवै, अेक दूजा रै ताइ मर जीवै हे। रामजी सू म्हारी इत्ती इज अरदास है कै आगलै भौ मिनख-जमारा नी देव ता म्हा धणी लुगाई न सारस री जूण दीज।'—भाई वोल्यो।

म्हं कैया—'भाई अवार किसी कमी है ? सारस री जोडी इज तो हो थें। इत्तो हेत प्रेम है क आतरै होवो जद तो वस दोनू कुरळावण लागो हा ?

'नी रै रोल मत ना कर !'

रोळ किण वास्तै करूला ? भाभी आप बिना अर आप भाभी बिना नी रैय सको हो। भाभी थारै विना जीमै कोनी अर आपनै तो वा विना काइं आच्छो इज नी लागै। अठै तळाव ताइं फिरणै न म्हैं जबराई सू आपन लाया करू हू। ठा है ? ब्याव रै पली स्हैर जावता तो रात ताइ नी आवता, अबै कदै स्हैर जावो तो कित्ती ऊतावळ मचावो हो नीटण वास्तै ! सारो दिन साळ म घुस्या रैवो, गाव रा सगळा लोग आपन चिढावै है, क्यू बात गलत है काई ?

अिसी बात सुण'र भाया मुळक जाया करतो। अेकर तळाव मे छली कानी कोई धोवण री चीस पडी। तळाव मे अेक धोबी गुळच्या खाय रैयो हो। म्हे लोग दौडर उठै पूग्या तद ताइ तो धोवी बापडा डूबग्यो हो। धोबण हाय भराय मचावै ही। घडीक भर मे गाव रा लोग भळा होयग्या हा। कोई टावर घर भाभी नै समाचार दिया क तळाव मे अेक मिनख डूबग्या है। भाभी तो तुरत भाखरी नाघती इज आई अर घूघटा न थोडो सोक ऊचो करर म्हार कानी आगळी सू इसारो करतोडी म्हन अेक कानी बुलायो। पछै घूघटा म इज म्हारै सू लडण ढूकगी। पली दफ उणरो म्हार सू बोलणो होयो। म्हन भाभी रा गुस्सा माथ मजो आव हो। म्हे मून मून मुळकै हो। वा वोनी—'हीडीकाढिया नै हमी आय रैई है, म्हारा तो अवार जीव निकळ जावतो जे आन की हा जावतो तो ? खवरदार, जे आग सू आनै तळाव माथ लाया ता ? अबै अठ काई तमासा देखो हो, चालो घरा, आपरा भाई सा नै ई बुला ला।'

'भाभी ! अवार ता चालणो मुसकल है, भाई तो पुलिस मे खबर देवण गया है, अवार पुलिस आ जासी। बयान होवैला। पछै लास री चीड फाड होवैला। थाणा म म्हा नागा रा दसगत अर गवाही हावला, जद जायर ।'

'ओ राम ! आ किसी आफत ? थे जीम र तो जावता ?

मरया माथ कदै जीम्या करै है काइ ? जा अे जा भाभी ? म्हे सिझ्या न जीमस्या ! नीमी फिकर करी ?'

'चौखा म्हारा कुणक्हया !'

इत्ता म भाई आयग्यो हो। सागै पुलिस ही। भाभी नैं दखर वा सीधो म्हा क्न आया अर भाभी नैं बठै देखर उणनैं अचरज हाया। भाभी घरैं चालवा री जिद करवा लागी ता उणनैं भाई समझाई जद वा घर बहीर होई। लास रै साग म्हे ई स्हैर गया। थाणा म मोडा हायग्यो। रात म्हैर मे इज पडगी। घरैं पूगा जद सगळा लोग सूयग्या हा। भाभी आग उडीक करैं ही। म्हे दानू दादोसा क्नै बारोठी म गया तो उठर बैठा हाया अर खूब डाट लगाई। पछै भाई रै सागैं वारी साळ म घुस्या ता आगैं भाभीसा बैठी बैठी रोवै ही। भाई उणनैं डाट लगायी—'काइ होयग्या ?'

'होयो आपरो माथो! फिकर करती अठ मरगी हू अर पूछा हो—काई हायग्या? देवरजी रो सागो छोड दवो।'

—'क्यू ?'

—'अ कदै ले डूबैला आपन!'

—'अर म्है कद लडाई में इज मरग्या ता ?

—'तो पछै म्है जीवती कोनी रवूली। जीवती रई तो सती हा जावूली।

—'सती हावण रा जमाना गया, दूजो माटी कर लीजै।'

—'सरम का आवै नी कवता न? म्हे ता इत्ती उमर भैमाता सू लिखा'र नी लाई हू। आप सू पैली मर जावूली।'

—'म्हारैं सू पैली जे थू मरगी ता म्है उण दिन भरपेट फाफरा खावूला।'

—झूठ! म्हन देख्या बिना तो आपन चन कोनी पडै अर फाफरा खास्या ?'

—'बैंडी, दूजो ब्याव रचाऊला। कळदार खरच करर झमक लाडी लावूला।'

—'चौखो! कर लीजा ब्याव, ल आईजा लाडी! अब जीम ता लो ?'

—'थू जीमी कैं नी ?'

—जीम लैस्यू।'

—'हरू! भाभी तो थ्हारैं साव बडी आयगी।' —भाई म्हनैं ठमको दिया अर पछ आगैं क्यो—'इणरा तो टका करणा पडसी।'

—'व्हा हा! रैवण दो अब, देवरजी बैठा है नी तो अबार सुणातो कैं टका करता ई आवता ?'—भाभी बाली।

म्हे दोनू जीम्या जद पछ वा जीमी ही। दावू इया इज ममकरिया करता रैवता हा म्हैं दोवा रो हेत देख-देख राजी होवतो हो। भीमसिंह रो दादा अर म्हारा दादो सा सगा भाई हा इण वास्तै कडूत्रो ता म्हा लोगा रो अेक हो, पण सगळा न्यारा-न्यारा

रैंवता हा। उणर अेक मोटा भाई हा, जिका सती करतो हा। भीमा रो बाप तो कदई रामसरण होया। अेक बन्नी मा ही, जिकी विधवा हा, हाल पराजाडा पैली पीयर म वेरा म घमकगी ही। म्हारा दादा सा हाल ई तदरूस्त हा। काकाजी सती करता हा। भाई सा नौकरी करैं हा। उणारा डर सू इज म्हैं थाडा पढ लिखग्या हा। पण सासा अरसा सू च चिट्ठी पत्री नी दीवी ही। मा, बैन भाई उणार सागैं इज हा। कठ म्हार नौकरी री ई तजवीज नी करी। अेक तरैं गृ इण घर सू काई मतलब इज कानी हा।

पण राम री मेंहर क नारला तीन वरसा सू म्हैं दिल्ली नौकरी कर लीवी। कद कद घरैं आवणो होव है पण म्हा दानू भाया रा मिलणो उज नी हावता हा। म्हैं इण सियाळ गाव छुट्टी आयाडा हू। लारला बेकारी रा दिन इण अवराई री छिया म इज काटया हा, अबै याद आय रैंया है। चिन्ता उदासी रा दिन हा व। आज म्हैं इणीज अवराई रै हैठै पुराणी रणका नैं कुरदण सारू पाछो आयो हू। पण इण बगत म्हारा मन घणो अणमणो है। तळाव री तीर म कठै सारस कुरळाया है, पण इण बार उणर कुरळाव मे दरद है।

दिन आथूण मे थाकर दूर चाग री पहाडया माथ काई अेवड हौळै हाळ उतर रैंयो हो। ठडी ठडी पून वाजै है। पाळ माथैं कोई अेवड रो पाली डिचकारा करतो लरडया नैं हाकल रया है। लरडया री मिणमिणाट म्हारैं काना मे मोळी पड रैई है अर कोइ मिलेट्री बैंड री धुन गूज रैई है। म्हे पछै म्हारी ओळू मे थोटी थाडी-सी ताळ म इज उतर रैंया हू। म्हे थाणा मे बडी मा रो मामलो सळटावण स्हैर ग्यो हा। उणनैं सळटायर पाछो फिर हो, जद बजार म अचाणचक इज भाई सू मेंट हायगी। दोनू अेक दूजा नैं गुटळ गुटळ देखता रैंया। पछै म्हे इज अणमावता माद सू कैंयो—'अर ओ भीमा? यार, कद आयो थ? काई छुट्टी आयो?

—'नी तो?'

—'तो काई?'

— दरा नी रयो है—म्हैं वरदी मे हू?

—'अरे वरदी मे ता थू हमेस इ आया कर है। सगळा फौजी जद छुट्टी आव ता वरदी मे ई आया कर ह।

— इण सू राव पड है नी! —अर वो रोव सू म्हारैं गळ लागग्यो। पछ अळगो होवतो म्हार कानी नाळण ढूको।

—'आ जीप कुण री है?'—म्हे पूछिया।

— म्हारी प्लाटून री है। इण टम म्हे ड्यूटी माथ हू। साब रै साग सरकारी परचेजिंग करण वास्त बजार आया हा! म्हे लोग चाग री पहाडया म लडाई री प्रेक्टिस करण आया हा!'

— क्यू लडाई छिडवा री गुजायस है काद?

—'नी र! प्रेक्टिस चालती रैंव है। अठा सू पठाणकाट जास्या, पछै उठा सू सीवाडै किणी चौकी माथै!'

—'ता थू घरै नी चालैला ?'

—'घरै ता आज दुपारी मे जाय'र आयो हू । थू ई कानी मिल्यो, नी साळो लुगावडी मिली ।'

—'म्हार मिलण री थान किया आस ही ?'

—'वीरा ! आपरै आवण रा समाचार बजार मे इज मिलग्या हा । पैला थू आ बता, थारी भाभी घर सू कजिया करर क्यू चली गयी ? अर वडी मा बेरा म किया धमकगी ?

—'आ वाता रो वैरा म्हारै कनै कोनी । घरै काई वात बताइ कोनी ?'

—'बताई तो ही पण न्यारा न्यारा मुडा, न्यारी वाता ।'

—'तो वडोडी भौजाई जी सू पूछ लैवता ?'

—'वी सू काई पूछतो ? जिकी अेक लुगाइ री जान ल लीवी अर दूजी न घर सू भगाय दीवी ।'

—'थू ई बिस्वास कर है ? साव झूठी बात है ।'

—'तो फेर सही बात काई है ?'

म्हे दोनू फुटपाथ माथ अेक कानी खिसक्या । पछ म्हैं कैयो—'भाई ! बडी मा ता बिया ई दुखी ही । बापडी रडापो काढ रैई ही चैन सू, पण अै स्स घर रा लोग काठ कुवाडयो लार पडग्या हा ! कठ ताई वा बरदास्त करती ? तग आयर सेवट पी र चली गी । पण वठ ई चैन सू कुण रवण देवै हा ? उवरा दारूखोरया भाई वीनै इण ढळती उमर माय भी कठै वेच दीवी । आउठै जाणो नी चावती ही अर नी दूजो धणी करणो चावै ही । जद उणरै साग जबराई होवण लागी ता वा कायी हायर बेरा मे फदाकगी । मामला थाणा मे पूगो । आपा र कानी रा नाव ई लिखाया गया हा, पण आज म्हैं थाणेदार सू तीन सो रिपिया मे सळटार आयग्या हू ।'

इत्ता म उणरा अफसर आयगो हा अर वीसू म्हारी ओळखाण कराई । पछ म्हन दावू जीप म वठार आपरा कैंप मे लेयग्या । भाई पछै दूजा फौजिया सू ई ओळखाण कराई । म्हे दानू तबू म बैठर वाता करण लागा ता वो पूछिया—'दूजी वाता पछ, पैली ता थू आ बता क थारी भाभी पीर किया चली गी ? म्हनै नी कोई चिटठी, नी समचार ?

—'म्हनै पूरी बात रा तो पतियारो कोनी, पर इत्ता जाणू हू कै वा थारै कारण इज गी है अर थासू वा घणी वैराजी है । कवे ही कै ई सू ता चोखो हावता धरवाळा म्हारा गळा ममास देवता, रूपो ल्याय देवता ।'

—'इसी काई मुसीबत आय पडी उण माथ ?

—'यार ! जद डावडी माइता रा घर छोडै, उण टम सासरा म नूवी जिनगाणी सरू करण वास्तै नूवा सुख री कामना करै है । वा सुख जे उणनै नी मिलै ता उणरी

काई दुरगत होवै है ? आ बात आपा छारी होवता तो अंदाजो लगा सकै हा। सासरा मे उणनै धणी रो प्रेम मिल जाव तो वा दुख नै इ जिनगाणी माय सुख समझर काट सकै है। पण धणी रो सुख ? थू कित्ताक सुख दिया है उणनै ?'

— थू सुख री बात कर है ? म्हे दानू तो जेक दूजा न देख-देख जीवता हा। वा म्हन बतावै तो सही, उणन काइ दुख है ? घर म बासण ठीकरा तो सगळा र अठ खुडकै है इणम तो म्है ई काइ कर सकू ?

म्हें सुण्यो हू क जद सू नसीराबाद छावनी छाटी है, थू छुट्टी ई नी आया कर है ?

—'जम्मू-कस्मीर री पोस्टींग है म्हारी, किया आय सकू हू ? फेर ई अडी बात नी है। अै तो मन रा चाळा है, उणरो कैणा है कै बीनै साग राखू। अब थू ही बता म्हैं हमेस तो साग राख नी सकू। फौज रो मामलो है। आज अठै तो काल कठ ? की ठा तो रवै नी पछ सागै राखू तो किया ? आजकल वा बिगडर कतीर होयगी है। भाजाईजी बतावती ही कै वा घर म चारी करै, धान बेचै है अर पराया मरदा सू आल्या ई लडाया करै हे। बता, आ रुळियारगी म्है कद बरदास्त करूला ? घरै दो महीणा री छुट्टी आराम र वास्तै आया अर हू। जर अठै आग महाभारत मच तो म्हैं राड री चोटी पकडर सूदी नी करूला ?'

—'थू पइसा नी खिनावै तो वा चोरी करला अर धान ई बचेला।' रैई पराया मरद वाळी बात आ बात तो साव झूठी है। भाभी उण माथ रीसा बळ है, इण वास्त बापडी रा झूठघाई वाळो मूडो करै है। लागा रा कणा मे लागो तो घर मगावलो। भाभी-सा रो म्है पगस लियो।

—'आ बात झूठ हो इज नी सकै। बडी भौजाई झूठ बोल सकै है, पण दूजा सगळा ई लोग झूठ बोलला ?'

—'गलतफैमी री सिकार मत हा बापडी थार सू इत्तो हेत राखै है अर थू ?

बात अधूरी इज छूटगी ही। म्हा लोगा न उणरो अफसर बुलवा लिया। म्हारी वै लोग खूब सेवा करी। बाता मे टम रो पतो इज कोनी रयो। खाणो आरोग लियो तो म्हैं भाई सू जाण री अरदास करी। अफसर रा डेरा सू म्ह लाग उणार डेरे म कदैई सू आयग्या हा। भाई म्हारी बात री हामी भरतो बोल्या—'चाल ! म्हे थन थाडी दूर ताइ छोड आऊ। पतो नी अबै फेर कद मिलणा हासी ?

उणीज टम अेक जवान आय नै भाई नै कयो—'भीम सिंह ! था सू मिलणै कोई लुगाई आई है।

—'लुगाई ? कुण है ?

—'म्हनै ठा कोनी। —जवान बोल्यो।

भाई म्हन कैया—थू अठ इज थठ, म्ह आऊ अबार।

—'म्हन मोडो होवै है, घरै दादा-सा उडीक करता हासी।

—'अै नी, जाये मत ना, अबार आऊ हूं।'

म्है टेंट म बैठ'र जवाना सू वाता करण लागग्यो। कोई आधेक घटा पछै वो लोट'र आयो। उणरो लिलाट माथै सळ पडयोडा हा। गुस्सा सू आख्या राती चठ ही नै मुडो तमतमावै हो। आवता इज कैवण लागा—'साळी, कमीणा री औलाद अठै ताइ चली आई।'

—'कुण ?'

—'थारी जगत भाभी ! और कुण ? पैली ई आखा मुलक म नाव कमा राख्या है। लोग उणरा खसमा रा नाय नी बतावै है, नहितर अेक-अेक न सूट कर दू। वा रै साग इण रडी नै ई। थू तो बता इण रडाचा र खसमा रा अेक दो नाव ?

—'म्हैं सुणी-सुणाई वाता माथै विस्वास नी करू। थू इत्ता बीमरयाडो क्यिा है ? बात काई है ?' म्है पूछियो।

वो और कडक अवाज म बाल्यो—'रडी बोलै है कै म्हनै सागै ल चालो। अव साग किया ले जाऊ ? सागै राखूला तो पलटन-राड दो-च्यार खसम बठै ई बणावैला। म्हैं अब उणन राखण वाळो नी हू। छोरो पगा चालण ढूक जावै तो म्है उणन मगवा लेसू।'

—'आप दाया रै विचै इत्तो हेत हो परम हा, ओ अचाणचक इत्ता आतरा किया आयग्यो ? आ कुण वारती लगाई है ? जरूर था दोवा र विच गलतफ़हमी होयगी है।'

—'अर, राड नै घणी माथै चढाई, उणरो आ नतीजो है। लुगाई जात रै अक्ल तो अेडी म होया करै है। चाटी पकड'र राखो ता सावळ रैवे। म्हैं ढील करती उणरो इज आ पळ है। राड छ्ळियार होयगी है। चोरी वा करै, धान वा वचे, अैस वा करै अर तुरीं ओ है क म्हैं उणरी परवा इज नी करू हू ? हर महीणै साळी न सौ रिपिया भजू हू, काइ इणी वास्तै म्हारो जीव तो अठै लागो रैवै है। आ हाला सू म्है देस री काइ सवा करूला ? घर री लडाई तो लड नी सकू अर देस री लडाई लड सकूला भला ? मन करै है क बीन सूट कर'र खुद नै गोळी मार दू। म्हन धमकी देवै है कै टावर नै ल्यर किणी बेरा माय फदाक जाऊली। इण घर म काई लुगाया बेरा माय इज पडवा न आई है ?'

—'भाई म्हारा अबै थू वालता इज जावैलो कै म्हन जाण वास्तै ई की कवला ? देस चाद उग आयो है, कदाच रात रा इग्यारा बजता हावैला। घरै सगळाई फिकर करता होवैला।'

—'चल्या जाज्यै। पण जाणै सू पैलो वी कुत्ती राड न घरै ता उणरै पूगा वाळ। साळी ठौड सू हिलै इज कानी। टावर ठड सू थर-थर धुज रयो है। मर ई जाव ता वीनै काइ ? देखै कोनी, ठड किसीक पड रैई है ? काल उणरा वाप म्हन सडक माथै मिलग्यो हा। कव हो क—'आपरी लुगाई नैं सागै ले जावो। छोरी नैं गाव म अेकली छोड राखी

है, लोग तर तरै री बाता बणाव है। वीनैं झूठमूठ ई बदनाम करता रैवै। अबै म्हैं तो काठा कायो   हायग्यो हू। कोई दाडै लुगाया लड मरी अर म्हारी वेटी नैं की हायग्या ता पछै आपन लेणा रा देणा पड जावैला।' पछ म्हैं सुसराजी न काई कैवता ? आ कप री ठौड उणनैं वै इज बताई होवैला ?'

म्है घरै जाणै री उतावळ मे उभो होयो तो वो बोल्यो—'चाल, उणन छोडतो चल्यो जाईजै।'

—'बीरा, म्हनै मोडो होव है, थू इज छाड आ जावै नी ?'

—'यार ! म्हारी ड्रूटी लागणैं वाळी है रात री ! फेर म्है बगर इजाजत इया केप छाड जाय नी सकू हू। हरामजादी चालै कोनी तो धक्का मारता ले जाइज !'

म्हैं दाखू नीद मे थाडा तगाळा खावता भीर होया। सडक माथै अेक चूना री भट्टी कनै भाभी छोरा नै खोळया मे दबाया बैठी ही। भाई उणरै कन जाय'र कैयो—' रडोषा ! अबै तो उखल ? भाई नै थारै सागै खिनाय रयो हू।'

—'नी, म्है नी जाऊला।' —भाभी घूघटा मे बोली।

भाई नै और गुस्सो चढग्यो हो, वो गुस्सा म कैयो—'क्यू नी जावला ?'

वा बोली—'म्हनै आप सागै ले चालो। आ जोबन इया इज बीत जावैला, पछै काइ बुढापा मे राखोला आपर सागै ? पैला तो छुट्टया ले'र भागता आवता हा अर अब ? म्है इसी काई गळती करी ? अठै म्हारो जीव अमूझै है, अेकर साग ले चालो, नी तो पछै म्हारी आस मत करज्यो।

—जा जा ! आ फौज री नौकरी है   थारै बाप री नौकरी नी है।

—'दूजा फौजी ई तो आपरी लुगाया नै सागै ले जाया करै है ! थ किया न्यारा हा ? म्हारै सू अब और ज्यादा नी सैन होवला। खमणो हो जित्तो खम लिया। लुगाई री जात [redacted]। मिनख रो काइ, मिनख तो चालतो थको हर कठई बाड मे ई मूत सक है, पण लुगाई ? अेकर उणनैं आगै पाछ रसै देखणा पड है।

—'काइ कसर राखी है ? जणा-जणा रै साथ रोवती तो फिर अर बडी स्याणी बण है ? बापडी जीर ई ता लुगाया है, जिकै रा धणी फाज मे है !

—'हा हा ! म्है जणा जणा कन रोवती फिरू हू। इत्ती मिरचा लाग है ता साथ क्य नी राखा हो ? ब्याव करयो इज क्यू हा ?'

—'रडी ! थारा बाप नै जार पूछ ! घणाई गाठिया हा म्ळती फिरती ही न ? साळी नै ओसर करवा री टेव पडगी है। ज्यादा बक बक करी ता चेपा थाळ-थाळ सुदी कर दू ला ! उठ ! सूदी-सूदी हर र सागै वळ ! नीतर अबै दसा म्हाटो आई हाव ता बोल ?

—कैया नी, नी जाऊला !' —भाभी जोर दिया।

भाई न जारदार गुस्सा चढ आयो—'अरै बदजात ! मान जा ? अबार जूता लागी ! बूट री पन्नी तो घणा दिना सूदि हळदी घिसती फिरैला।

—'अबै ठौड बाकी इज किसी राखी हा, जठ हळदी घिसू ? हाथ लगा'र ता अब देखो ? अबार इज आपरा साव कनै पस हाऊली अर रसै बाता बताऊली ?'

—'काइ बतावैली ?'

—'बताऊली कै म्हारा धणी म्हनै पइसा नी भेजै है, म्हनै राखणा नी चाव है अर दूजा ब्याव करण वास्तै म्हनै जान सू मारवा रो धमकी देव है। —भाभी रा इत्तो कैवणो होया कै भाई तो ढुका जतराणै। भाभी रोवण ढूकी। साग टावर ई रोवण लागा। म्है भाई नै ढावणै री कोसिस करी, पण वो तो ढबै इज कानी हा। म्हन अचरज हावण लागो कै जिका कद लडणो समझता नी हा, वै आज इण तरया लड रया है ?'

भाभी और बिफरगी—'मार मार हाख जान सू ! पापो कटैला, पण याद राखज्यै थी सोक राड रा लोही नी पीऊ तो म्हारा नाव गगली नी है।'

—'छिनाळ राड ! किसी सोक राड री बात करै है ?' —भाई उणरी चाटी पकड'र पूछ्यो।

—'वा चुडैल साति और कुण ?' —भाभी बाली।

—'कमीणी ! म्हारी मा जिसी भाभी रो नाव लेव है ?'

—'हा हा ! थारी गोड भाभी ! आपरा उण सू काई रिस्तो है ? म्हन स्म पतियारो है। म्हैं इज काइ आखा गाव दवर भाभी माथै थू थू करै है। अबै म्है और वरदास्त नी कर सक हू।'

म्है चुपचाप दावा री वात सुणै हा। फगत तीन वरसा मे दावा र बिचै इत्ता अळगाव आयग्यो ? अर म्हन ठा इज कानी। अ गलतफम्या कीकर सरु हायगी ? म्है बीच-बचाव करण म लागो हो पण दोयू म्हारी बात सुणण म त्यार इज नी हा ! अिसी गाळ्या री रीठ म्है दोवा रै मुड सू कदई नी सुणी ही। भाई उणनै धमकाव हो—'राड ! म्हारी मा बराबर भाभी पै झूठो इलजाम लगाव है ? सरम कानी आवै ?'

—'सरम ता आपनै आवणी चाइजै ही ! अैडा खोटा धदा करिया इज क्यू ? म्हैं तो राड मैं जतरायी ई ही। मालजादी कबूलीज ई नी ही।'

—'अरे, थारी राड री ! थू उणनै जतरायी ? ले, म्है थनै जतराऊ हू।'—अर भाई पछै उणण जतरावा ढूको। म्है फेर बीच बचाव करिया पण म्हारी बात वै सुणनानै त्यार नी हा। भाई भाभी नै वूटताडा कैवै हो—'गीडक री औलाद ! खुद बिगडैल अर दूजा माथै बदनामी रो ठीकरा फाड है ? आखा गाव मे घूमती फिरै थू ? अर म्हारा कानी मूडो कर है ? हिडडी राड !

—'हिडडा आप अर आपरा कडूबा !' —भाभी बाली।

—'म्हारा कडूबा माथै मत ना जाव नीतर थारै कडूवा री सगळी वाता अबार सुणली ! थारी मा राड ई तो थार ज्यू रोवती फिरती ही ?'

—'अर आपरी मा राड घणी सत वाळी ही ? वा ता ।'

—'आगै बाली तो थोवडा न भान'र चूरो कर देऊला।'

—'भला ई मार'र गाड दा।' —अर भाभी रोवती आपरा नाक नैं सिणक र छोरा रा बावटचो पकड'र अेक कानी वगायो। पछ वा ऊभी हो'र कमर न आपरा पल्ला सू कसवा लागी। म्हैं छोरा नैं जा'र गाद मे उठायो, पछै भाई रा हाथ पकड्यो। अठीन भाभी विकराळ रूप धारण कर लियो हो। भाई न बोली—'जामण राड का? अबै मार'र देख? नी मारैला तो थू थारा बापरो नी है?'

—'अरे, नीच राड! छिनाळ मालजादी?' अर भाई ता पछे बूट री नाक सू भाभी रो भुरतो बणावण लागो। थोडी टेम तो भाभी सामनो कर सकी, पछ वा दठ करती हेठे पडगी ही। पछै लागी चीखबा। म्हारी खाक मे छोरो हो, उणनैं अक कानी बिठा'र म्हैं भाई रो बावटचा पकड्या लारै खीचवा नैं, पण वो फौजी जुवान अर म्है चार पासळया रो मिनख? काइ कर सकै हो? वो धूळ री मूठी भर'र भाभी रैं मूड माय ऊर दी। भाभी रो अेक पळ कूकावणो बद होयग्यो हो। वा धूळ नैं हाक थू करती थूकबा लागी, पछ जोर जोर सू बोबाडा मारणैं लागी।

अेक सुबेदार अर दो जवान दौडया आवै हा। भाई वानैं अठीन आवता देखर मून मून ऊभो रैयो अर भाभी नैं होळ सीक कयो— लिछमी? ढब जा! म्हारी जामण, कठैई साब नैं पतो चलग्यो तो म्हारी नौकरी !'

म्हैं टाबर नैं गोद म उठायो। भाभी रोवती की ई माळी पडी। सूबेदार कन आवता इज पूछ्यो—'कौन है? क्या बात है?'

—'यह तो मैं हू साब!' —भाई जवाब दियो।

—'भीमसिंह तुम? यह औरत कौन है! क्या बात है? —सूबेदार पूछियो।

म्हैं बीचैई बोल्यो—'यह मेरी भाभी है भाई स मिलनै आई है। बच्चा बीमार है। इसलिए रो रही है। हिवडा माय ता म्हैं खुद रोवै हो—'हाय रे लुगायी जात! थारी आ दुरगत?

भाभी भूधटो काढ र बैठगी ही। सूबेदार बोल्या—'भीमसिंह। कल हम पटानकाट जाना है, तुम तैयारी कर चुके? अभी तुम्हारी ड्यूटी भी है। चलो, बहुत हो चुकी बात! बच्चे के इलाज के लिए इस कुछ पसा वैसा दे दो और रवाना करो। जल्दी आओ, कहीं साब को पता चला तो अच्छी बात नही होगी। —'इतो कयर सूबेदार अर जवान चल्याग्या हा। म्हारैं थोडी सास म सास आई। भाई आपरा खूझ्या सू रिपिया काढ र म्हन देतो बाल्या— ल, द बाळ इण राड नैं! और जरूत होसी ता पठानकाट सू खिना दू ला।

म्हैं रिपिया भाभी र हाथ मे थमाभा ता वा अेक कानी रिपिया फक'र चुप-चाप वहीर होयगी म्हैं रिपिया उठार भाई नैं पाछा न्या। भाई कैया —'जा, उणनैं ठेठ घरै पुगा र गाव चल्या जावै। तडक आज्यै, मिझया न म्हैं लोग चल्या जास्या।'

म्हैं भाई सू सीख लेयर तेज पावडा भरता फरलाग भर आगै आ'र भाभी रै साथ होयो । टावर म्हारी गोद मे सूतो हो । आगै आगै म्है चालै हो अर लारै लारै वा । सियाळा री चानणी रात ही, चौफेर सूयाड ही । भाभी रो गाव महर स आयूणी थाव म कोई कोस भर अतर हो । म्हैं दायू मून मून जाय र्‌या हा । म्हैं भाभी न कैयो—गुस्सो थूक दो भाभी ।'

—'मरगी थारी भाभी ।'—वा गुस्सा म बोली ।

—'अठ आपनै नी आणा चाइजै हो ।'– दु खी भाव सू म्है कैयो ।

—'तो कठै जावती ? किणी कुअे बावडी मे जा धमक्ती ?'

म्हैं मून होयर आगै चालण ढूकगो । मडक रै दोयू बाजू ऊभा रूखडा माथ साथ कर हा । इण सुणसान चानणी रात म भाभी र पगारी पायला अर चादी रा आवळा री खणमणा'ट बाज ही । म्हन दादा-सा याद आव हा । व बारोडी मे बठा बठा म्हारी उडीक करता होवला । बारती रा खीरा न टीटका सू थाल देता तपता होवला क चिलम फूकता, नासतोडा म्हारी चिंता कर रया होवला ।

भाभीसा झुरमुटया रा अधारा म अचाणचक डर'र ऊभी रयगी अर बोली—'म्हन लखाव है क कोई चुडल म्हार लार लार चाल है । थे म्हार सार सार चालो, म्हन डर लाग है ।'

म्हैं एक र उणर लार लारै चालण लागो । वा अचाणचक पायखे वढाण सू रुकगी अर बोली—'छुळयावण ! छुळयावण !!'

—'कठ है ?'—म्हैं पूछियो ।

'आ साम्है आय रई है । —भाभी नवा हाथ कर'र बोली ।

म्हनै कोई पोळी पट जिणस साम्है आवतोडी दीखी । काळज धकधको तो अेक पळ म्हार ई लागो पण थाडी इज टम मे म्हैं देख्या—कोई गधा मटक्तो ठाठ सू आय रया हो । म्है भाभी नै धीजो वधावता भरम हटायो —'भाभी सा ! आ तो गधेडो है माळा !' उणन धीजा हाया तो आग बढी । गाव कन आयग्यो हो । मडक सू रस्तो फाट र सीधो गाव कानी जाव हो । गाव फरलाग भर इज आतरो होवला । म्है भाभी सा सू अरज करी – भाभी सा ! म्हैं जाऊ काई ? अवं आप चल्या जावो तो ठीक है ।'

—'नहि नहि ! घर ताईं चालो । अेकली गई तो वै लोग काईं कमी ? पछी ई म्हनै घर म राखसा स्यार नी है अर आज तो उडीक करतो होवला म्हारी मा राड !'

—'तो झट चालो भाभी ।'

म्हैं मडक सू गाव रा रस्ता माथ उतर आया हा । गो चार पावडा वढाया हावाला क वा डरप र रुकगी । पछ बोली—'दखो, वा छुळयावण केरा माथ ऊभी है । म्हन हाथ रा झालो देय री है मानजादी !'

म्हैं कयो—कठै है भाभी ? आप र मन रो वेम है ।'

वा म्हारी वात न अणसुणी कर दी अर वेग कानी जाण ढूकी। पलो तो म्है छानो मानो देखतो रयो, पण पछ म्हैं आग बढ'र उणरो हाथ पकड़'र ढाब दी। वा म्हार माथ रीस करती बोली—'सरम को आव नी, भोजाई रो हाथ पकडता ? औरत रो हाथ उण टम पकड्यो जाव है, जद वा सेमूदी वेआसर होव क आग-पाछ कोई नी होव। हाल तो म्हारो धणी जीव है। कोई रो दियोडो नी खाऊ हू छाड म्हारा हाथ ?'

म्हैं हाथ छोड दियो, घडीक भर म्हार डील मे कपकपी छूग्गी, पसीना-पसीना होयग्यो ठड म! वा इत्ती हीमत र पाण बान कयगी क म्हारी सगळी सकावा बायरो वण र उडगी। म्हन वा लुगाई, लुगाई लागी। अेक धरमपरायण सत री लुगाई लागी! हाथ छोडता इज वा वेरा कन आग वढगी अर पछ वेरा र ओळयू दोळयू फिरवा लागी। म्हारो काळजो धक धक करण लाग्यो। उणरा आखो सरीर धज हो अर वा केस विखेरती वेरा री डोळी माथ चढगी। म्है धूजतोडो उणरो पूणचो फुरती स पकड'र हेठ खीची अर कयो— भाभी गलाया क्यू कर है ? चाल, घर चाल!'

वा बोली— मन ऊ बस्ती जवरी मती लेई जा! खोटा सुगण वगा! आ म्हारनी जग पिसाब करवे नी महार ऊपर थूको हो! म्हें मगली न बरजी भी ही, पर आ म्हारी बात प हम र रूवान वगी! अब इण भुगतणो इज पडगा ?

भाभी री अवाज मे अेकदम फरक आयग्यो हो। वा काळवेळया री बोली बोलण लागी ही जिका म्हारै वास्त हेप री बात ही। उणन होस जराई कोनी हो। वा नी आपर मता काइ-काई बोल्ती जाव ही। म्हन लागो कदाम मार पीट सू दिमाग भमग्या है, इण वास्त वा गलाया करण लागी है। म्है भाभी न पूछ्या—'भाभी, था थारा म कुण वाल है ?

वा जवाब दियो—'म्है जमनी काळवेलणी हू। कर री जगा म्हारी है। म्हारा अठ रवास है। आ वयू कर र सामी धोळा-दुपारी अठ पिसाब कीयो ?'

भाभी रो बदल्योडो टान हू व हू काळवेल्या ज्यू हो। म्हनै भूत परत डाकण क छुळमावण प विसवास कम इज है। भाभी नाटक ई कोनी कर। म्हार वात की इ समझ नी पड रई ही। वा बोलती जाव ही अर म्है उणन जबराई खीच र गाव मे ले आयो हो। गाव मे घुमताई गळी मे भाभी रो घर हो। घर म दीवा वळै हो। म्है कूठियो खटखटायो। किवाड उघड्यो अर उणरा मा-वाप दोयू बार निकळ्या। भाभी हाल ई बीमर ही। बेटी रो ब हाथ पकड'र मायनै ली अर छारा न उणरी नानी गाद म म्हार स ले लिया। हाल इ भाभी न होस बरोबर नी हा। म्है वठ र वियाई-व्याणजी न सगळी वात वताई। म्हारो वात सुण'र ब्याणजी बोली—वियाईजी! दिन म इणन धणी नरजी, पण फेर ई वठ उब्ली। मादगी क फट-ब्वोट री हालत मे आपर घर सू वार जाणा न क्यू ? धणी न लुगाई लेजावणी होवैला तो अठ आसी आप इज! पण बाप इणनै धणी रा समाचार काद दिया तद सू मिलवा री ऊगम चढै ही मन मे। जिद्ध कर र गत सू पाधरी न्हाठी वठ ? माग आवण री म्हारी हीमत ही नहिं अर वाप वापडो

'मिल' री रातपाळी सू थाडी टेम पैली इज आयो है। घणा दिना सू अेक चुडैल इणनै लाग राखी है। जाणतेर बुलार तावीज बधाया, डोरा डाडा करवाय, देवळियै न थान लयगा, पण दिनू दि इणरी हालत विगडती इज जाय रई है। कदै कोई काठो बोल जाव तो लडवा ढूक जावै अर पछै बेहोस हो जावै है। सावळ रव जद जमाई रै वास्तै मगज खराब करया करै है। कव क माग जाऊला ता बठै इलाज करा देसी तो ठीक हो जाऊला। पण चुडैल लाग्या पछ निकळया करै है काई ? कोई माथा ऊपरला जाणतेर हाव तो बात न्यारी है।'

म्हैं कयो—ब्याणजी ! ओ आप लोगा रो कोरा भेम है, कोई चुडल-सुडल कोनी। घर धराणी र कारणा सू इणरो मगज भमग्या है कणच ! भाई न समझा बुझा'र कठ अेक जागा पोस्टीग होवला जद भिजवा दस्या।'

—'अरे जमाई गे बात मत करा, उणन आपरी लुगाई री फिकर थोडी है ?'

—'नी, इसी बात कोनी ! वो आवतो इज तो इणर खातर गाव नाठ'र गयो हो, पण आग लाधी कोनी अर पछ जणा जणा उणन भर दियो खाटी बाता बतार ! काळ म्हैं उणन जा'र सावळ समझा देसू, आप लोग फिकर मत करा।'

इत्ता म भाभी रो जाग्या भमगी ही, दाता कसी मिलगी अर होठा सू झाग उगट हा। ब्याणजी अेक चीमटो लेयर दाता-कसी खोली अर पछ मुडा माथ पाणी छिडक्यो। वा कोई सू बाचा लव ही अर बालवा, मागण्या माग ही, पण टौन सारा काळनलगी रा इज लाग हा। आध घटा पछ उणन होस आयो। वा ठीकसर बाता करण लागगी ही। पछ मून हायर बठगी। म्हे उणन पूछिया—'अब किया तबियत है ?'

वा होळ सीक बोली—'ठीक हू देवरजी !'

म्हैं कयो—'भाई तो नालायक है सलणवायरो है। म्है उण नै समझा देसू।'

—'नी नी ! व म्हारा धणी है, देवता है। म्हार वास्त उणर हिवडा मे घणी जागा है। वान की ओळमो कोनी !'—अर वा मून होयगी।

चुप्पी देखर म्हैं कयो—'तो भाभी, अब म्है जाऊ ?'

'जावो।'—वा धीर सी बोली।

म्हैं इण बात री वाट इज नाळ हो। ऊभो हो'र वा लोगा सू इजाजत लेयर म्हार गाव वास्त वहीर होयो। चाद ढळ हा। चौफेर सुणसान हो अर इकल्लो म्है ठढ म धूजताडो सडक माथ चल्यो जाव हो। म्हैं तेज पावडा भरतोडो गाव पूगो। पोळ मे पुसताई गिडक भूस्या। दादा सा खास्या। म्हे सीधो उणा कन बारोठै म पूगो। दियो जगर मगर बळ हो। दादो सा बास्ती सिलगा र तप हा। सूवा तक मोरा माथ कावळो आढियाडो हा। खुडका सुण र पूछ्या—'कुण, हरू ?

—'हा, दादा सा। म्है हू।'

'इत्ती देर कठ लगा दी बेटा ?' व बास्ती म टीटका रो ओरू झावो दियो अर धुआ करताडा धीरया न रास मे ओठ दिया। पछ आपरी सुलफी जरदा सू भरी।

साफी भीगो परी, उणर लपेटी न अेक गोरा माथ मेल'र सुठ खच्यो। मुडा सू धुओ काढ'र पूछयो—'थाणा सू तो सगळाई लोग कदकाई आयगा, थू इत्तो मोडा कठ करयो ?

म्ह कँयो—'बजार म भीमो मिलग्यो हा। उणर साग वीरो अफसर ई हा, म्हनै पकड'र आपर कॅप ल्येगा हा। आज तो वेजा फस्या।'

—'काइ होयो र ?'—दादो सा पूछिया।

— होयो यू क बठ भाभी आयगी ही। उणरी लुगाई! जोरदार बजियो होयो अर ! ' म्हैं दादो सा ने पूरी वात विगत वार बताई। चाद आयग्या हो अर ऊगाणी माग फूटवा लाग ही। म्हैं पछ साळ मे जाय'र सूयग्यो हो।

दुपारा कोई बारा बजिया काकी सा म्हन जगाया। म्है मटकी सू लोटो भर'र ओटा माथ मुडा हाथ घोवे हो। माम्है नीबडा हट्ठ बँटोडा मिनखा र बिच काकाजी निग आमगा। व म्हनै देख र पूछियो—'रात न थू भीमा र सासर जाय'र आया हा काइ ?

म्ह आरया प छपका मारतो कयो— हा हा ! जाय र सो आयो। काफी मोडो होयगो हो।

— भीमा री लुगाई री काई तबियत ज्यादा खराब ही !' —काकाजी पूछियो।

—'की नी ! थोडी दिमाग री कमजोरी है, वैडी ज्यू वाता क्म-कद करवा लाग जाव।

काकाजी बोल्या—'यत ठा है ? तडक वा फौत सेलगी !'

इत्तो सुणताई म्हार मुडा माय सू कुल्ला रा पाणी छवाक करता बार पड यो अर हाथ सू लोटो नाळ मे गुडकतो वो जाय। म्हैं भारी अचरज अर हैप सू पूछियो—'काइ बात करो हो ? म्ह राजी खुसी छोडर आया हू। वा मर किया सक है ? नी नी इया हा इज नी सक है।

पण म्है मौत न झुठलाय तो नी सक हो। बात तो जिकी होवणी ही हायगी ही। पछ काकाजी सावळ बात बताइ अर कयो क उणर दाग मे जावणो है। म्है पूछिया भीमा न इण बात री खबर है क नी ? आज वा पठानकोट जा रया है।'

—'जाचक आया हो वो बतावता हो क बठ खबर कर र इज अठ आया हो। थू चालला ?'

— म्है अबार फटाफट निपटर आऊ। —अर म्हैं निपट निपटार त्यार हायर नीवडा हेठै आयो। इणीज टेम जाचक हाफतोडा आयो अर बोल्यो— 'अनदाता ! जेक खाटी खबर लायो हू। माफ करज्या। आपरो भीमा, उणरी लुगाई बाईसा गगन री उणियारो देखता इज फात सेलग्या। रामसरण हावण र पला बठ मिल्ट्री रा

डागदर ई आयग्यो हो, पण की नी होय सक्यो । रामजी री आ इज मरजी ही कदाच । सगळा कव हा क कुवरजी ता लुगाई री पीड मे अमूवणी खायगा ।

इत्तो कवता पाण इज कानूसा अर भीमा रा वडा भाइ दानू अेक साग काठी बाग पाडी—'ओ म्हारा भीमना ऽऽऽ आ ?'

कन वठा दादा सा गीली आख्या सू धमकावता बाल्या—'अरे, माव इज ढाढा हो कांइ ? वो अेक मरघा, थ माग मरोला काइ ?'

भीमा रा वडा भाई तडाछ खायर हैठ पडगा हा अर सुणावणी सुणताई घर म लुगाया ई भळी होयर रावण ढूकगी हो । वडा भाई र मुडा माथ दो चार खुणच्या पाणी छिडक्या जद वो बठो होयो । दादो सा दाया न धमकावता घणी मुसकल सू ढाब्या । म्हारी हालत ई खराब ही । बठै बठा सगळा लागा रा मुडा उतरयोडा हा ।

थोडी खायत होई तो म्है लोग सलाह करण लागा क दोया न अठ लायर आपा रा मसाण म दाग देवा । पण जावन बताया कै वा दोया र दाग रो बदावस्त बठ इज हाय रया है । भीमा रा अफसरा री आ इज मरजी है । व बाकायदा फौजी रीत सू दाग न्वेला । सगळा लोग आप लोगा री उडीक कर रैया है ।'

इण बात माथै घर म बमेडो ऊभो होयग्यो, पण दादोसा ई तो फौज म रयाडा है, सा बात समझ हा । व सगळा न डाटताडा समझाया—'वडा हो थ ता ! फौजी जाजा मरघा पछ तकदीर वाळा न इज मिल है । चालो सगळा ई वठ ! सब्री ल ना कफन तो स्हैर सू लेता चालाला ! अब जैज मत ना करो ।'

सगळाई दादो सा री बात मानग्या । म्है सगळा वहीर होया, उठ जद पूगा ता फौजी अर अफसर सगळाई ऊभा हा । वनै इज बरो बड काई दरद भरा धुन बजाव हा । वारण दो अरथिया कनै कन सज्योडी ही । मायनै घर म लुगाया रोव ही । दोवा रा मडा उघाडा राख राख्या हा, ताकि आखरी उणियारो लोग देख सक । म्है सोच रयो हूं—कदाच सारस री जोडी मिनख जूण म आयमी ही । अरथी उठायी गइ अर म्है नाग बारी बारी सू दाया न काधो दियो । मार्ग बड री धुन मसाणा ताई बाजती रै इ । अरथिया पछ धू धू करती अेक साथै धधक उठी । दा यारी-यारी अरथिया री लपटा बायरा म बळ खावती अेक दूज सू लिपटै ही जाण अठ ई वै कोगत राळ कर रया होव । जाण व झगडो अर प्रेम कर रया होव ।

उठा सू म्है लोग उदास उदास घर पाछा आया । आग हाल ई लुगाया रोव ही । म्हारा दादो सा छोरा नै आपरी खोळधा सू उतारर काकाजी न थमायो अर व मायन लुगाया मे देयर आया । वडी मा री गोद मे जावता इज रोवतो थमग्या हो । सगळा लाग गुम सुम हायर वठा हा । अठ म्हार सू रुक्यो नी ग्यो । इण वास्त अवराई र हैठ जायर वठग्यो हो । बठ अेकला बटर म्है खूब खूब रोयो हा अर सिंड्या न काकासा अर वडा भाई म्हन हैरता हैरता आयगा हा । म्हारो काळजा फाट हा पुराणी यादा न लयर । म्हन बडी मुसकल सू व लोग घर लयगा हा ।

अबार आबा र मीजरिया कोनी ही अर नी कगिया लटक ही पण यादा म

म्हनै लखाय रयो है–म्हे दोवू अठ अचपळाया र रया हा। काफी साला र पछ अठ आयो हू—पुराणी आळू रा लवडा उभेलया न। अचाणचक पाळ र उण कानी तळाव मे सारस कुरळाया। वा री अुवाज का मे पडता इज म्हारो हिवडा भर आया अर आख्या सू झर झर मेह बरसवा लागा। सूरज आयग्यो हो अर मिझ्या आपग पल्ला न फैलावतो अधारो कर गई ही। हाल चाद नी उगो है। ज्यू-ज्यू अधारो वध रयो है—म्हारी आख्या म ई जाण अधारो घिरणै लाग ग्यो है। इता म म्हारा काकासा आज ई म्हन हैरता हैरता अठ आय पूगा है अर म्हारा बावटधा पकड'र म्हनै ऊभो करता कैया— पढया लिख्यो समझदार होवता थका ई वडो वडा रण है ? अब भाई अठ पाछा थोडी आवला ?

अर म्ह वा र पगं माथ फूट फूटर रोवण लागग्यो हू। आख्या मू रळा ई रळा वकण लागग्या है। जाणै वै रेळा वाळ्ळो वणर तळाव माय जावै है, जठ काई सारस री जोडो ऊभी है—अर म्हें दोया न भाई भाभीसा समझ'र आतरै सू ताळीम करतो जाय रैयो हू। भाई भाभी रा उणियारा म्हारी गीली आख्या मे आज उभम जाया करै है। आज ई काई सारस री जोडी नै देख र म्हे उसक-वसक रावण ढक जाऊ हू।

□

मायनै होवै राखस

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

वी रै होठा माथै अेक अरथाऊ अर तर तरै रा चिलका दिखावती मुळक नाठगी। अैडी मुळक कूटनीतिज्ञा र होठा माथ ई मिल का फेर कुटव करणिया र होठा माथ। अडो मुळक रो आप ठीक मतळव कोनी लगा सको। आ ई नी बताय सका क वा कवळी है क करडी। काळी है क गोरी। हा मे है क ना म। साची वात तो दूजी ई निवळ क था जिका अरथ लगावो, उण मू वो उघो ई निकळ।

वकिम र होठा माथ घडी घडी रग पलटणी मुळक नाच। वी री उमर पचास र नडी। दा छारा। दोनू मोटयार। दोनू न वो जिया चलाव ज्यू चाल। लाग क दो घोडा होव अर वकिम दोनू रो कोचवान। इणन वकिम आपर लारन जलम रा पुन मान।

वकिम घणोसीक चुप रव। जद कदई मुडो खाल तद वो मोटा मोटा चोखा, फूटरा अर ओपता वाक्य बोल। आदरस रा वाक्य। कदई कदई साधु सता ज्यू वाता कर। पण म्हैं जाणू मैं वी रै कवण मे अर करण म घणो ई अन्तर होव। वी रो ओ जतन रव क की ई होय वी र बळ पडतो होव। फायद रो होव। पतो नी, कुण मी कुठा वी र मायन कुडाळिया मारियोडी वठी ही क वी न आपर फायद र सिवा की ई सूझतो कोनी। अठ ताई क आपर घरवाळा र बाबत ई वा आई सोचता क क वीन फायदो पूगाव क नी। मौक टौक वी आपर टाबरा टीगरा री जस गाथा गावतो तो ई वीं र होठा माथ वा ई अरथाऊ मुळक रवती जिण सू वी र घरवाळा आ नी जाणता क वो स्तुति कर क मूड। वा सफा अेकलखारो हो। किणी सू माळेपो नी राखता। किण सू भेंटा ई करतो तो आपर डिपाटमटल स्टोर म।

वी मे अणमावती नरमी अर सालीनता ही। वा आपरी अमेट मुळक र साग पावणा री अगवाणी-करता। पावण न लखावतो क उण न देख'र वी न मोकळो हरख हायो है। आ कबत साळ आना वी माय जचती—मु मे राम वगल म छुरी। वा इत्तो सुवारथी क जिक सू फायदा होवतो वो सू भीत ई चाव सू बालता—'क भाई थान म्है पूर सात दिना सू उडीकू हू। थे तो बीच बीच मे भूत पलीत ज्यू छाइ माई होय जावो। विस्वास राखा इणगी आपगे धणी ओळू आव ही। अेक दा दफ कवो फसग्यो। हिवक्या ई आई। आपरो डील ता चोखो हासी?'

पावणो वी री वाता सू गळगळो हाय जावता।

जे वो किणी परम री परचेंजिग अपसर होवतो तो वो फटाफदेसरी चाय पीवण रा नोरी काढता। फेर फोल्डिंग चेयर न खोलता ववतो— 'आप विराजो। फेर उणरी प्रसमा मे मरदा री ढीगली नगायन रवतो क वो न की आडर देयर इज जावो। जे काई माथिया भाई आय जावतो, चाव वो वी री समो ममधि ई क्य नी होव, वा थोथा चणा ज्यू बाजन रामा माभा कर लेवतो। फेर मूळक्ता रवतो, माली फीकी फीकी मुळक। वी न वो चाय पाणी रा नोरा ई नी काढतो। आपरै काम-काज री जडा-आडी पोळावतो व वापडो आपरो दत्तो सा मुडा लेयन थूवो जावता। जे काई वडो अफसर उण र अठ ममान जेवण न आवतो उण सू ममान रा पद्मा नी लेवतो। आपरी अरथाऊ अर फीकी मुसकान र साग ववता, 'अ चीजा आपन गिफ्ट। ओ स्टार ता यारो ई है कोई लूठो ओडर दिरावा नी सा। फेर उण सू आपरा ऊंचा सूधा काम कढावतो रवतो फेर ज्यू ई उण अफसर री बदळी होवती 'व सगळी चीजा रा विल बणाय'र आपर छोरै कन सू दस्तखत करायन भेज देवतो। जे कदई वो अफसर ओळमो देवता तो आपरी सदा सुवावणी अरथाऊ मुळक र सागै टैसर री सौगन खायन आपरो अण जाणपणो बतावतो।

वो विरथा सवदा न नी उगळता। किणी न रफूचक्कर करण वास्त वी रा मुळकणो ई मोकळो हो।

वी मे मूगओ सुवारथ हो। घणी आगली सावतो। चाय ईसर री किरपा ही का वी री मावचेती, पण वो न सुगन स ई पत्तो लाग जावता के की आफत तूटणवाळी है। वो घर बार री सगळी वाता री निगदास्ती राखतो कुत ज्य कान ऊंचा राखता। वी री दीठ सू सात ओरा मे होवतो काम नी बचता। गिरज दीठ ही उण री। जे कोई वी र खिलाफ काम करतो न चुगली खावतो तो वो सीधो सट्ट ब धीमा होयनै वी न घणी सावचेती सू माता खाना चित्त कर देवतो अर वी रो दुसमण तो पाणी नी मागता। तद ई वीर हाठा माथ मुळक पळायत रवती।

जद वी रो बाप डाकरा होयग्यो अर वी म घर चलावण री पूच नी रई। तो ई वीर बाप सू धन रा मोह नी छूटियो। धन माथ नाग ज्य परो देवतो। वी न आ बात चोखी नी लागी। वा फटाफट आपरै भाया नै भेळा करिया। आपर मुळकण र मागै दुख जतावत वो कयो आपा चार भाई हा। आपारो बापू डोकरो होयग्यो। अब व कारोबार नी सभाळ सक। सूझ कम। धासी ई लारो ना छोड। धासती बगत आ नी त्खाव क अ कित्ती दोग्प पाव ईसर-सू विनती करू क अे डोकरा सौ बरस जीव पण आ तो परभु हाथ है। पण यान आ नी लखाव क मिरत्यु इणा र उणियार माथै इरा नाख दिया होव। ईसर इणा न सोरा-सुखी राख। माइता रो छावोलियो ता बडभाग्या न ई मिल। फेर आपा चार भाई राम लखण भरत, सतुरघन जडा अवार हा। धन चोखा चोखा र वैर घला देव। काल इण धन न लेय र मना म मैल पड जासी। आपा र विचाळ नटठ बाजण लाग जावला, आ बात काइ फूटरी लागसी? इण वखत न कुण जाण काली क जर जोरू जमीन झगड री जड होव।' वी फर नूव ढग सू मुळक र कयो' म्हा की ई नी चाइज। बापूजी मार जी सू हाथ उठाय न द

देमी सिर माय राख लेवूला। पण पाती इणा र जीवत थव होय जावणी चाइजे।'

'पण बापू न इण सू चोट पूचसी।'

'बिजलाडा ! म्हारी बात न थराई सू समझ' राजी-खुमी यारा हावा जिक म वा भूह कानी। जित्ता भाई उत्ता घर।' वो लावो सास ल्य न कया आ कळजुग है। आ की ई करवा सर्व। भाया मे राड करवा सक। वा न कोट कचेडी चढवा सक। बाप र साम्हे वेट री जुवान खुलवा सक ।' वा चुप। फेर मुळकया वा मुळकणा काळा हुट्ट हा। पछ वी रो मुळकणा चिलका मारण लाग्या। आपर हाठा माथ जीभ फिरा'र वा बाल्यो, 'अरे भाया, जमानो चाखो नी ! अबार ता भाया भाया र बिचाळ इत्ती फूकफजीती होव क माइता रो जमारो ई बिगड जाव। कोट-कचेडी मे जायन देखा कुण किण री पाग उछाळ। लेवता ई लेखो है ! वगत थव फुटराप रा काम हाय जाव जिकोई चाखो। साचो आपार बापूजी रा धन आपर बूकिया रो कमायोडो है। इण वास्त इण रा फमलो अे खुद करसी। अे जिक न चासी, वी न आपरी मरजी र मुजब दसी। इण सू घर मे भीता नी पडली। आपा रा भाइपा छोटा नी हावला।

वो सदैव आ नाटकबाजी करतो रैवता। छेवड भाया मे जारदार वतळ हाई अर वी सगळा सू चोखी पाती ओ डिपाटमेटल स्टार ले लिया। अमल मे वी निराति म आपरै वाप न बूझा दिया कै वो खाली बीन ई चाव। वै चाव तो स्टोर मे आपरा सीर राख सक। व आपर ईसर अर टाबरा री कूडी सौगन खायन कयो। 'थे माना ता कानी पण म्है साची कवू हू क अे थारा तीनू जायाडा थार मरण री माळा फैर। आग्या फाडन उडीक राख म कद बापजी सुरग सिधारसी। थे जाणो क फेर म्है सगळा आपस मे जूतमजूत हावाला। वी करडैपण सू कया।—'व तीनूवा अेकठ करली। सायत छान औलै दवाई री जगा विस द देव। म्हन ता ओई लागै क अे थानै नस री गाळी खिलायन कागदा माथ थासू अगठा अर दस्तखत नी करा लेवै थ बिचार'र देखा। वो उण वगत ई मुळकियो। वी र हिय रो काळमस अर जाळियो मिनख वी री मुळक मे लुकायो। सेवट वी र आळ जाळ म बाप आयग्या। फेर वी अैडा कबाडा करिया क वापार म घाटो होवण लाग्यो असल म वो खोटा करपरा सगळो माल डकारग्या। फेर आपरै बाप सू अणजाण बणग्यो। पिछाणनो छाड दिया। घडी घडी होकडा बदळनै में वो घणोई चतर हा।

जद बाप नै सौ करम पूगग्या तद भाया म सागोडी फूकफजीती होइ पण वा खाली मून धारयोडा मुळकना रैवतो। थावस खावता कोनी। मायली बात बतावतो कानी। कोई पूछता तो कैवतो, म्हा भाया मे तो की झगडो कोनी। बडा हेत है। अर डाकर भरत पाण जिक मै राजी राजी हाय उठायनै दे दियो वै वो ले लिया। सवट सारो धन ता बाप रा ई है।

वो किणी री ई निंदा नी कर। माय री माय भाया रा पग बाढ। घणी हुसि यारी सू वा भ भिडाव जिवै सू वै न्यारा-न्यारा रैव।

वो चौसठ घडी अर आठा पौर आपर अभावां रा रोवणा रोवता रव ! अठ ताइ य आपरी धणियाणी अर टाबरां न ई साची बात नी बताव ।

वा खाली आपर ना हा नान्हा सुवारथां रै वास्त जीवता हा । मौत ई मन रा मैला हा । सायत वी र जीवण रा आ ई लेखा हा न वा जिको ई करता, मुळकन करता चाय वा मिनख न ई क्यू नी मार ?

इयां य गिरा न मारथा ई है । उणा री हित्या करी है ।

हित्या ? निगका नी ? हित्यावां ई भांत भांत री हुाव । तीर तरवार सू, चाकू छुरी सू, लाठी य दूक सू गळो मसास परी ई ! पण वो जिक री हित्या कर वी र डील माथ खराच यानी हाय ! वो जिग री हित्या य रता वा हाय पग चारो लागता पण माय सू मर जावता ! थाथा होय जावता !

यकिम आपर हिय री क्रूरता अर जिनावरपण सू आपर चाकरा री हित्या कर नाखी ! अेक बूढ़ा नौकर लरापत हो, दो माटयार नौकर हा । अेक थी री आदमण बरजी बाई ही अर अेक थी रा परवा भायला हा !

बूढे नौकर न बी फूटी कौडी दिय बिना ई काढ नाखिया ! उण सू वास सू पूछो रसीद बणायली ! जद हिगाव रा रामै आया ता वो अेकदम नटग्या ! जीवती माखी गिटग्या ! डोकरो बापडो रावता रया हाथ पग पडता रयो पण भाटो पिघळ ता वा पिघळ ! काई समपायक पचायती करण आवता ता या मुळक'र भाळपण सू कवता— क्यू माथा खाया म्हारी डोकरै सू की ई लण दण कानी । मूड री बात रो काइ मोल ? कागद साचा ता बात साची । जावो फाट-कचडी रा बाडा खटखटावा !

सगळा पणाई ऊचो-नीचा लिया पण बकिम मुसकियो ई कोनी !

इण तरिया उण री प्रेस रा दो करमचारी अेक दुरघटना म पागळा हाग्या ! वी आपरी मावणी मुळक सू बीन मावत थक गया, 'इण म म्हारो काइ कसूर ? आ ता हावणहार लाग ! थे जद सावचेती सू मसीन चलावता तो आ अणूती नी होवती ! पण होवगी जिकी होवगी ! म्हैं थारो भाई हू खारास नी । इण वास्त मानरा न धरम मान'र म्है था लोगा री सायता करला ! थारै इलाज रा खरचो उठावूला । अर थान नौकरी सू नी काढ़ला ! था जाग धध री जुगत बिठावूला ! ज म्है अडा नी करला तौ थारा टाबर टीगर गळया म रुळ नी जावला !'

करमचारिया निरो ई धमकायो ! कोट-कचडी रो डर दिखायो ! यूनियन वाजी रो आतक बतायो पर वा सायती सू सग बाता सुणता रयो ! व घडी घडी आ ई कयो, म्हैं मिनखपण सू सोचू ! था जिया उतावळ नी कर ! थोटोक विचारा कोट-कचडी रा न्याय सस्ता कोनी ! माटयार सू बूढ़ा हो जावाला चक्कर काढ़त काढ़त पगा री पगरख्या घिस जावली ! फेर फसला थार पख नी हाया ता काइ कराला ? आख्या अगाडी अधारी आ जावली ! टाबर टीगर रुळ जावला थे भूगां मरता मर जावोला ! म्हैं आपां र देसटल र न्याय न चोखी तरिया जाणू ? जीवत

थक मिनख रा जीवत रा परमाण मान ! म्हारी माना परेम सू हायाडा कोई काम फलदायक हावै !' फेर वी वडी वडी वाता सू उणा न जो नहचा करा दिया क हू कवू जिको ही सौळ आना ठीक है !'

आपरी जूनी आदमण न ता खाली सौ रो नाट झलायन रामा-सामा कर लिया। जद आदमण कया क थागी मा म्हन आ कया हा क थू ऊभी आइ है अर आडी जावली । तो बकिम मुळक'र कयो, 'डोकरी ! मरग्या जिका री वाता वा र साग ई गईपरी ! फेर दूजा र आगण मे पसरणा पाप होव । खुद रा आगण चाव तूटाडा ई क्यू नी होव पण वी म पसरयाडो सीधा सुरग सिधार ! जाव मावड जा मिरत्यु आपर आगण म ई ओपती लाग ! थै सू हाथ पग ता हिलाइज कोनी फेर जठ क तदूरा वजावली ! जाव परभु थारा भला करै ।'

अर भायल री हित्या करण म ता वी नूरता अर राखसपण री फाकड ई लायली ! वी रा भायलो रजन इनकमटक्स डिपाटमट मे हा ! सागीडी घूस लावता । मोकळा रिपिया भेळा करिया । बकिम वी न गरी अपणायत सू जापगी मुळक म फसायन कया, रजन ! थू म्हन रिपिया ब्याजूणा दे देव थन म्है म्हार नूव फरम 'ब्रदर एड ब्रदर' म सिरखाळी बणायलूला । म्हन सायरा मिल जामी अर थारा रिपिया धीम धीम 'व्हाइट' हावता जासी ! बकिम वडी चालाबाजी सू रजन री बऊ न आ भरोसा करा दिया क वा उणा रा हेताळु है ।

चोर री मा कित्ता दिन खर मनामी ! सवट अकदफ घूस लता रजन पकडी जग्या । नौकरा सू वरखास्त होयग्या ! आ वात अक्दम साची है क घूस लवतो जिका पकडीज वो घूस देयपरो पूठो छूट जाव ! पचास हजार म मामला तय हा ! वो नाठ'र बकिम कन गयो ! वी रा बकिम माय अस्सी हजार रिपिया जमा हा !

वो जाय'र आकळ बाकळ हायन कयो, 'भायला म्है काळीधार डूब जावूला '

'के हायो ।'

रजन सगळी वात बताय र कया, 'म्हनै अबार रा अवार पचास हजार रिपिया चाइज ।'

'अबार रा अबार— रिपिया रूख र थाड ई लाग्याडा है क झिडकायन भेळा कर लू । दो दिन लाग जासी ।'

व दो दिन फेर पूरा नी होया ! अेक महीणा बीतग्या ! वा टाळमटाळ करतो रया ! भात भात री मुळक साग टाळतो रया !

रजन रा थावस तूटग्यो ! अेक दिन वी बकिम रा गळो अपडन चिरळा र कया ! थू मिनख कानी राखस लाग ! कूडा-कपटी ईसर सू डर म्हार टावरा अर बऊ माथ दया कर ।'

वा तद ई मुळकतो रयो ! फेर वी रजन न आपर चपडासिया सू बारण कढवा दिया ! वो चिरळायो गाळया काढी पण उणरी मुळक माय कमी नी पडी अर रजन वापड न जेळ होयगी !

बकिम उण री बऊ र साम्है सपफा नटग्या क वी रिपिया उण सू लिया ई कोनी। डकारग्या अस्सी हजार न । गिटग्या जीवती माखी ।

पली दफ इण बात माथ उण रा छोरा रिसाणा हाया। बड छोर कया, 'पापा ! ईसर सू डरो ! उण र घर देर हाव पण अंधेर नी ! थान डर लाग चावैं नी लाग पण म्हारो काळजो धूज ! लाग इण पाप सू तो नरग म भी जग नी मिल । '

वो उणी तटस्था सू मुळकियो, छोरा ! पाप पुन नैं थू किया जाणनैं लागग्यो ? अैं तो म्हारी समय री बातां है। थनैं के ठा कै म्हे रजन सू रिपिया लिया हा ! की भेजै सू सोच ! कै इनकमटेक्स रो अफसर इत्तो मूरख होवै ? वो पक्का धूरत हो ! बी दोनू हाथा सू परजा न लूटियो । उण रो फल बी नैं मिलग्यो ! अठ ई नरग होव अर अठई सुरग !

छोरा न लखायो कै जाण उणा रो बाप बाप नी, पुराणा रो दैत्य हायग्या हाव ।

फेर छोटोड कया । 'पापा ! जीवती माखी गिटणी सोरी कोनी ।'

वो मुळकियो । उण रैं होठा माथैं अडी मुसकान ही जिया वो बोल क अर म्हारा लाडेसर निबळ री तो माताजी ई सीर हाव काती !

पण इण भौम माथ की अैडो पकायत लाग जिण सू पाप पुन रा पलडा बरोबर रव ! काय कारण रा जाग हा था सजाग पण कुण इ मिनख न चेताव पकायत है ! अेक दिन बकिम आपर दोनू छोरा साग मोटरडी म बठ'र जावतो हो क मोटरडी मोरी सू भिडगी । मोटरडी 'चकनाचूर हायगी दुरघटना मे उणरा दोनू छोरा रामनाम सत हायग्या । बी री खुद री दोनू टाग्या टूटगी जिण सू बो पागळा होयग्यो ! चेरो इत्तो भूडा होयग्यो जाण बो राखस रो बाप भडभाखस होव ! साग अब उण री वा अरथाऊ मुसकाण सदव र वास्त मरगी । उण री बीनणी अणमणी अर आसूडा ढळकावती रवती । कदई-कदई उणरी पासी इया जीवती जिया वा उण र होठा माथ अरथाऊ मुसकाण देखणी चाव ! सगळा सू वेसी दूखणी बात आ ही क जिण र साग बी चूक किया उणा र होठा माथ भात भात री मुसकाणा दीसण लागगी ! उण रा अरथ बकिम अक दुज लगावतो कै उण सगळा री मुळक वी न दुरासीसा देव ! फेर बो पछतावता आपर खाटा करमा माथ रावतो पण उण र भावा सू लागतो क उण न आ पतो ई हासी क वो रोव है क न ई !

पण वा बापडो साचली रावता ।

ट

खेल

सावर दइया

अदीतवार ।

म्है तीनू भेळा होया । भेळा होय'र खेल (सनीमा) देखण रो प्रोग्राम बणायो । गाडी पूणी दो बजी आया करती । बी दिन ढाई बजी आई । दीपलाण सू बठ्या । गाडी टुरी । रामगढ रुकी । गोगामेडी रुकी । भादरा रुकी ।

म्है भादरा उतरया । खाया-खाया चालण लाग्या । सनीमा हाल कन पूग्या । बठ पूछताछ करी । फिल्म सरू होई न पूण घण्टा होयगी ही ।

—'चूल्है मे पडण दो, कानी देखा ।

—'और नइ तो ।'

—'अब फालतू ई है ।'

—'थोडी ताळ मे इटरवल हाय जासी ।'

—'आ स्साळी गाडडी लट बळी !'

—'बगतसर होया तो काम बण जावतो ।

—'बगतसर होवती किया आज आपानै आवणा हा नी ।

—'अबै ?'

—'आ ई अेक मुसीबत है ।

—'गाडी पाछी तो सात बजी आसी ।'

—'पण जित्तै ?'

—'लाइब्रेरी म बैठा ।'

—'वद है !'

—'नानीजी मारया गया !'

—'मारया जावण री काइ बात है । खुली हावती ता बगत काट लेवता ।'

—'बगत काटणो है ?'

—'काटणो ई है ।'

—'ता पछ मिंदर चाला ।'

—'कुण सै ?'

—'रामदेवजी रै !'

—'क्यू ?

—'चाल र तदूरा बजावा ।

—'हा हा हा ! !'

—'मजाक छोडो ।'

—'हा, कोई ढग री बात करो ।

—'चाय पीवा ?

—'आ ढग री बात होई ?'

—'तदूरा बजावण करता तो ठीक ई है ।

—'ठीक है जणा ठीक । चालो पीवा ।'

—'कुण पासी ?'

—'आई कोई पूछण री बात है । थे ई पासा ।

—'म्हैं ई क्य ।'

—'बोल जिकोइ आडो खोलै ।'

—'म्हैं बोल्यो, म्हारी भूल होई ।

—भूल रो डड भुगतो परा ।'

— पचा रो हुक्म सिर माथै !

—'आवो ।'

—'तीन चाय बणा । अेकदम बढिया ।'

—'पत्ती तेज, मीठो कम ।'

—'अर दूध ?'

— दूध ? दूध सरधा सारू !'

—'हा-हा-हा !'

— दूध खातर लारै कोनी देखै, ओ आपणा चेलो है ।

— जणा सवा की सावळ ई करसी ।'

—'सवा रो मौको देवो ।'

—'अरे रामू !'

—'काइ गुरजी ?'

— बढिया मिठाई कुण-सी है ?'

—'अचार तो गाजरपाक ताजा है गुरुजी ।'
—'हां, थोड़ा चगा दगाण ।
—'तो गुरुजी ।
—'हां, चागो भाइ ।'
— है तो ठीक ।'
—'शेखदम बढ़िया है गुरुजी ।
—'भाव काई स्गासी ?'
—'भाव रा छाडा गुरुजी आधा किलो ल्य जावू ?
—'थायळो हायम्या काइ ?
—'कित्तो ताव ?'
—'गो ग्राम चगा पैली ।'
—'गो ग्राम गू काइ हागी गुरुजी ढाई सौ ग्राम तो लवाई ।
— चेल री जशी कर भाई ।
—'थ मरवासो म्हनै !'
—'भाई, थारा चेलो है आगला ।
—'हा, गुरु सबा रा मौको राजीना थाडो मिल ।
—'कर भाई, सेवा कर। आज म्हारो चन्द्रमा इमोई है ।
—'चन्द्रमा तो ठीक ई है !'
—'थारो काई ?'
—'थारा म्हारो बांटयोडा थोडो है !'
—'बाता कम, भाई !'
—'हा गाजरपाक कानी ध्यान देवो ।
—'गुरु, थारै चेलै नै हेला पाड ।'
—'क्यू ?'
—'हेलो पाड तो सरी !'
— अर रामू !'
— काई गुरुजी ?'
—'अठ आय तो सरी ।'
—'हा जी '।
—'गाजरपाक म चीणी ज्यादा है !'

—'ज्यादा तो कोनी अठीन इत्ती चालै ।'

—'मुण्डो खराब होयग्यो ।'

—'भुजिया मगावो ।'

—'ला, सौ ग्राम बढिया भुजिया ला ।'

—'बढिया लाइजै, चबीणीदार !'

—'भुजिया तो ठीक है ।'

—'चाय ठीक बणावै चेलो ।'

— आ काम तो सलटग्यो ।'

—'हा ऽ ।

—'अठै सू चाला ?'

— चालणो ई पडसी ।'

—'चालो, बारै चाला ।'

—'अबै ?'

— सडका माथै घूमा !'

ढाई-तीन घण्टा ताइ घूमता रया । कणाई इ सडक माथै, कणाइ बी सडक माथै । दा-च्यार दुकाना माय छोटी मोटी चीजा मोलाई । ब्लड खरीदी । साबण खरीदी । साग-सब्जी खरीदी । स्टेसण कन आवता अेक दरजण अण्डा खरीदया । गाव पूग'र आमलेट बणावण री साची ।

स्टसण पूग्या जणा च्यार पाच मास्टर भळे मिलग्या । अेक टोळी सी बणगी । बगत सोरो कटसी, आ सोच'र सैग राजी हुया ।

—'आवो अगल डब्ब म बैठा ।'

—'बठै ता अधारो है ।

—'आपा नै चानण मे मोती पावणा है काई ?'

— पूण घण्टा रो ता रस्तो है ।

— आ डब्बा म भीड है ।'

—'म्हैं बैवू हू नी, आग चाला ...।

—'चालो ।'

—'अरे रामदवा थू किन्नै ?'

—'रामगढ़ जासू ।

— दिनूगें दीस्या कानी गाडी म ।'

—'मोट म ध्यान कोनी आयो होयूला ।'

—'आव निर्नै ?'

—'सागै दो-तीन जणा और है ।'

—'योन ई बुलाय लै थाराज डब्बे म बैठ्या हा ।

—'गाडी तो मीठी दवण ल्याग रैई है ।'

—'भाग'र चढ़ा !'

—'हां चढ़ा !'

—'लै बठ भाई रामदेवा !

—'अर, अठ ना बैठ्या ।'

—'क्यू मारी रोजगारी है कांई ?

—'अर मादर !'

—'लुगाई हा र गाळ काढ़ै ?

— म्है क्यू, म्हारै जणा ना बैठ्या ।'

—'आ कुण गूत्या ए ? उठ र ।'

— म्है कष इ न उठाया ता मायो नाग आयला ।

—'आ है कुण ?'

—'म्हारा आदमी है !'

— ता था धणी-लुगाया रै अं दारू मीठा रिजव करायोडी है काइ ?'

— पसर'र गूत्या है लाटसा व !

—'आ राण्ड जायो कुण मरै ।'

— तू गुण्डी सम्भाळर बाल भला ।'

—'रामदेवा ! कुण है आ ?

—'काइ टा भाई बनवारी ।

— कुण है रामदेवा !'

— का ?'

— क्षाल्ड बूकीयो र बैठी थर इ न इत्तीताळ होई है ल्पर चपर करती न ।'

—'दारूबाज भड़वा ।'

—'रण्डी बनवास करै उठा इ नै अठ सू ।

—'थार मा-बना कानी काई ?

—'थार बाप भाई बानी काई ?'

—'स्हाळी बनवास करण लाग री है ।'

—'ई र आदमी नै ता दखा, स्साळो पग्धू कठै ई रा !'

—'इत्ती ताळ होयगी मुण्ड म मूग घाल्या बैठा है !'

—'भाई, आ ता इ री हिम्मत है क चुप है अर जीव ।'

—'थे बावो काई हा ?'

—'नता भाई रामदेवा !'

—'नई य वता भाई बनवारी ।'

— म्है बतावू ?

— हा !

—'थार म्हार इसी लुगाई हाव तो मरणो पड भाई !'

—'राण्ड रा गईवाळ !'

—'भाईजी, थासू थारी घरवाळी न चुप कोनी करगाइज काई ?'

—'कमाल रो आदमी है !'

—'चुप बठो है ।'

—'देवता चुप है ।'

— देवी घट मे आयोडी है ।'

—'अरे आ लुगाई जात रयगी जे आदमी इया गाळ काढ तो बत्तीसी भाग नाखू !'

—'आ कथ छाड रामदेवा !'

—'थू जाण कोनी बनवारी नागाई कर स्साळी !

—'छोड यार लुगाई जात स् कयू माथो लगाव ।'

—'भण ।'

— आ माथो फुडा र रसी लाग ।'

—'चण्डी चेतगी !'

—'कोई ओपरी छीया तो नइ लागगी हाव ।

—'दो जूत पडया अबार सीधी हो जाव ।'

—'माथ चढाघोडी लाग ।

— जफण्डखोरी !

—'नागाइ जमा-जमा र हिळघोडी लाग ।'

— रामदेया जावण द नी दस मिनट रा काम है ।'

—'दस मिनट री बात कोनी   म्हैं थठ स अटई।'
—'थठ र दस तो मरी   असल मा रो है ता!'
—ह स! आ थठपो   !'
—'थटग्या भाई रामदेवा   ।'
—'अब मचीड थानमो।'
—'चाल्या!'
—'म्हैं बधू आ धू ई बानी करे।
—'अयार इत्ती तन-तन कर हो नी।'
—'पाली जिस करलो आमनी   ।
—'अर अब?'
—'पुगबार ई बानी!'
—'आ ता धू कई जियो हाई   ।'
—'बाई?'
—'चुप हागी बेटी!
—'आपणा बगत ठीक पटग्या।'
—'वो गेल नट, आ मेम सही।'
—'बिना टिगट!'
—'आ ई ता मजा है।'
—'इ रा जस धनवारी न   ।'
—'हा ऽ इ इब्ब मे या ई ल्यामो आपा न!'
—'थार मुण्ड म घीडा पडसी!'
—'ल भाई, मेन मळ चालू होयग्या   ।'
—'आ इटरवन हो बाद?'
—'हा ऽ   ।'
—'मूफळी तो गायी'ज बानी।
—'अब मा परो   ।'
—'थर्लं मे है बाई?'
—'हा ऽ।'
—'काढ देखाण   ।'
—'ल भाई रामदेवा, यू ई मूफळीमा!'

—'नीच रमीण कुत्ता !'
—'नूवा सर्टिफिकेट लेवा भाई !'
—'पण आपा तो सर्टिफिकेट ल्याणिया हा – ।'
—'ता ल्या परा कुण गरज थारे ।
—'कुनडी !
—तू ऊ तू ऊ ऊ !
—ह भगवान ! आ री लुगाया न विधवा कर।'
—रामदया ! थारो टिगट तो ऊपर गालर चटग्यो !'
—नासा है ता ! इ र भरतार दाइ जीवण सू तो चोखा है मरणा !'
—'थारी यात तो ठीक है रामदया !'
—राम हाथ आ रा यस मिट मुन्दा रो !'
—अब रामदेवा ?
—'भाई उमा दन्या वम म बध तो बाद फायन्ग ?'
—समवारी !
—वाइ ?
—गल म गति कोनी आई ।
—पनाइमैवस सू पली केई दप कहाणी ढीली पडणा कर ।'
—ढील चाल्ण दो ।
—पण घणी ढील काम री कानी हाया कर ।
—'तौल दियाडी है जणा ई तो आ इत्ती लपर चपर कर ।'
—'मिनख म राम कानी !
—खूटा कमजोर लाग !
—'माचे म सड र मरसी सगळा !'
—'ल भाई रामदेवा चीज विस्तार खायगी !
—'अब ना कया कहाणी ढीली चाल ।
—'अब है तो ढीली ।'
—'थोडी ताण दवू काइ ?'
—क्यू माथो लगाव ।
—जावण द नी दो मिनट री बात और है।'
—थार नइ जची तो टाळ सही।
—हीरा ठण्डो पडग्यो !'

—'भायला री बात मानली।'

—'भायला स्याणा है।'

—'अर भायली ?'

—'नाम ह्राव या मुड्दा रा !'

—'हा-हा-हा !'

— ले माई, रामगढ आयग्या।'

—'उतरो परा !'

—'अच्छा देवी, राम राम !'

—'कीडा पड्सी मुड्दा रै !

—'हा-हा हा !'

रामगढ पछ डब्ब म न्याति बापरगी। अेक दो दफ बी लुगाई र मुण्ड सू फूल भड्या। किणी उथळो कोनी दियो जणा मत्त ई चुप होयगी।

दस मिनट म दीपलाणो आयग्यो। म्हे क्वाटर म आया। साग नानकजी हा। गपसप करण बठग्या।

म्है अण्डा फेंटया। स्टाव जगाया। तवो मल्या। आमलेट बणाई।

—'हा, करो सरू ?

—'दवाई काढू काइ ?'

—'दवाई ?'

—'गुटको !'

—'अठ कठ सू आयो ?'

—'आ ना पूछो। काढू ?'

—'काई करसा ?

—'ठण्ड मिट जासी !'

—'गाडीवाळो मेल देग्या कोनी मिटी काइ ?'

—'वा तो वगत कटी खातर ठीक हो।'

—'हा !'

—'दो गिलास काढो ।'

—'अ लो ।'

—'किसी है ?'

—'इम्पीरीयल।'
—'चुपचाप कणा त्य आया ?'
—'जादू सू ममवाई है।'
— ता जादू धानण दा । पण ।'
—'पण काट ?'
—'किणी न ठा नइ पटणी चाइज।'
— आपा दाना न ठा है ईं ।'
— म्हारा मतलब किणी और न ।
— का पछ अ मीता जाण ।
— मीता मनाईं जाणा मीता र काम हाय, आंग कोनी होय !'
—'सरू करो ।
—'हा करो !'
—'चीयम !'
—'चीयस !
—'आमलेट बन्यिा मणी है ।
—'बम, काम चलाऊ बणगी।'
—'नइ, बढिया है।
— इम्पीरीयल ?
— नइ आमलेट !'
—'दानू बढिया है, बम !
—'हा हा !'
—'घरा जाय'र काईं कहसो ?'
—'कूड बोल्सू ।'
—'काईं ?
—'मादरा जीम र आयो हू।'
—'इ री खुशबू आसी नी।'
—'भलाई आवो।'
—'ठा है ?'
—'हाऽ होळी दीवाळी लेवण री ठा है।
— पण दीवाळी तो गई अर होळी अज अळघी है।'

—'छटठै छमासै भायला सागै ई चाल ।

—'थारी म्हारी आ आदत अेक ।'

—'चालो, अेक सू दो तो होया अेक आदत वाळा ।

—'इणी मिस वदैवदास सागै वठीज जाव ।'

—'हाऽ आ तो है ई !'

— सिगरेट पीसो ?'

—'नईं, सिगरट कोनी चालैं ।

—'पान तो चालसी ?'

—'लाया हो काई ?'

— हा ।'

—'लावो । पण मे तो जरदो न्हावो ।'

—'थार खातर सादो बधवायोड़ो है ।

—'मे तो पान रोजीना ई खावो ।'

—'आदत पडगी ।'

—'ठीक है । काई सौन ता होवणो ई चाइज ।'

—'अच्छा, अबै म्हैं चालू ?

—'पूगा'र आवू ?'

—'नईं जी, गाडी आयगी नी सवारया रो सागो होयोडो है ।'

—'ठीक सा !'

गाडी आयगी । सवारया उतर'र गाव कानी टुरगी । अेक दो दफ आ आवाज सुणीजी—अरे कोई बडविराणै जावणिया है काई ? पण कोई उथळो कोनी सुणीज्यो । पछ वा अेकला ई टुरग्यो होवला ।

म्हे माच माथ पसवाडा फोरै हो । नीद आव्-आवू ही । की खुसर प्रसर सुणीजी । म्हे धमग्यो । वैटरी जगाय'र हाथ घडी देखी । साढी इग्यारै बजी ही । गाडी गई नै डढ घण्टा सू ऊपर होयगी । अबै कुण बालै ? आ आवाज तो क्वाटर र कन आवती लाग । चम्प री दुकान कनै लागै काई । आवाजा हो तो दब्योडी, पण रात र मरणाट म सुणीज ही । म्हारा कान खडा होयग्या ।

—'ओ हसा !

—'के है ?

— माचिस दिय तो ।'

—'काइ करसा ?'

—'बीड़ी पीसू ।'

—'फाल्तू चानणो होसी । किणी रो ध्यान जासी अठीन ।

—'अब अठीनै कोई कोनी आव ।'

—'जे कोई आय जाव तो ?'

—'गाव रै अेक नाक है आ चम्पै री दुकान ।'

—'अर ओ क्वाटर ।'

—'हैडमास्टर रैव ।'

—'खुडका सुण'र जागग्यो तो ?'

—'दिनूग छव वाळी गाडी सू पैली कोनी जागै ।'

—'थन काइ ठा ।'

—'म्हैं अठै ई तो रवू गाव मे अठ कुण कद सोव जाग, म्हन ठा है ।

—'फूलकी नै दुकान म भेज दी काइ ?

—'वा खुण मे बठी है नी ।

—'अधार मे काइ ठा पडै ।'

—'वो खूमलो अजै मरयो कोनी ।

—'बीनै तो अठ ई लाधणो चाइज हो ।'

—'थोडी ताळ और उडीक लेवा ।'

—'नइ तो पछै सरू करू ।

—'ठण्ड पडै ।'

—'अेक गुटको तो लेय ई लेवा म्हारी मानै तो ।'

—'सरु करघा पछ लार काई बचसी ?'

—'आ बात तो है ।'

—'खूमै नै बुलाय लावू ।

—'रात नै गळ्या म कठै गोता खासी अधारै मे कठ ई पड र गोडा फोडसी

मारा ।'

—'खूमलै मे आ ई तो कमी है । अेन वगत मार्थ काम बिगाडै ।'

—'कैयग्यो माल लाया । अबै खुद रो ठिकाणो कोनी ।

—'पग बाजै दीस ।

—'खूमा ई होवणा चाइजै ।'

—'लागै तो इमो ई है ।'

—'कुण होसी र ।

—'म्हैं खूमा !'

—'उडीक्ता उडीक्ता थाकग्या ।'

—'चोरी जारी तो ओलैं छानैं ई होवै ।'

—'हा ऽ आ बात तो है ।'

—'माल लाया हो नी ?'

—'अेक्दम धाकड !'

—'बोतल खोला ?'

—'हा ऽ !'

—'चम्पो आ दुकान ठीक वणाई है ।'

—'आपरा गुजारो करैं बापडो !'

—'अर अडी-वडी मे आपा ऐस !'

—'हा-हा !'

—'कठ धुखग्या पाणी कोनी काइ ?'

—'अठै पाणी कठै लाधै ?'

—'दुकान म घडो राख्या थर है नी चम्पा ।

—'काल कोई चार'र लेयग्यो बताव ।'

—'घडो चोर र लेयग्यो ?'

—'ओ गाव जबरो है !'

—'रर, इया ई धिकासा ।'

—'आ लिया कर है काइ ? पूछ ता ल ।'

—'फूलकी !'

—'काई ?'

—'लेसी काई ?'

—'दा गुटका लेय लेमू ।

—'पाणी कोनी है भलो ।

— काइ करणो है पाणी रा '

—'जीवती रह !'

—'द भाई, दा गुटका द इण न ई ।

— ल, इन आव ।

—'लाया अरे ! इया काई करा ।

—'काइ कर खुमला ?'

—'की कोनी ।'

—'थाडो खटाव मानो काइ ।'

—'देखो, अबक पली म्हारा नम्बर ।'

—'तप होयोडी वात मे क्दई गोळ पड्यो काइ ?'

—'जखरायोडो ठीक रव ।'

—'नसो इत्तो घणा ।'

—'बस अेक-अेक गुटको और ।'

—'बातल पूरी होयगी ?'

—'अेक बोतल मे काइ बच ।'

—'वठ खुण मे म्हारलो खेस बिछाय ल ।'

— ओ खेस कित्ती दफ बिछयोडो है ?'

—'ई फाइव स्टार मे तो ओ ई डनलप बड है !'

—'थारी कल्पना सगति ऊच दरज री !'

—'म्हारी परख ई कम कोनी ।'

—'देखसा ।

—'अबै देख परो ।'

— ये थोडा बार घूम आवो ।'

—'अधारै मे वठ गोता खासा ऊभा हा जेक्कामी ।'

—'ठीक है ।'

—'हुसा, पछ थू तयार रहीज ।

—'हू । अर थे ।

— या दोना न घरा जाणा है । म्है म्हार गाडी आसी जित्त मतई सलटवा करसा ।'

—'गाडी तो छव पूणीछव ताइ जावै ।'

—'पण अठै सू पाच सू पैली भागणो पडसी ।

—'क्यू ?'

—'चम्पा आपरो समान पाणी लेय'र आ जाव ।'

—'बीरवल !'

—'काई है र ?'

—'थू साचो पारखी है ।'

—'माराम्या री ?'

—हा   रिसँ म गादा ?'

—पषाम।'

—री म द पागाय !

—अम्मा म्हैं अर गुमा ता षान्ना   ।

—हा   ।'

—'पै गया काइ ?'

—हाऽ.   ।'

—'अबै आपा ?

—'पाप बजी ताइ अठैई   ।

—'अवार किती बजी है ?

—अेक बजगी !'

—रात मामा पडी है। गोया मर म्है ता   ।

—'गामा पैर स   ।

—'माविम जगा दगाण   ।

—क्यू ?

—'अणिया काना लाधी   बठै बगाई मैप   ।

—'गुमल्ला षार है ! लयग्या हुसो।

—मर र राप्ट रा !'

—'नूवो ल आइजै।

—पण   ?'

—दग-चीग "यारा ल निय   जान क्यू राय।

—पाटी दारू है काइ ?'

—'गटाय राग। अठा पडघा है। आपा साग ई पीवाला।'

—जीवा दिया त   ।'

—'रतजाम रातणो पड   ।

—'अठा राल   म्है पकगी   ।'

—'ल, पी परी   .ताजी हा जा !'

हा ता अब गुणा भाइ बाचणिया !

अधारै मे चालतै इ गल री वाता सुण र म्हारी नीद उडगी। इच्छा हुई, बटरी स्य र जावू अर धम्प री होटल म अड्डो चलावणिया नैं ओळखू। गावबाळा साम्है

आ रो खेल चवड़ै करू। पण आ सोच र टाळ करग्यो–इ दुनिया म काइ ठा कठ-कठ इसा खेल हावै अर नित होव ! इण सू ई ऊचा मल होवै।

दिनूगै चम्पै नै बतासू।

म्है पसवाडो फोर'र सोवण लाग्यो। दापारा खेल दखण नै मादरा गया। गाडी लेट होयगी। खेल कोनी दख सक्या। पाछा आवता गाडी रै डब्बै मे अेक खेल देख्या। दारू आमलेट रा अेक खेल ई कमरै मे होयो। अेक खेल अधारै मे होयो।

दिनूगै ऊठ्यो।

गाडी गई परी ही। पाच सात सवारया चम्पै री दुकान माथ चाय पीव ही। चम्पो हाथ मे चोळी लिया ऊभो कैवै हो– 'रात न आ अठ कुण नाखग्या मादर !'

बाता रै नूव खेल सारू मसालो लाधग्यो लोगा नै। लोग भेळा होवण लाग्या।

बाता रो खेल चालू हो अर म्है देखै-सुणै हो।

□

सैलीब्रेशन

मालचन्द तिवाडी

मिसज साहिनी क्चिन म हा, हा वा किचन ई ही, रसोई नी ही। अेक रसोई मिसेज साहिनी रै टाबरपण म ही जिणम थेपडघा री भोभर हटै सकरकदी आटीजती अर प्याज जिणमे वर्जित हा। जूत्या तो खर कोसे'क अळगी ई खोलीज जावती। दादी जीवती रैई जित्त घी मे सिनान करया टाळ बडनो ई जुलम हो। वा रसोई, असल मे तो अेक रसोवडो हो—जिणरा सँग छौंक-बघार चाखता थका मिसेज सोहिनी बडा हाया अर सासरै जाय पूग्या। सासर सू चाल'र मिसेज सोहिनी जँपुर आयग्या अर और बडा होयग्या। टाबरपण री उण रसोई रो तो अबै मिसेज सोहिनी नै हेसण कै खीम्पणै टाळ की अरथ ई नी समभ आवै। साची ई बात है। सा की कितरो 'एवरेज' हो—धुआसै मे छीकल्डा करता बूढी होवती दादघा, नान्या अर मावा ! इण पत मिसेज सोहिनी री समझदारी बढती ई गई।

अबै इणनै आप मिसेज सोहिनी री समझदारी नी, तो काइ कैवोला क अबार व आपर क्चिन म हा टेलीफोन ड्राइग रूम म हो, घटी पूरी बजण री ठौड फकत अेकर 'ट्रिंग' कर'र रयगी अर मिसेज सोहिनी समझग्या क फोन किण रो है !

'आऊ आऊ।' मिसज सोहिनी मळाई री कटोरी माथ चीणी बुरकावता कैयो।

निस्चै ई ओ 'आऊ-आऊ' टेलीफोन सारू हो। फोन री आ अेक अथसास्त्रीय तजबीज ही। फोन चित्राजी रो हो। वार प्राइवेट कनक्सन हो, मिसेज सोहिनी रै सरकारी। चित्राजी नै वात करणी हावै तो वै फकत अेकर 'रिंग' कर र धर देव। लोकल काल रा पइसा बच जावै अर खर्चो सरकार र खातै मे मड जावै। चित्राजी रै सुभाव री अधीरताई किणी सू अछानी नी है, इण खातर ई मिसेज सोहिनी झट उत्तर दियो। मिसेज सोहिनी रै 'सर्किल मे सग तरै री बानगी है—कलावती, मोनिका, अभिलासा, ऊमा, देवयानी अर हे भगवान ! सग नाव अेकै समचै चेतै आवणा कोई सेज काम है ?

मिसेज सोहिनी कटोरी लाय'र डाइनिग-टबल पर मल्ही अर फोन कानी मुडा करयो कै गौड साहब न्हाय'र वारै निकळघा। माथै म ऊजरयाडा थोडा घणा गीला केसा मे आगळघा फेरता गौड साहब री निजर आपरी घरवाळी सू मिली अर वै मुळक खिडाय दीवी। गौड साहब दाना आदमी हा। वै मुळकता ई रैवता। वै जै आपरी घरवाळी री किणी बात नै आख मीच'र मूखता समझता, तो ई हस र दात ई दिखाय

देवता। जितरी मधरी वारी मुळक होवती, उणरो म्यानो उतरो ई ऊडा होवता—आ बात जाणनी भात मुसक्ल हो।

अबार ई वँ अेकदम ओपती अर मधरी मुळक मुळक्या क

'काइ मतलब ? 'मिसेज सोहिनी आख्या तरेर'र पूछ्या।

'की नी म्हे तो कवू कँ रात थारँ माथँ म कित्तो जोरदार दद हा अर अबँ आ काम वाळी फेर नी आवेला।' कँय'र गौड साहब गोली आगळधा लपँटयोडँ ताळिय रँ पूछ लीवी।

'थारँ ता ठडी लीक पडगी। मिसेज साहिनी रँ जाण टाटिया लडग्यो, 'पण सुण लो कान खोल र कँ चावँ वीरा हजार नखरा सहन करू, पर वा आवँला जरूर वा नी, तो वीरी बैन कोई और आवला। म्हैं अबार चित्रा सू बात करू।'

गौड साहब नै दफ्तर पूगणो हो। वँ किचन मे बडग्या। अेक सैंची रँ लूण मे दोय-तीन देवतावा री तस्वीरा ही। साम्ही मामूली पूजा पाठ री सामग्री ई। गौड साहब हरमेश दाई दोय अगरबत्तया मळी सुलगाई अर च्यार चवकर तस्वीरा रा देय र स्टण्ड पर टाग दीवी। चटपट हाथ जोड र वँ बेड रूम म गया अर कपडा पर'र डाइनिंग टेबल कनै आय ऊमग्या।

'हाय राम! इण बिचाळै मिसेज साहिनी फोन मिलाय लिया हा, हलो कैय दिया हो अर चित्राजी री किणी वात पर चिमक'र कयो, 'अबै म्हैं इत्ती खाली बोतला-कठ सू लाऊ ? म्हारँ अ तो पीवँ कोयनी।

आ कैय र मिसेज सोहिनी आपर आ कानी देख्यो।।

गौड साहब तो जाण इणी न उडीक हा, झटक सागँ आख्या मीच र व नाड न अेक खम दय न्हाख्या।

समन्वो कँ हद ई होयगी।

जो पोज बणावणो गौड साहब री पुराणी आदत। वँ घणी दफै मुडँ म पान री पीक भऱ्या इण तर आख्या मीच देव अर फेर बान की कवण सुणन री दरकार इ नीं हाव। मिसेज सोहिनी वारो अेक-अक पेच जाणनै रो दावो राखँ। इण तरीकँ न व हद दर्जे री मखौलबाजी मानँ। इणन देख'र बार माय तेल पाणी पडग्यो हा पण पली चित्राजी सू बात करणी घणी जरूरी ही।

अबार गौड साहब र मुड म पान नी, मळाई ही।

खाण-पीणँ री पौस्टिकता र बार म व मिसज सोहिनी र नजरिय मे कोई भिजाग नी घाल। मिसज साहिनी री दण पर खास नजर। काइ नखा सार है, किण सू दात अर हड्या निराग रेव किसी चीज खास लुगाया रा खाज अर काइ मर्दा सार घणा मुफीद—आ मामला म व सुद्ध रूप सू मिसज साहिनी रँ ज्ञान पर निभर रेव। इण निभरता म वानँ सैंत रळयो दूध, उडद रा लाडू व चिणो वुरकायोडी मळाई मौसम

मुजब मिलवो कर। हा, डिब्बा-वद चीजा नैं व कदैई-कदई 'माडन दकियानूसी' कय'र मिसेज सोहिनी रैं क्षेत्राधिकार मे पग जरूर मेल देवैं, पण पछ वान सुणनो पड, 'आ डिब्बा रैं ताण ई दोवू सपूत आपर वाप दाई माय वार सू लोह लक्कड होयग्या। म्हारी ठौड कोई दूजी मा होवती, तो कूवडा ड रैंय जावता।'

'दूजी मा' र नाव पर गौड साहव वोल नी जाव, आ सावचेती ई मिसेज साहिनी पूरी राख अर पली ई कैय देवैं, 'देखा, अव फालतू वोर मत करया। म्हनैं निग है क थारी मा तो वस थारी मा ही। वा कथा म्हन याद होयगी। व हपतैं हपतैं तूळी नी बाळता। चूल्है मे वासदी अर पणीढ मे पाणी नी निवडण देवता। सिंझ्या पडी पछ झाड्र हाथ नी लगावता। रात नैं अेठा वतण छोडणा पाप समझता आद इत्याद धन्यवाद।'

पण अबार गौड साहव कन अगैं ई पुरसत नी ही। पूणी दस री सायरन बाज ही।

गौड साहब न पक्री साय ही क सरकारी फोन पर हाल वाता रा पच लम्बा वधसी। वैं बारैं निसरता जरूरी समझ'र इत्ता ई कयो, 'स्यात् दो वज्या आज फेर मिस्त्री आवैला। चौथो चक्कर हासी। थरैं नी लाधी, तो थू जाणैं अर थारी वाशिंग मशीन जाणैं। फेर म्हनैं मत कई।'

'हा-हा थू आव री।' मिसज साहिनी पलका र ऊपर डाळ गौड साहव कानी देखता फान मे कयो, 'टमाटर ई थू लेवती आयजे। थैला घर सू ल्वेणा ना भूली। म्है खाली वोतला खरीद लेसू। म्हारा भाग ई इसा है। हाय राम! म्है तो फेर भूल जावती, रात भर म्हारो माथो सुओ नी होयो। आ मरजावणी कामवाळी क्यू नी आई?'

गौड साहन अेकर फेर मुळक्या अर बार निसरग्या।

'डिब्बा वदी प्रशिक्षण-केंद्र' सू आठ-आठ पूरी सोळैं वातना तयार करवाय'र मिसेज साहिनी अर चित्राजी दोवू रिक्स म वठग्या हा। रिक्सै वाळा जुवान छोरो हो फूटरी अर इत्तर सू गमकती सवारी देख र घणी चिवोळ करया बिना वाजिब भाड मानग्यो।

उन्हाळै री ग्यार वज्या रो सूरज काळी सडक पर चिलका मार हो।

जम'र बैठ्या पछै मिसेज साहिनी आपरैं 'स्लीव-लेस' र वार ऊनर्योडी चामडी पर क्वळास सू खाज करता कयो, 'टाइम भोत लागग्या, है नी?'

'टमाटर किसा थोडा हा।' चित्राजी ऊथप्योडा-सी कयो, 'केई दिना रो गीत मिटग्या। म्हारैं तो ल्पोपा अर कटी साम बिना अेक पग इ नी मल्है। अबक पद्रै दिन हायग्या म्हारा कान खावता ममी साम, ममी साम।'

'अच्छया चित्रा, थारैं ता वी सी पी आयग्यो नी?' टावरा रा नाव आवतैं ई मिसज सोहिनी नैं जाणैं विण तरैं ओ सवाल सुज्यो।

।यो, 'अंर अेर मनाइट लिखायो। याद हावम

आ यस।' चित्रा जी गुमान सू ब

अली है, दारू रा ठेकेदार।'

'कित्ता पड्या ?' चित्राजी चिडकली री वाणी म उत्तर दियो।

'आठ हजार। ड्यूटी ममत। तेज माहिनी कोई अणसा मुनावना-सी हम'र

अेकर थई ताळ चुप रैय'र मि

पूछ्यो। मलोग्रेट नी करैला ? । मुजब आपरी गाडी रै पल्लै न वाना लारै

'व्हाई नाट ?' चित्राजी आदोवा। पण वी मास्टरनी नै दुपारै टाइम किया

दाव'र थया, अेक दिन मगळयां भेळी ह

मिलसी ?' साहिनी पूछ्यो, 'थोरी वाता छाड। वा राज

विन, अभिलासा न ?' मिसज री गाय थाडी ई है। आ गास्वामण्या री ता

ई पाट या पर। थारै म्हार दाई गूंठांद लिया पछ जाण अेवाघा टावर जणनै रा

दुनिया ई निरवाळा है। पला सग सुवअठ, गाची केवू चित्रा म्हारै ब्याव री फोटुआ

सुवाद लेवण सारू ई ब्याव थरै। अर तिडक्ण लाग जावै। याद ही म्है, नाय लट, अर

कणाई हाय म आय जावै, तो काळजा बूड नी क्यू, अेकर जै कियाई कर'र कयारी होय

माइता लपेट दीवी वासदी र चौफर। ा ता नी परणीजू आदमी काइ है अेक सिक्जो

जाऊ नी, तो पाछी आ गौड साहन गायछै दो तीन दिन ता सौरा निकळ—अर अचाण

है। दिन रात नडा, पण दौरै पर गया।ण'र याद आवै क पूछ मन। पण आ बात थन

चक अै म्हन इत्ता भला, इत्ता प्यारा क्याई मरू होय जाव।'

चऊ, थान बताय दू नी, ता दूणी रास। थारा साहब ता म्हारै की समझ म नी आव।

'भाई साहिनी, डोण्ट माइण्ड अजीव सो डर लागतो रवै। म्हैं बान छोड दूजो

म्हन तो गौड साहब री प्रजेंस म अेक रा विचाळे ऊम्यो ई की नरम पडघाडो नी दीसै।

आल्मी नी देख्या, जिया फूटरी लुगाया गौड साहब कणाई मुलायम निजरा सू निरखता

खैर, म्हारी जावण द, थू बता, थन तहिनी री उघाडी कमर पर हवळै-सी'क चूटियो

होवैला। कय र चित्राजी मिसेज सा

भर लिया। ।लण सारू मुडो खोल्यो ई हो कै जाणै रिक्स मे

मिसेज माहिनी विदक'र ब

भूचाळ आयग्यो। थमचै खडवडीजी।

पगा हेटै पडी बातला अेक राडक पर आयग्या। वा आपरा अगाडो हाय मैं

रिक्सवाळो सीट सू कूद'र ग्यो। फेर वो पहिया लारै छूटघोड 'स्पीड ब्रेकर

लैय'र लिलाड रो पसेवो पूछण लाग

न वगनी-सी निजरा सू देख्यो। ी सगळी बात लाड र गरज्या, ओ भाया, चालणा

इत्ती ताळ मे मिसेज सोहिनलण री थन काई जस्त कानी। म्है बिना भाडो

है, तो साम्ही देख र चाल। लारै क्रेयचो ?'

दिया उठ'र नी भाग जावाली सम्भेयग्यो अर आपरा पग पाछा पडला पर मल दिया।

रिक्सवाळा पाछो वहीर।

हाणिया

मिसेज सोहिनी अचाणचक बोल्या, 'अरे हां, चित्रा देख, म्हैं तो फेर भूलगी। आज वी मरी कामवाळी रैं काइ होयो ! सगळा तो बरतण पड्या है। झाड़ बुहारी ई उडीक। वाशिंगमशीन त्यारी खराब पडी है। स्सा घर ऊथ माथैं लाधसी। की बतायो थारी गोमती ?'

गोमती चित्राजी री कामवाळी रो नाव हो।

मिसेज सोहिनी सारू कामवाळी वा ई सोध'र लाई ही। कामवाळी नी पूग्या बीरा समाचार चित्राजी र माफत बीन ई पूछणा पडता। अबार चित्राजी बतायो, 'दिनुग फोन करयो जित्तै ता गोमती ई नी आई ही। फेर म्हैं अठीन आयगी।'

'इण रो मतलब !' मिसेज सोहिनी बात विचाळै छोड र अणमणा होयग्या।

च्यार दिन बीतग्या, दोनू कामवाळया नी आई ही।

दिनुग रो टाइम। मिसेज सोहिनी डाइनिंग टबल कनैं कुर्सी माथै अेकला बैठया की सोचैं हा अर निरायती साग चाय री चुस्क्या लेवैं हा।

टाबरा न स्कूल बहीर कर दिया हा।

गौड साहब काल ई दौरे पर दिल्ली गया परा हा।

मिसेज सोहिनी रैं साम्ही अेक बडी खिडकी ही। पर्दो हटायोडा हा। तावड रा हाय अजेस तण खिडकी लग नी पूग्या हा। ठण्डै श्वासा रैं मायकर अेक लाम्बो-चौडो दरसाव हा— जिणम अेन खिडकी र नजीक छीदी डाळया अर नुकील पाना रो अेक दरखत, बाउण्ड्री वाल कनकर बगती सडक, सडक पार स्टेट बैंक र क्षेत्रीय कार्यालय री टणकोर लाल इमारत अर इमारत रैं चौफेर खिड्योडी हरियाळी अर फुलवारी।

मिनख अजेस इक्का दुक्का ई दीखणा सरु होया हा। दो-अेक घडी पछ तो भात भात रा मिनख अर लुगाया ॥ सडक अर इमारत नैं चेळकै हावणो ई हो, पण अबार फकत अेक धुधळी-सी क लुगाई साथा पग मेलती जावती दीस ही। मिसेज सोहिनी अचाणचक बीनैं पिछाण लीवी—गोमती !

मिसेज सोहिनी नैं लखायो कै व अबार हेलो पाड लेयसी, पण इत्ते म तो गोमती अक कानी मुड'र अदीठ होयगी।

'मरजावणी, अेक तो जीवती ई है।' मिसेज सोहिनी बडबडावता थका अेक उम्मीद री निजर सगळ घर पर पसार दीवी।

आज दुपारैं चित्राजी र वी सी पी रा मेलिब्रशन हो। तै हो कै दोय बज्या सग मिसेज मोहिनी र अठ भेळी होयसी। खाणो पीणो बार-सूं आयसी। वी सी पी अर कसट रो खर्चो ई चित्राजी रो। चाय पाणी मिसज सोहिनी कानी सूं। कुटसी सविता हावैला। काल ई गौड साहब रो दोरा बण्या अर गळती व आ करी क दुपारैं ई चपरासी भेज'र ब्रीफकेस दफ्तर मगवाय लियो। चपरासी रैं घर सू निकळता ई मिसेज मोहिनी र पली बात आ इज दिमाग म आई। फटाफट चित्राजी नैं फोन करयो, वैं आगं सग न नूतो देवण री जिम्मवारी तवड लीवी।

गौड साहब रै दोरै पर निकळ्या पछै मिसज मोहिनी अठी गोठा कर रूवता। गौड साहब थका आ बात कदई नी होय सकै। कारण कै अेक तो मिसेज सोहिनी री 'फ्रेण्ड्स' गौड साहब री मौजूदगी म 'ईजी' नी होय सक अर दूज—बावजूद लुगाया री सुततरता अर बराबरी री तमाम जुबानी सिराळ रै—मिसज मोहिनी गौड साहब सू माय ई माय बुरी तरै डरै। चावत थकै ई वारी पसद-नापसद सू घणा अठीनै उठीनै नी होय सक। स्यात गौड साहब मिसज मोहिनी रै मायलै इण डर न ओळख अर मुळकै। वारी मुळक सू ओ डर-चालू पत्रिकावा म छप्योडी दलीला रो भेस बदळ'र—मिसज सोहिनी री जीभ माथ आय बैठै। गौड साहब इणन आळगता थका कोई महान द्रष्टा होय जावै आरपार अर अपरपार निजरा सू या वा निरखता निरभै पुरस, जिणन उणर आसण सू मिसज सोहिनी जडी लुगाया कदई नी डिगाय सकै।

अर फेर अडी नाकुछ सुततरता रै लावा माह मिसज सोहिनी खुदोखुद कन स ई इसी कीमत वसूल ल्व। औरता ओर, वै आपरै दावू लाम्ला नै वेजा 'कान्फीडेंस' मे रापै ताकि वारै पाचा साम्हो इण सुततरता रा दरसाव उघड नी जावै। इण तरै मिसज मोहिनी आपर मायलै डर साम्ह आप ई साम्णाणी रा पक्का इतजाम राखै।

आज ई अडो इतजाम हो।

कामवाळी र नी पूगण सू मिसज सोहिनी रा जाव सी उडार पड्यो हो। हे भगवान! दोय बजता किसी जेज लाग अर सगळो घर ऊध माथै पडयो है। घर चावै सेजा उडीकती परणी रै उनमान सज्या धज्यो अर अबाट दीसो भनाई, कामवाळी नी पूग ता मिसेज सोहिनी न वो हर घडी ऊधै माथ ई दीसै। आज घर री माथा चोटी घणी जरूरी। सग मेळवा होयसी। मिसेज मोहिनी नै मग रै आव जावै पण आ कामवाळी तो स्यान लेवण नै त्यार।

दुनिया भर री झिकोळ पछै ता कामवाळी मिली अर आ इज बरण होयगी। साम्है मुडै अेकदम गळ री जात अर घरै पूग्या पछै पक्की मतरण। इधको ओ कै इत्त बडै स्हैर म इसी मुची-तुडी लुगाया रो इत्तो टाटा। घणी दफै मिसज सोहिनी न आपर चेत र परवार कामवाळी सारू अेक तुलना सूझ जाव—आपरै छोटै थकै देख्योडी अेक एल्म्यूनियम री देगची, जिणम सापती थका घर भर रै मिनात सारू न्हाण खण पाणी उकळया करतो। अेक दिन वी र पद म तीणा होयग्या। पछै वा टाबरा रै रमतिया मे रळगी अर फेर रूडती पडती बिडरूप होय र काद ठा कठै गमगी ही। पण आ मरजावणी कामवाळी तो जीवती होवता, मिसेज सोहिनी साच'र उठ्या अर टेलीफोन कानी जाय पूग्या।

'हैलो चित्रा अबार की ताळ पला म्हैं थारी गोमती न देखी। अज पूगी'क नी?'

फोन सुणता मिसेज साहिनी री लिलाडी म तीन सळ पडग्या। वान धूजणी-सी मैसूस होई। व पूछ्यो 'कद?

फेर और कई ताळ पछ वै फोन न डाव कान सू जीवण कान पर लियो अर हास्ता सी क क्यो हा हा प्लीज चित्रा ट्याई ठीक रयसी।

इणी पल कान-बेल वाजी ट्रिंग !

मिसेज सोहिनी री छाती धक होयगी।

व फोन पकड्या पकड्या दरवाजै कानी देख्यो क आ कीकर होय सकै ?

तुरत फोन रख'र वै दरवाजो खोल्यो।

'मम्मी।' साम्ही बस्तै र भार सू दोलडो होयोडो सुमित खडयो हो।

'बदमास ' मिसेज सोहिनी झिडकता थका पूछयो, 'इण तर घटी क्यू बजाई ? मैं जाण्यो थारा पापा आयग्या। थन ठा नी, व दौरे पर गयोडा है।

सुमित जोर सू हस्यो, 'मम्मी पापा सू डरै मम्मी पापा सू डर ।'

'चुप्प बत्तमीज चाल, कपडा बदळ।'

मिसेज सोहिनी पूछणो भूलग्या कै सुमित स्कूल सू जल्दी कीकर आयग्यो ?

आज रा गोठ टळगी।

सुमित खा-पी'र दोस्ता साग खेलणनै गया परो।

दो अजेस नी बज्या हा, बज रया हा।

मिसेज सोहिनी आपरै ई घर नै नूवी निजरा सू देख हा। बान लखावै हो कै कोई नई चीज घर म आयगी है जिकी सगळै सामान री भीड म कठई गम्योडी है, सापडतीक दीख नी रई है— पण है जरूर !

बीच-बीच म जाण थक र मिसज सोहिनी आख्या मीच लेवता। तद काना म टैलीफान पर चित्राजी री बतायोडी बाता अर सुमित रो आपरै पापा री स्टाइल म काल-बेल बजाय'र चिगावणा— सीटी रै उनमान गूजण लाग जावता। फेर अेक दरमाव माय रो माय घेरा घालण लाग जावतो अेक आदमी, दारू म धुत्त, भैंस दाई फूफाडा करतो दरवाजो पीट रैयो है अर जियाई दरवाजो खुलै, दारू रै भभक साग सुणीजै 'हरामजादी राड, माथै चढै थू है काइ बता ह, थू है काइ ? पग री जूती बता, कित्ता पइसा कमाया आज ? अै साहब लोग आपरी मेमा री गोरी चामडी अर इत्तर-फुलेल सू उथप्योडा है। आनै बरकास चाइज। ठीक है दिया कर पण पइसा तो म्हन द। अर थारी आ छोरी आ ई कोई साहब री औलाद लागै आ ई म्हन देय दे। ला ला नही ? तो ले-ले ले।'

मिसेज सोहिनी जाणै इण मार सू बचण सारू ई लार सिरकै अर वारी आख्या खुल जाव। वै सोचण लाग जाव सुमित रा पापा ता कदई दारू नी पीवै, फेर म्हन डर क्यू लागै ? गाळ तो आपरी ठौड कदई ऊचा ई नी बोल। म्हारी किसी माग पूरी नी करी ? म्हारा गेणा, म्हारा कपडा, ओ घर, ओ फर्नीचर जो टेलीफोन, अै परदा— सग जग्या वै ई तो है फेर म्है किण सू डरू ? काइ म्है सुमित रै पापा रै मुळकण सू डरू ? काइ होव जे वै अेक खास तरीकै सू काल-बल बजाव तो ! इणम डरण री काइ बात ?

अचाणचक मिसेज सोहिनी नै दीसै क गोड माह्न कामवाळी रै दरवाज पर खडघा-खडघा मुळक रया है अर वा हाथ मे क्ची तिया रणचण्डी ज्यू साम्ही खडी है, 'आव आव राक्सस म्हारै नजीक तो आव ।'

खच ! जाण खून रो फवारो छूटै ।

'ट्री ई ई ई ग ।'

लम्बी काल-बेल सू मिसेज सोहिनी री आख जजाळ म खुल जावै । वै घडी कानी देख्यो पूरी दोय वजगी । स्यात् अमित स्कूल सू आयग्यो । थाक'न डील सू उठ'र मिसेज सोहिनी दरवाजो खोल दियो ।

'अरे ! अभिलासा थू ?'

'क्यू बिना बुलायोडी मैमान तो हू नी, इतरो अचभो काई बात रो ?' रगीन चस्म नै आख्या सू माथै पर सिरकावता अभिलासा हसी ।

'आ मायन आवरी ।' मिसेज सोहिनी नै जाण अभिलासा रै आवणै सू आपरै माय ई माय की जग्या मिली हाव—वै अेक सोरफ मसूस करता कैयो ।

अभिलासा पस न लापरवाही सू अेक कानी न्हाख'र दीवान पर पसरगी । फेर की सूघती-सी'क पूछ्यो, 'इज समथिग राग कोई नही आई अभी तक ?'

मिसेज सोहिनी इण रो उत्तर नी देय र पूछ्यो 'अभिलासा, थू म्हारी काम वाळी नै देखी कदेई ?'

'हा क्या ? कोई नुकसाण करगी ? समथिंग मच प्रीसियस ?'

'नी ' मिसेज सोहिनी पुर्ती सू कयो, 'वा अस्पताल मे है । वीरो हसबैण्ड वीर पट मे क्ची घाप दीवी ।'

अभिलासा उठ बैठी, 'पण क्यू ? फोर व्हाट ?'

आज च्यार दिन होयगा, वा भर्ती है । वीरो हसबैण्ड कोई रोजगार नी करतो हो । ओ दूसरो ब्याव हो वीरो पैल सू अेक छोरी ही जिकी अब जुवान होयगी । इत्ता दिन तो वीरा आदमी सिफ वीरी कमाई खोस'र दारू पीवतो अब वीरी नायत वी छोरी पर ही । उण दिन वो नसै म धुत्त हो, आ क्ची लेय'र छोरी अर वीर बिचाळ खडी होयगी । वो कैंची खोस र पाछी उणरै ई पट म घोप दीवी । मिसेज सोहिनी कय र चुप होयगी ।

'देट पूअर क्रेचर !' अफसोस जतावती अभिलासा बोली 'आल दा सम, म्हैं पूछू क अै फाइनेंसियली अनप्रोडक्टिव लुगाया आखिर ब्याव करै क्यू है ? फेर अेकर नी, दो दो वार ? एनी वे, थनै किया पतो लाग्यो ?

मिसेज सोहिनी टेलीफोन रा सगळो प्रसग बताय दियो ।

सुण र अभिलासा वोली डोण्ट वी मच सेण्टीमटल, माई डीयर सोहिनी । तो उण कारण पार्टी कमल कर दीवी । आखिर थ र्ई लुगाया री लुगाया । इण तर तो राज अखबार पट र रोज ट्सणो बोलणो क्सा होय सकै । खैर, एज य लाइक

म्हे पाल सू   हाल ताईं तो म्हारैं रिसेस चाल रई होवैला। आई मस्ट बी वेव विदिन टू सेव माई हाफ डे मैंन्युअल।'

अभिलासा रंगीन चस्मो पाछो आग्या पर हास'र वहीर होयगो।

मिसेज सोहिनी अेक अबूझ अर साव निरवाळै डर म पज्याडा वठा हा—अेक अडो डर, जिणम गौड साहव खुद ई हाजर हा अर वारी उडीक ई सामल ही। पण घणी ताळ इण तरै वठयो रवणो मुसक्ल होयग्यो, तो मिसेज सोहिनी कपडा वदळया, पम उठायो अर बारै निसरग्या।

अमित अजेस आयो नी हो। वीन दवण साल चावी नीच राय साहव र क्वाटर पर दीवी, तो मिसज राय पूछयो, 'इण घूम तावड मे सवारी ?

'अस्पताळ   !' मिसेज मोहिनी कैय'र झट पाछा मुडग्या।

रात पडगी। सिंझ्या गौड साहव फोन करयो कै वै रातनै मोडा थका घर पूग जासी। तद सू मिसेज सोहिनी रा कान जाणैं काल वल सागै चिप'र रयग्या हा। वारी आख्या अवस टी वी रै पर्दे पर ही। मरुस्थल माथैं कोई वृत्त चित्र दिखायो जाय रैयो हा। सोनलिया धोरा रो अमाप बिस्तार सगळ सरणाटै समेत पर्दे माथ पसवाडा फोरै हा। अग्रेजी मे कमेण्ट्री चालू ही, पण वींन सुणनियो कोई नी हो।

अस्पताळ सू मिसेज सोहिनी नै सागी पगा ई पाछो आवणो पडग्यो। ऊजळो झक बुशट पैरयोडो 'पूछताछ' बाबू साव निलिप्त भाव स बताय दियो 'सर्जिकल ग्रुप-2, बी वाड, बेड न 43 पेशेंट नेम जानकी, एज 36, इजरी इन अपर एब्डामिनल रीजन डिक्लेयड डड दिस आफ्टर-नून एण्ड डड बोडी डिस्चाज्ड टू हर रलेटि ज !'

'थक यू !' मिसज सोहिनी कया अर मुडतै ई वारी आख्या आग तिरवाळो आयग्यो। मैन गेट सू पाछा निवळ'र पोच म आवता आवता तो वान भीत रो सायरो ई लैवणो पडग्यो।

'तो उणरो नाव जानकी हो !' मिसेज सोहिनी उण मुच सुड कळझाइज्योड चर न याद करता सोच्यो, 'साचाणी, म्है काइ इत्ता दिना मे वीरो नाव ई नी पूछयो अेक नाव जिणर लारै अेक समूची जिंदगी ही, असल जद्दो-जहद ही। अेक साची लडाई ही   जिक नै फक्त काम वाळी कया काम सर जावतो म्हारो ?

मिसेज सोहिनी न लखाया क कोई वान वारै काळज म डायनामाईट होवणै रा समचार देयग्यो—समचार कै कद वो वारी चिंद्या चिंद्या उडाय देवला की ठा नी पड सक। वान रय रय र लुगाई मिनख री बराबरी र बाबत रात दिन आपरी करयोडी जुवानी झिकोळ चेत आव ही। जिणन क व अेक महान मोर्चो वणाय राख्यो हो अर खुदोखुद नै अपरबळी योद्धा। वारी इच्छा होई क कठई भाग र जावैं अर काच म मुडा देख   काइ वारी सूरत जानकी सू थोडी घणी ई मिल ?

घर पूग्या अमित दरवाजो खोल्यो हो अर आपरी ममी री सदीनी चेळक मूरती माथै कळमस री झाई ओळखतो पूछ्यो हो, 'ममा, काइ होयो ? तबीयत तो खराब नी है ?

'ठीक ई हू । चाय बणा दे ।' कैय र मिसेज सोहिनी डाइनिंग टेबल कन आपरी थितू जाग्या आय बठग्या हा ।

खिडकी कनतै दरखत री डाळचा अर पाना पर सू डूबता सुरजी रो उजास चासणी री गलाई जाडो पडतो थको झरण लागग्यो हो। अेक चक चूदरी डाळघा डाळचा चाल र आयोडी खिडकी रै काचा पर पजिया जिमाया ऊभी मुडो मचकोड ही। मिसेज सोहिनी री ज्यू ई नजर पडी, वै टेबल माथै हाथ पटक'र वीनै भगाय दीवी। वा थोडी देर मे पूछ हिलावती पाछी आयगी । मिसेज सोहिनी बठै सू उठ'र बेड रूम म आयग्या हा ।

मिसेज सोहिनी फेर की नी करचो ।

टावर ब्रेड अर जैम अर सॉस अर अचार अर स्वीटस अर फ्रूटस खाय'र पेट भर लियो फेर पापा न उडीकता उडीकता नीद लेय लीवी । आमतौर पर गोड साहब र मोडा आया मिसेज सोहिनी ई नीद लेय लेव । पण आज किणी भात वान नीद नी आय रई ही । अलवत्त घबराहट न काबू राखण सारू वै अेक डायजापाम री गोळी अर बीकोसून कैपस्यूल लेय लियो हो ।

घडी आपरी सदीनी चाल बिसर'र जाण ठणका करती चाल ही ।

टेलीवीजन पर देर रात री विदेसी फिल्म सरू होयगी ही । पर्दे पर अेक आदमी-लुगाई बाथम बाथ होयोडा अेक दूजै रै मुडै मे मुडो घाल्या दीस हा । मिसेज सोहिनी जुजळा र रिमोट रो बटन दबाय दियो– क्लुक !

स्योपो सो पसग्यो—सिवाय कूलर रै पखै मे फफेडीजती हवा रै मूसाड रै !

ट्रिग !

काईं काल बेल बाजी ?

मिसेज सोहिनी नै वम-सो होयो अर वै उठ'र दरवाज लग जाय पूग्या । दूज बाजण री उडीक म वेई ताळ ग्हचा रैया अर छैवट पाछा आयग्या । अब व इण वैम रा काइ उपाय करै ? पाणी पिया, बायरूम गया, छोरा री टाग्या सीधी करी अर सोच्या कै अेक कप चाय बणाय लेय कै फेर सुणीज्यो—ट्रिग ।

मिसेज सोहिनी रा हाथ पग जाणै हा जठई थोथ होयग्या । व उठता उठता हाथ बिछावणै पर टक'र वैठा रैयग्या-अेकदम अधर ।

'ट्रिग ट्रिग ट्री ई ई ईंग !

अबकै समूच घर म काल-बेल री किरळाटी गूजगी ।

मिसेज सोहिनी हडवडाय'र भाज्या अर दरवाजो खोल्यो—साम्हो गोड साहब

उभ्या मुळवै हा। ग्रीफकेस र सागै अेक और वडो पैकेट उठावता पूछ्यो, 'बटा सोयग्या ?'

'हा ।' लारै सिरकता मिसेज सोहिनी उत्तर दियो। पूछ्यो, 'काणो ?'

गौड साहब जाण सुण्यो ई नी अर पैकेट दीवान पर धर'र वीरी पैकिंग खालण लागग्या। मिसेज सोहिनी चुपचाप वीनै खुलता देखता रैया। थर्मोकोल रै टुकडा विचाळै सू निवळ'र अेक वी सी पी वारी आख्या आगै किणी नूव जलम्योडै टाबर दाई चरूड होयग्यो।

अचाणचक मिसज सोहिनी नै तेज वास ममूस हाई—अेक भयानक भभको !

गौड साहब वैवै हा, 'फोन पर बतावणो भूलग्यो, काल खरीद लियो हो।'

मिसेज सोहिनी चिलख रै उनमान झपट्टो मार्‌यो अर वी सी पी गौड साहब रै हाथा माय सू लेय'र फश पर पटक दियो।' म्हनै नी चाइजै क्यू लाया ओ इणमे बास आवै ओ गिधै ।'

'पागल होयगी काई ?' गौड साहब मिसज साहिनी रा दानू बावळिया पकड लिया।

आज वै मिसेज सोहिनी री इण हरकत पर आपरी निर्मे मुळक नी गिडाय सक्या।

□

फुरसत

मदन सैनी

बासठ बरस रा बूढा मघजी अजम आ नी समझ सक्या क जिण बात न व समझ उणन बीजा मिनख क्यू नी समझ ? नी समझ तो ना समझो। वारा किसो ऊंत नाम जाव ? पण फेर ई, आ बात समपण री तो है ई। बियां मघजी न आपरी लूठी समझ माथ पक्को पतियारो है। इण समझ रा केई साबठा परमाण है बार कन।

मा-बाप रा मोभी पूत हा मघजी। मघजी रा बापू बिणज सारू नी समझता, सेठा रा हाळी ई रैया ताजिनगाणी। केई बार बीखो ई पड्या, घर म ऊंदरा थडी करी। पण मघजी र समझ पकड्या पछ घर अडी ओडो मे नी आयो। बार बिणज बौपार म बधेपो हायो तो होवतो ई गयो। बारी समझ रग ल्याई समझ-परवाण बारी कीरत रा थब घर, गाव अर गाव सू बार ताईं रुपग्या। बडी बेटी दुरगा अर मझल मोवन र जलम अर ब्याव री बेळा गाव मे जिण भात लाड-कोड अर गाजा-बाजा होया, उण भात नी तो पला कदई होया अर नी कदई होवला। अर जे होवैला इज तो बार इ नानडिय रो ब्याव अजेस बाकी है। मघजी र घर रो आज कुण इसो है, जिको पर-ओढ न बार निकळ अर उण री वाह वाह नी होथ। दुरगा री मा तो पीळिय सू लदन कनक-काव सी लखावै, कुण नी सराव।

अर अ सैंग गाजा-बाजा किण रै पाण ? सुभट बात है—मघजी री समझ र पाण।

फळा फूला सू हरिय भरियै बगीचै री भात है मघजी रा घर-बार अर जिण रा बागवान अब लग हा खुद मघजी।

मघजी न की बेरो नी पड्यो पण हवळै हवळ बिणज-बौपार री बागडोर बारो मोवन सभाळ लीवी। बान तो तद ई ध्यान आया, जद मोवन बा सू बिनती करी क अबै आप साठी लाधग्या हो, ऊमर आराम करणै री है। आप देस जायन घर सम्हाळो, की ध्यान धूप, पूजा-पाठ म मन लगावो।

लूठा लूठा बौपारिया न सल्ला दवणिया मघजी नै जेकर तो लखाया क बारी समझ पागळी होयगी है। जिण समझ रो आखी जिनगाणी गीरबो करचा, उणन आज बारा ई सपूत सपनपाट कर रयो है। पण मघजी सोधीवान आदमी हा। साच समझ न घर रवणो ही आछो मान, मिंदर-देवरा, पूजा पाठ मे मन लगावण री मोकळी मता कर लीवी।

अेडी मसा करणी ता सौरी ही, पण इण मे मन लगायन दिन काटणो घणो दौरो। दिन उग तो छिपणा दौरो अर छिप जाव, तो ऊगणो ओखो। दिन बीता चाव रात, मघजी नै लागै जाणै जुग बीतैं।

'इया तो पार नी पड दुरगा री मा।' व अेक दिन आपरी जाडायत नै कयो।

'इया क्यिा ?'

'मिंदर देवरा फिरघा सू वगत नी बीत। मावन बाइ साच'र म्हनै दूकान सू दूर करघा है, ठा नी पड। उण बेवकूफ न कुण समझाव कै म्हार अणभवा आग उणरी मूंछी अबल पाणी भरै अर आखो ऊमर री आ ई तो असल पूंजी है म्हारी, अर इण री ई वा कदर नी जाणी।'

'नी जाण तो मत जाणन दयो। थे क्यू खुद रो खून बाळो, मिंदर देवरा म मन नी लागै, तो घूम फिर लिया करो। घर म सिनटरी रा पायखाना काइ होया, थानै तो घोरा देख्या ई जुग बीतग्या होवैला।'

'तो थू ई भळै सीख देवण लागगी ?'

'अब सीरत समझो तो म्हारै कनै काइ उपाव है। म्हैं तो थार ई भल री बात कैई है। जद सू थे काम छोड या है, थार चे'रै री उदासी म्हासू देखी नी जाव।'

'वा-वा म्है अबार ई घोरा जाऊ 'कयन मघजी मुळकता थका पाणी रा लोटा लेयन घोरा कानी वहीर होयग्या।

सियाळ रा सुरजी री तिरछी किरणा बाळू री लरघा माथ हिंवळास र हाथ ज्यू सिरक ही।

मघजी अेक धार री टीकी ऊपर बठया बाळू अर किरणा री छेकडली प्रीत निरख हा। व सोच्यो, समदर अर बाळू री लरघा म काइ फरक? बायरा जे हेत जताव ता दावू राजी अर जे फफेडण मतै होय जाव ता तूफान रा ताण्डव दावू जग्या। इण धरती री काया म आप-आपरी पाती लिया बाळू अर पाणी कित्ता मनमौजी, कित्ता आणदित अर कित्ता हेताळू जाण दोवा म आपर फूटराप रा दर ई गुमान-गौरवा नी है।

दूर ताईं पसरघोडी बाळू री लरघा म मघजी आपर मन री नाव खेव हा क अचाणचक वान आपर पग री आगळघा सळसळाट लखाया। नीच देख्या ता अेक टीटण ही। व बीन हाथ मे पकड'र खासा दूर फेंक दीवी। पण वा तो थोडो ताळ होवता ई सागी ठौड आय पूगी। मघजी तीन-चार दफ उणन फेंकी, पण वा असल टीटण ही—धारा धरती रो हटीला जीव। हमीर आपरा हठ छोड्या होव ता आ इज छोड दे।

मघजी आरता होयग्या। व लोटै रा पाणी गटागट पीग्या अर टीटण न लोटै मे छोड दीवी। पछै व टीटण नै नडै सू निरखणी सरू कर दीवी। अरे! इणरो

उणियारो तो मवरै सू मेळ खाव । भवरो इत्तो नादीदा जीव अर टीटण न बापडी न कोई वतळाई ई नी । मघजी सोच्यो, इणनै इ कँव समत सार फळ औ भवरो भिणकारा रा गीत गावतो तितल्या अर फूला नेडै जाय पूग्यो अर कविया री आख्या चढग्यो । बापडी टीटण न कुण पूछै ?

मघजी र मन मे टीटण सागै होयाडै अयाव री बात उठी अर वानै लखायो कै साव नूवै ग्यान रो च्यानणा होयग्यो । वै टीटण न लोटै माय सू लेयर हथाळी माथ धरी । टीटण तिरमिर तिरमिर चाली अर हथाळी री सीवा सू कूद'र हेटी पडगी । मघजी पसीज्या, बापडी रै लागी तो नी ? वै फेरू उणनै हथेळी मे लेयनै उणर मुडै साम्ही जोयो । अरे ! औ नाहा सीक मुडो तो परतख रेल र दानवी इजन सरीखा लागै ! उणी भात काळो-कळूटो अर विडरूप काइ ठा कोई इण बात कानी ध्यान दियो होसी कै नी ? जाय'र बताया दुरगा री मा नै मोकळो हरख होवैला । वै टीटण न पाछी लोट मे घाल'र घर सारू बहीर होयग्या ।

दुरगा री मा माळा फेरै ही । मघजी नै देख'र पूछ्यो, 'जा आया काई ?'

'अेकर माळा छोड, म्हार कनै आव देख, म्हैं काइ लायो हू—रेल रो इजन !'

'रेल रो इजन !' कँय'र अचभो करती थकी दुरगा री मा उठी, 'कठ है ?'

मघजी दुरगा री मा री हथेळी पकड'र उणम लोटो ऊधाय दियो, 'सावळ देख '

'आ तो टीटण है इणरो काइ नादीद–' दुरगा री मा हथाली पळटता कयो, 'हाथ मे मूत दियो, तो तीन दिन गिंध नी जावला ।'

मघजी नीचा लुळनै टीटण न आपरी हथाळी माथै धरी अर उणन दुरगा री मा साम्ही करता कयो, 'अरे बडभागण अेकर इणन निरख'र बताय तो सरी, आ कडी काई लागै ?

'वा, लागगी कैडी-काइ बगावो बारै इणन । बूढा सारा औ काई कौतक लाया, लोग हसैला । की तो धोळा री काण राखो ।'

'वा वा, रैवण दे । घणो ग्यान हायग्यो दीस । साम्ही पडी चीज ई दीसणी बद होयगी । पण गाव म ता सोझीवाळा मर्‌या कोयनी । कवता-कँवता मघजी टीटण न पाछी लोट मे घाली अर वा ई पगा वारै नीसरग्या ।

पैल-पोत मुकनो दीसया । मघजी उणन हेलो पाड्या, मुकना '

'काईं कावा ' लार मुडता मुकना पूछ्यो ।

'ठ र अेकर दख, म्हार लोटै म काइ है ।' नडा आवता व लोटा मुकन रै मुडाग कर्‌या ।

मुकनो डूवत-सीक उजास र जोर लोटै म झाक'र देख्या अर बोल्या, 'आ तो टीटण है, और काईं ?'

'टीटण तो है, पण इण रो मुडो किसोक है ?'

'मुडो, इणरै बापडी रै काय रो मुडो, अेन फीडो फीडो अर सूगलो ।'

'रेल रै इजन ज्यू नी लाग ?' मघजी पूछ्यो ।

मुकनो सुण'र मुळक्यो, काईं बात है काका ? जीव-सोरा तो है नी ? भाग-गाजै री झपेट म तो नी आयग्या कठै ई ?'

'जा-जा   की देखणो नी आवै जणा माग गाजै री बात करण लागग्यो । म्हैं तो थनै दूजा विचै की सूल कर राख्यो हो थारै ता आपरै माथै म गोबर छल्यो है ।' कय'र मघजी मुकनै सू आगै बहीर होयग्या ।

मुकनै सू मिल्या पछै मघजी घरै आयग्या । केई ताळ गाव री गळघा मे फिरघा, पण किणी माथ बात पतियारो नी होयो । भळ कोई आवळ-कावळ बालसी । मास्टर दीनदयाल टाळ बीजै सू बात करणी ई फालतू है, पण मास्टरजी र घर कुवेळा नी जाऊ ! सोचर मघजी सूरज उगणै नै उडीकण लागग्या ।

दिन उग्यो । मघजी सिनान-सपाडा करघा अर मास्टरजी री स्कूल र टम सू पला-पला वारै घर जाय पूग्या ।

मास्टरजी अेक माचै माथै बठया कोई पोथी फिरोळ हा । घरवाळी गाय डागरा साह लारै गयोडी ही ।

जै रामजी री । मघजी लोटो हथाळया बिचाळै लिया रामा-मामा करघा ।

'आओ, मघजी   आज कठीन सूरज उग्यो ?' कैंवता मास्टर दीनदयाल पोथी अेक कानी मल दीवी ।

'काईं बताऊ मास्टरजी   ' मघजी माच माथ बैठता बोल्या, 'गाव म कोई सुव माथ रो मिनख ई ना लाध नी ।'

वयू, काईं बात होई ?'

'किणी न फुरसत ई नी है, कोई नूवी बात सोचण री, कैवण री, समभण री । म्है ता काल रो अेक बात कवण नै फिरू, कोई समझण नै ई त्याह्नी ।'

'अडी काईं बात है ? मास्टरजी हस'र पूछ्या ।

मघजी जाण पावस्या होव, बोल्या 'लोग फूल निरख नितल्या माथ मोदीजे, मवरा रा गीत गाव— पण इण म नवादी बात काद ? साव [illegible] आप, देखो इण टीटण रो नूवो रूप सगा स मिर नी दीस तो [illegible] । मघजी लोटो मास्टरजी र मुडागै माचै माथ मुघाय न्यो ।

अेक हवळी-सी 'तड' री आवाज रै समच आपरा पजिया ऊचा करया टीटण

आय पड़ी। मुट गा 'एग्यिम अर छरू पग त्या मृ हायागाई पग्ता िरमिर िरमिर हालै हा।

मास्टरजी रै जाणै गरट रा तार ताग्या, व उग्ठ'र ऊभा हायग्या। गर्ई ताव यै इण थनीती री गमझण म नगार्ष, पेर रीग गांवता थो'या ओ काई तमासो है गांव म ता अेर ई गमनदार ना माच्या पण मागी ारन रै टूपा आयग्या दीगै टाटण नै नाधी पग्मा' टाटण गाम म्हैं जाण्या भना मिनग हा नुिर्गुणी काई काम री बात रग्ण नै पधाग्या हावारा। अब आप पगा पधारा नीतर टागर भाटा मारणा शरू कर दवैगा।

मघजी नै लगाया व य पा ह हटै आयग्या है। डिगमिगावता पगा मू थै थणा ता मास्टरजी र घर स् नीगग्या अर पणा घर पूग्या चान नगार ई नी पन्मा। घर पूग र व आपर जार म वडग्या। मी पथा र सुण्या मी म ई वाल्या र चाल्या। वा ठा नी हा क थारा आपरा नरा अवार मारिय मू मिल रा टळकटळक आमू ढळकावता अणमणो मारियो।

ढेवट दुरगा री मां जाय'र मघजी न वाळाया। 'काइ हायो, थार की दुखै ता नी है?

'दुरा, थारो माथो।' मघजी थटकी भरता-मी'क बाल्या।

'स्याणा, इया काइ बोलो।' दुरगा री मा कैवती आग्या भर लीवी।

'म्हैं समझदार नी हू दुरगा री मा म्हैं गधा डाफो हू मूरख हू। म्है अबै काई करू?'

मघजी री आरया छलछलीजगी। व आपरी धाती रो पायचो आग्या माथ मेल'र ढुसक्या भरणी सरू कर दीवी।

दुरगा री मा बोलबा करै ही हे महाराज बालाजी ओ आरै काइ होयो। अड़ा स्याणा समझणा रो माथो किया फिरग्यो। थारो जागण बोलू, बाबा आरी आरया स् आसू पूछ दे

इत्त न कडी बाजी। दुरगा री मा पल्लै सू आरया पूछती धुरी मोडै जाय'र देख्यो— अेक छारो चमचमावता लोटो लिया ऊभ्यो हा। बोल्यो 'मास्टरजी ओ लोटो पुगवायो है, दिनुग मघजी वार घरै छोडग्या। मास्टरजी कयो है, टीटण लाधी कोनी। लाध्या वा ई पुगवाय देसी।'

दुरगा री मा झट लोटो छोरै र हाथ सू लियो अर वारणो ढक'र आगळ देय लीवी।

□